

इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में भोपाल के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के भोपाल परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	तीर्थकर कल्याणक	
फरवरी 2020					
16	रविवार	अष्टमी	अनुराधा	17 फरवरी : भगवान पुष्पदन्त गर्भ कल्याणक	
17	सोमवार	नवमी	ज्येष्ठा	19 फरवरी : भगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक	
18	मंगलवार	दशमी	मूल	19 फरवरी : भगवान श्रेयांसनाथ ज्ञान-तप कल्याणक	
19	बुधवार	एकादशी	पूर्वाषाढ दि./रा.	20 फरवरी : भगवान मुनिसुब्रतनाथ मोक्ष कल्याणक	
20	गुरुवार	द्वादशी	पूर्वाषाढ	22 फरवरी : भगवान वासुपुज्य जन्म-तप कल्याणक	
21	शुक्रवार	त्रयोदशी	उत्तराषाढ	26 फरवरी : भगवान अरुनाथ गर्भ कल्याणक	
22	शनिवार	चतुर्दशी	श्रवण	28 फरवरी : भगवान मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक	
23	रविवार	अमावस	धनिष्ठा	03 मार्च : भगवान संमनाथ गर्भ कल्याणक	
24	सोमवार	प्रतिपदा	शतभिषा	12 मार्च : भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक	
25	मंगलवार	द्वितीया	पूर्वाभाद्रपद	13 मार्च : भगवान चन्द्रप्रभ गर्भ कल्याणक	
26	बुधवार	तृतीया	उत्तराभाद्रपद	माह के प्रमुख व्रत	
27	गुरुवार	चतुर्थी	रेवती	02 मार्च : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ	सर्वार्थ सिद्धि
28	शुक्रवार	पंचमी	अश्विनी	03 मार्च : रोहिणी व्रत प्रारंभ	
29	शनिवार	पंचमी	भरणी	09 मार्च : षोडशकारण व्रत प्रारंभ	
(मार्च 2020)					
1	रविवार	षष्ठी	कृतिका दि./रा.	21 फरवरी : 09/14 बजे से 30/58 बजे तक ।	शुभ मुहूर्त
2	सोमवार	सप्तमी	कृतिका	22 फरवरी : 06/58 बजे से 11/20 बजे तक ।	
3	मंगलवार	अष्टमी	रोहिणी	25 फरवरी : 19/11 बजे से 30/55 बजे तक ।	
4	बुधवार	नवमी	मृगशिरा	27 फरवरी : 05/54 बजे से 30/53 बजे तक ।	
5	गुरुवार	दशमी	आर्द्रा	28 फरवरी : 06/53 बजे से 28/03 बजे तक ।	
6	शुक्रवार	एकादशी	पुनर्वसु	02 मार्च : 08/55 बजे से 30/50 बजे तक ।	
7	शनिवार	द्वादशी/त्रयोदशी	पुष्य	04 मार्च : 06/49 बजे से 11/24 बजे तक ।	
8	रविवार	चतुर्दशी	आश्लेषा-मघा	05 मार्च : 11/26 बजे से 30/47 बजे तक ।	
9	सोमवार	पूर्णिमा	पूर्वाफाल्गुनी	06 मार्च : 06/47 बजे से 10/39 बजे तक ।	
10	मंगलवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी	11 मार्च : 06/43 बजे से 19/00 बजे तक ।	
11	बुधवार	द्वितीया	हस्त	शुभ मुहूर्त	
12	गुरुवार	तृतीया/चतुर्थी	चित्रा	दुकान प्रारंभ : फरवरी-21,26,28	
13	शुक्रवार	पंचमी	स्वाती	वाहन क्रय : फरवरी-14,24,28 मार्च-6,7,11	
14	शनिवार	षष्ठी	विशाखा	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त : फरवरी-20,31	
15	रविवार	सप्तमी	अनुराधा	प्रॉपर्टी खरीदने : फरवरी-27 मार्च -5,13	



संस्कार सागर

• वर्ष : 23 • अंक : 250 • फरवरी 2020

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- निस्पृह व्यक्तित्व-आचार्य श्री महाश्रमण 09
- आचार्य सुनीलसागर महाराज एवं उनकी प्राकृत रचनायें 15
- जैन धर्म का दर्पण-गोमटसार जीवकाण्ड छन्दोदय 18
- जल पर्यावरण और मूकमाटी 21
- सुख कहाँ-आपका सुख-आपके हाथ में 23
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका 36
- मानवता कल्याणकारी: तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षायें 41
- विशेष पत्र 52
- उदयपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ विविध कार्यक्रम 53
- चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी पर बृहद् राष्ट्रीय विद्वत गोष्ठी यरनाल में सम्पन्न 54
- अनिद्रा दूर करके अच्छी नींद लेने के उपाय 57

बाल कहानी

- मौत का आभास 59

कविता

- सम्यक् श्रद्धा धार हृदय में 08
- माँ का उपकार 12
- सच हंसने लगा 14
- इम्तहान 17
- छोटा पद बड़ा मद 20
- रामभक्त 25

कहानी

- बत्तीस फिट का साँप 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 1 चलो देखें यात्रा : 25
आगम दर्शन : 26 • कैरियर गाइड : 27 • पुराण प्रेरणा : 29 • माथा पच्ची : 29 • दुनिया भर की बातें : 30
दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 40 • हमारे गौरव : 48
डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 49 • हास्य तरंग : 58 • शरीर विकास के कुछ खेल : 58
बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का बाकी सदस्यता शुल्क जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।	
सदस्यता शुल्क	
-आजीवन	: 2100/- (15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/- (सदैव)
-परम सम्माननीय	: 11000/- (सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/- (सदैव)
अपने शहर के	
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)	
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)	
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)	
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)	
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स	
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)	
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)	
खाता क्र. 155104000037022	
• आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)	
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)	
में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।	
** कार्यालय **	
संस्कार सागर	
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,	
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10	
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506	
मो. : 89895-05108, 6232967108	
website : www.sanskarsagar.org	
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in	



• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जनवरी अंक में वीर चामुंडराय पर केन्द्रित विद्वत्ता पूर्ण ऐतिहासिक लेख पढ़कर गौरव का अनुभव हुआ। ऐसे वीर पुरुष, सेनापति, विद्वान, लेखक, जैन दर्शन के अधिकारिक ज्ञाता, सेनापति चामुण्डराय अद्भूत प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने गोमटेश्वर बाहुबली की कला पूर्ण इतनी सुन्दर मनोहारी मूर्ति की प्रतिष्ठा कराकर विश्व को अनूठी धरोहर सौंपी है। जो हजारों बरसों तक जैन वीतराग विज्ञान के तथ्यों से जन जन को अवगत कराती रहेगी। चामुण्डराय जैसे अनेकों जैन वीरों और सम्राटों का इतिहास भरा पड़ा है। संस्कार सागर को उनके संबंध में सरल सुबोध शैली में लेख लिखवाने का प्रयास करना चाहिये जिससे संस्कार सागर के पाठक गौरवमयी महान जैन इतिहास और सम्राटों से परिचित हो सकें।

प्रियदर्शी जैन, इन्दौर

• सम्पादक महोदय, महाराष्ट्र के चुनाव में एन.सी.पी काँग्रेस के साथ शिवसेना ने सरकार तो बनाई परन्तु कुछ दिनों बाद काँग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गाँधी ने कहा कि मैं राहुल सावरकर नहीं जो माँफी मांगूँ मैं राहुल गाँधी हूँ इस विषय को केन्द्र में रखकर जब हम चिंतन करते हैं तब लगता है कि भटकी तो शिवसेना है। शिवसेना ने पद लोलुपता में आकार अपने विरोधी विचारधारा रखने वाले दलों से गठबंधन किया है। वीर सावरकर को आदर्श मानने वाली शिवसेना ने सत्ता के माया जाल में पड़कर अपने ही आदर्श को अपमानित करवाया है। सच तो यह है कि राजनीति अहं और स्वार्थ की होती है इससे बचकर बालासाहब ठाकरे जी हिन्दू हित की बात सोचते रहे। सत्ता के पार रहने वाले ही महान् होते हैं।

मनीष जैन, राहतगढ़

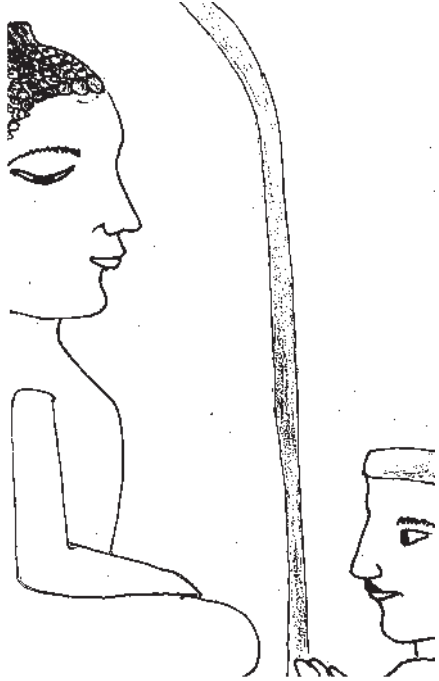
• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जनवरी माह के 249 अंक में “तुम चलोगी” शीर्षक से कहानी प्रकाशित हुई सच पूछा जाये तो संस्कार सागर की कहानी ही इस पत्रिका की पहचान बन चुकी है। मेरा पूरा परिवार कहानी पढ़ने के आतुर बना रहता है। 20 वर्ष से हम लगभग 250 कहानियों को संस्कार सागर के माध्यम से पढ़ चुके हैं ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज सिद्ध हस्त कहानीकार बन चुके हैं उनकी कहानियाँ प्रायः सोद्देश्य होती हैं संस्कार निर्माण की दिशा व्यसन मुक्ति अभियान और अंध विश्वास उन्मूलन को लिये ये कहानियाँ अपनी अहं भूमिका का निर्वाह करती हैं, धर्म, दर्शन, एवं जीवन व्यवहार का मार्गदर्शन देने में ये सभी कहानियाँ सक्षम एवं पर्याप्त लगती हैं। मुझे आशा है कि अभी यह कहानी प्रवाह अक्षुण्ण रूप में चलल रहेगा।

श्रीमति स्मिता जैन, ललितपुर

• सम्पादक महोदय, लोकसभा एवं राज्यसभा में नागरिक संशोधन विधेयक पारित हुआ तत्पश्चात् राष्ट्रपति महोदय ने भी उसे स्वीकृति प्रदान कर दी तब 6 राज्यों के मुख्य मंत्रियों ने विधेयक को अपने राज्यों में लागू नहीं करने देने की घोषणा कर दी इस पर यह प्रश्न पैदा होता है कि यह दादागिरि किसकी केन्द्र की या फिर राज्य सरकारों की? पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री की तो भाषा ही मवाली जैसी होती है उन्हें तो अपने वोट बैंक की अधिक चिंता रहती राष्ट्र की नहीं घुसपैटियों का आचार व्यवहार राष्ट्र विरोधी कितना है इसे नहीं देखा जाता है। स्वार्थ पूर्ण राजनीति परिणाम राष्ट्रहित में कभी नहीं हो सकता है अतः राष्ट्र सर्वोपरि माना जाये तो यही हितकर होगा।

कमल चौधरी, राहतगढ़

त तरंग हे प्र ज़ुतारो



हो तुम त्रिभुवनतारी हो जिन जी !
मो भवजलधि क्यों न तारत हो ॥

अंजन कियौ निरंजन तातैं, अधम
उधार विरद धारत हो ।
हरि वराह मर्कट झट तारे, मेरी बेर
ढील पारत हो ॥1॥

यौं बहु अधम उधारे तुम तौ,
मैं कहा अधम न मुहि टारत हो ।
तुमको करनो परत न कुछ शिव,
पथ लगाय भव्यनि तारत हो ॥2॥

तुम छवि निरखत सहज टै अध,
गुण चिंतत विधि-रज झारत हो ।
दौल न और चहै मो दीजे, जैसी
आप भावनारत हो ॥3॥

हे तीन लोक को तारने वाले ! हे जिनेन्द्र ! भवसागर के मध्य पड़े हुये मुझको क्यों नहीं तारते हो, पार लगाते हो ।

अंजन जैसे चोर-पापी को आपने दोष रहित कर दिया । आप साधर्मी अधर्मी जनों का, पापियों का उद्धार करने वाले हो, ऐसी आपकी ख्याति है, प्रशंसा है, योग्यता है, गुण है । सिंह, शूकर, वानर आदि को आपने अविलम्ब तार दिया, फिर मेरी बार पर क्यों देर लगाते हो ।

यों तो आपने बहुत से अधर्मियों को तार दिया, उनका उद्धार कर दिया, दुःखों से बाहर निकाल दिया, तो मैं ही ऐसा कैसा पापी-अधर्मी हो गया कि मुझको पार नहीं लगाते ? आपको स्वयं को उसमें कुछ भी नहीं करना पड़ता अर्थात् आप कुछ भी तो नहीं करते, मात्र भव्यजनों को मोक्षमार्ग पर लगा देते हो, उस राह पर आरूढ़ कर देते हो ।

आपके दर्शन से सहज ही पाप सब टल जाते हैं, आपके गुणों के चिंतनवन से कर्मरूपी धूलि स्वयं ही झड़ जाती है । हे प्रभु ! दौलतराम आपसे कुछ भी नहीं चाहते । आप और चाहे कुछ भी मत कीजिये, बस मात्र इतना हो कि मैं भी आपकी जैसी भावना में निरन्तर मगन हो जाऊँ, रत हो जाऊँ ।



तीर्थ शिरोमणि शिखर जी और समस्याओं का अ बर

शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर अपनी शाश्वत सुरक्षा हेतु जैन समाज की ओर निहार रहा है । भारत देश के सभी दिगम्बर जैन क्षेत्रों की संबद्धता प्रायः सुनिश्चित हो चुकी और भारत वर्षीय तीर्थ कमेटी, क्षेत्र कमेटी के साथ सभी तीर्थ क्षेत्रों का पंजीयन हो चुका है किन्तु मधुवन सम्मेद शिखर की पावन भूमि पर जितनी दिगम्बर जैन संस्थायें हैं उनका कोई भी संगठनात्मक रूप नजर नहीं आता है । इन संस्थाओं में कई एक संस्थायें ऐसी हैं जिनके ट्रस्ट संगठन का स्वरूप ही व्यवस्थित नहीं है । उनके ट्रस्टी भी जबाब देय स्थिती में नहीं दिखाई देते हैं । बहुतेरी संस्थायें तो मात्र धन दान आदि एकत्रित करने के लिये ही गठित हुई सी लगती हैं । दान का सदुपयोग भी नहीं हो पाता है । और ना ही जिनालयों के निर्माण में भव्यता ही नजर आती है । जिनबिम्ब और जिनालय के शास्त्रीय मानदंडों की बात दूर सामान्य भवनों के अभियंत्रीय मानदंडों की भी पूर्ति नहीं करते हैं । करोड़ों रूपयों का दान निवेशित करने के बाद सम्पूर्ण संस्था की प्रबंध व्यवस्था अजैन बन्धुओं के हाथ में सौंप दी जाती है । जो देव शास्त्र गुरु की सामान्य औपचारिक विनय करने में भी रूचि नहीं रखते हैं । जैन सांस्कृतिक दार्शनिक अवधारणाओं से उनका कोई लेना देना नहीं होता है । ट्रस्टियों से जब इस संदर्भ में पूछा जाता है तो उनका तर्क होता है कि जैनो की अपेक्षा अजैन अधिक ईमानदार और कर्मठ तथा कमवेतन पर सुलभ होते हैं । परन्तु यह उनका तर्क सही साबित नहीं होता है । कारण कि जैन के धर्म मूल चिंतन चर्या और आचरण को पीछे धकेलकर मात्र पैसे की बचत को महत्व कहाँ तक उचित होगा ।

जैन समाज की प्रबंध क्षमता योग्यता का लौहा सारा देश मानता तथा जैन श्रावक अभी भी निर्माल्य भक्षण से अपना बचाव जरूर करते हैं किन्तु ट्रस्टीगण इस तथ्य को क्यों छिपाते हैं कि वे मात्र संस्था की एफ. डी. बढ़ाने एवं संस्था का बैंक बैलेंस बढ़ाने में रूचि रखते हैं जैन समाज तथा उनकी योग्यता अनुरूप वेतन देने में उनकी कोई रूचि नहीं होती है ।

सम्मेद शिखर की 27 संस्थाओं में कोई एकात्मकता संगठित रूप नहीं दिखता है उनमें बिखराव अवश्य दिखाई देता है । पर्वतराज की सुरक्षा और व्यवस्था में किसी की तनिक भी रुचि नहीं है । सभी संस्थाओं में दान एकत्रित करके उसके निवेश की कोई स्पष्ट नीति नहीं दिखती है । कई संस्थायें शुद्ध व्यवसायीकरण की नीति को सुनिश्चित किये हुये हैं । आवास व्यवस्था के लिये सदैव यात्रियों के साथ सौदाबाजी करती हैं तथा यात्रियों की मजबूरियों का लाभ उठाती हैं ।

एक और समस्या बढ़ी और विकराल बनती जा रही है कि शाश्वत तीर्थ पर जाने वाले

तीर्थ यात्री अब पर्यटन की मानसिकता को अधिक स्वीकार कर रहे हैं पवित्र पर्वतराज सम्मेदाचल पर जूते पहनकर जाना, वहाँ पर लगी दुकानों पर खाना पीना, तीर्थ की सुरक्षा के लिये बहुत बड़ी समस्या बनकर उभर सकती है। श्रद्धालु तीर्थ यात्री से धंधा करके जिस पैसे की बचत दुकानदार करता है उसका उपयोग शराब और मांस तथा बलि चढ़ाने में करता है इसे अहिंसा प्रेमी श्रद्धालु मात्रा अपनी इच्छा सुविधा के लिये अनदेखा क्यों कर रहा है ? यह समझ से परे है। आगे चल कर दुकानदार पवित्र शाश्वत सिद्ध भूमि पर अतिक्रमण करेंगे एवं तीर्थ यात्री के साथ दुर्व्यवहार भी करेंगे।

सम्मेद शिखर हम सबकी आस्था का केन्द्र है और हमारी धरोहर है इस तीर्थ की पवित्रता बनाये रखना हम सबका मौलिक कर्तव्य है। अहं और स्वार्थ सुविधा का मोह छोड़कर हम समय रहते तीर्थ रक्षा के प्रति संवेदनशील नहीं हुये तो हमें आने वाली पीढ़ी क्षमा नहीं करेगी।

कविता

स यक श्रद्धा धार हृदय में

* रचयिता : कांति कुमार जैन करुण खिमलासा *

सम्यक श्रद्धा धार हृदय में, जीवन सफल बनाओं रे।
भूल हुई जो जगती तल में, अब निज को अरे जगाओं रे॥
भटके हम मिथ्यात दशा से, धर्माधर्म को जाना ना।
प्रभुवर के गुण गाये नहीं है, गुरु के वचन को माना ना॥
इसीलिये दुख उठा रहे हैं, अब ज्ञान की ज्योति जलाओं रे।
सम्यक श्रद्धा धार हृदय में, जीवन सफल बनाओं रे॥
धर्म से ही सुख पाते उर में, धर्म ही मार्ग दिखाता है।
जिसने धर्म हृदय में धारा, सुख शाश्वत को पाता है॥
संयम धर के बने है गुरुवर, मुक्ति पथ दिखलाओं रे।
सम्यक श्रद्धा धार हृदय में, जीवन सफल बनाओं रे॥
पर वस्तु से राग करो न, यह ही दुख उपजाता है।
क्रोध कषाय मिटाओं बन्धु, अंतर शान जगाता है॥
करो धर्म का ध्यान हृदय में, औ प्रभुवर के गुण गाओं रे।
सम्यक श्रद्धा धार हृदय में, जीवन सफल बनाओं रे॥
दर्शन पूजन करो साधना, शुद्ध हृदय से करो भावना।
श्रावक बनो साधना करके, मुक्ति पथ को अरे ! पावना॥
आत्म शान जगाओ करुण अब, संयम भाव बनाओं रे।
सम्यक श्रद्धा धार हृदय में, जीवन सफल बनाओं रे॥



निस्पृह व्या तत्व-आचार्य श्री महाश्रमण

* विजयराज सुराणा, गाजियाबाद *

जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा से करीब 260 वर्षों पहले प्रादुर्भाव में आया तेरापंथ प्रगतिशील व यशस्वी सम्प्रदाय कहा जा सकता है। इसके प्रथम प्रवर्तक आचार्य श्री भीकणजी थे, एवं उन्हीं के द्वारा लिखित एक पृष्ठीय संक्षिप्त लेख के आधार पर वर्तमान आचार्य द्वारा मनोनीत मुनि ही संघ का भावी आचार्य व सर्वेसर्वा होता है। इस परम्परा के अनुसार तेरापंथ के नवम आचार्य अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी बने एवं उनके पट्टधर दशम आचार्य बचपन का नाम था मोहन। अब हम बताने जा रहे हैं उस मोहन के जीवन की यशोगाथा।

बचपन से ही अध्यात्म की ओर : मोहन का जन्म सरदारशहर कस्बे में श्री झुमरमल जी दुगड़ की भार्या श्रीमति नेमा देवी की कुक्षी से दिनांक 13 मई 1960 में हुआ। यह सभी सात भाई व तीन बहिनें थीं। इनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी, तथा साधु-साध्वियों की आराधना सेवा में प्रायः जाती-आती थी। मोहन पर अपनी माता की धार्मिक वृत्ति का काफी प्रभाव पड़ा, अतः इनका भी 8-10 वर्ष की उम्र से ही साधु-साध्वियों की सेवा-आराधना में काफी झुकाव हो गया। इस दौरान सन् 1974 का मुनि श्री सुमेरलाल जी (लाडनू) का चातुर्मास सरदार शहर में था। यह एक बड़ा ही सुखद संयोग बना। मुनि श्री ने तो उनकी धार्मिक वृत्ति का खूब सिंचन किया तथा उसके साथ के सन्त मुनि श्री सोहनलाल जी (चाड़वास) ने किशोर मोहन की ओर विशेष ध्यान दिया एवं उन्हें काफी धार्मिक श्लोक आदि कंठस्थ करवाने व उसका अर्थ व भाव समझाने में अपनी शक्ति का नियोजन किया।

बालक मोहन का अध्यात्म की ओर झुकाव तो बढ़ता ही गया। इनकी समझने व कंठस्थ करने की प्रवृत्ति काफी गजब की समृद्ध है। कहना नहीं होगा कि मात्र कुछ माह में मोहन ने पच्चीस बोल, तेरह द्वार, बावन बोल, गतागत, बासठिया, लघुदण्डक, पाना की चर्चा आदि सहित गया आदि थोकड़ों को कंठस्थ कर लिया वापस दोहरा-दोहरा कर उनका शुद्ध उच्चारण भी सीख लिया। इसके साथ ही अपने शैक्षणिक विद्यालय में भी बराबर जाते थे, एवं अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़ने व समझने में भी अब्बल दर्जे के छात्र थे। अपनी इस विशिष्टता की वजह से प्रायः कक्षा में प्रथम, द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होते थे। प्रायः कक्षा का मॉनीटर भी वही होते थे, जो पिछली कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता था- इस वजह से कक्षा बच्चों की समस्या समझने, उनके समाधान करने व प्रशासकीय अनुभव का भी विकास साथ-साथ होता रहा।

निर्णायक 12वां वर्ष : किशोर मोहन का 12वां वर्ष काफी निर्णायक साबित हुआ। पहले उसके मन में एक दुविधा थी कि मुझे गृहस्थ में रहना चाहिये या साधु बनना चाहिये। वो स्वयं ही अपने संस्मरणों में बताते हैं कि सन् 1973 की सम्बत्सरी के दूसरे दिन आचार्य कालगुणी का निर्वाण दिवस था। सम्भवतः एक स्वर्गस्थ आचार्य जो किसी देवलोक में स्थित थे, उन्होंने भी उसकी प्रतिभा को जान लिया था कि, इसके माध्यम से तेरे तेरापंथ धर्मसंघ का और अधिक शुभ

भविष्य उजागर होने वाला है, तो उन्होंने उसे अपना भावी पट्टधर मानकर, उसकी मानसिकता में ऐसा प्रवेश किश कि उसने साधु जीवन स्वीकार करने का मानसिक निश्चय कर लिया एवं अपना हर कदम उस ओर बढ़ाने लगा।

दीक्षा का आदेश : तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम, पूरे विश्व के धर्मसंघों में एक अनोखा ही है, जिसमें संघ द्वारा निर्धारित मर्यादाओं पर अडिग रहने व उनकी पालना करने को प्रति वर्ष प्रतिबद्ध होते हैं। सन् 1974 की फरवरी को यह कार्य अणुव्रत भवन दिल्ली में आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में आयोजित था। मोहन ने अपने परिवार सहित अपनी दीक्षा का निवेदन किया। परिवार की मनोकांक्षा से आचार्य श्री ने स्वीकृति देते हुये उनकी दीक्षा सरदारशहर में ही देने की मुनि श्री सुमेरमल जी को आज्ञा प्रदान कर दी। आचार्य तुलसी की आज्ञा से मुनि श्री सुमेरमल जी (लाडनू) ने 5 मई 1974 को सरदार शहर में गधैया जी के नोहरे के प्रांगण में दो संतों को दीक्षा प्रदान कर दी, एवं किशोर मोहन दूगड़ बन गये मुनि मुदित। उनके साथ अन्य थे मुनि उदित जो पिछले अनेक वर्षों से मुनि सुमेरमल जी की सेवा में ही विरचित हैं। दीक्षा के बाद मुनि मुदित का एक मात्र साथ रहा अध्यात्म ग्रंथों का पाठन, कंठस्थ करना एवं अपनी स्वयं की साधना करना। इसका प्रतिफल रहा कि कुछ ही काल में मुनि मुदित ने दसवें आलय सूत्र, अनुष्टुप श्लोक आदि अनेकों सूत्रों व ग्रंथों का अर्थ सहित कंठस्थ करते हुये उनके शुद्ध उच्चारण का भी अभ्यास किया।

महाप्रज्ञजी के सहयोगी : 16 फरवरी 1986 उदयपुर मर्यादा महोत्सव के एक अवसर पर आचार्य प्रवर ने फरमाया कि युवाचार्य महाप्रज्ञ को अनेक तरह के कार्य करने होते हैं, अतः उन्हें एक सक्षम सहयोगी की अत्यन्त अपेक्षा है। अतः इस हेतु मुदित मुनि को उनका अन्तरंग सहयोगी रूप में नियुक्त कर रहा हूँ, एवं वो युवाचार्य श्री के हर कार्य में पूर्ण सहयोगी रहेंगे। इस दायित्व से मुदित मुनि का कार्य क्षेत्र काफी बढ़ गया। वो पहले आत्मकेन्द्रित ज्यादा थे- एवं अपने में ही मस्त व व्यस्त रहने वाले को अब व्यापक क्षेत्र में काम करने का अवसर मिलने लगा। इसके उनके अनुभव व सम्पर्क का विस्तार होने लगा।

साझापति का सम्मान : दीक्षा लेने के अनेकों वर्षों तक साधु-साध्वियों को किसी अन्य वरिष्ठ साधु के साथ रखा जाता है। जब वह स्वयं की काफी योग्य व अन्य योग्यताएं प्राप्त कर लेता है जो उसे सिंघाड़पति/साझापति बना दिया जाता है। मई 1986 में ब्यावर में मुनि मुदित को भी यह सम्मान प्राप्त हो गया। यह आचार्य द्वारा उनका विशेष अंकन है, जो उन्हें प्राप्त हुआ।

महाश्रमण पद से विभूषित : तेरापंथ धर्मसंघ में इससे पूर्व कोई भी, श्रमण (साधु) से महाश्रमण पद पर सम्मानित नहीं हुआ था। यह पहला अवसर था जब गुरु तुलसी ने अपने शिष्य की विशेष योग्यता का अंकन करते हुये, अपने स्वयं के जन्म दिवस पर 9 सितम्बर 1989 को लाडनू में इन्हें महाश्रमण पद से विभूषित किया। मुनि मुदित की विशेषताओं का उल्लेख करते हुये प्रमुदित मन से एक विशेष नियुक्ति-पत्र प्रदान किया।

युवाचार्य बने आचार्य : सन् 1994 के सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव पर आचार्य तुलसी ने, स्वयं के पद पर रहते हुये अपना पद विसर्जन करते हुये, युवाचार्य महाप्रज्ञ को नया आचार्य घोषित किया। यह इतिहास की अनोखी घटना थी। शायद पूरे जैन शासन में ऐसा कब व किसके द्वारा हुआ-शोध का विषय है।

अगले वर्ष, अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली में आयोजित महोत्सव पर इसका विधिवत पदाभिषेक समारोह आयोजित किया गया। तेरापंथ के इतिहास में इतना अनोखा व इतना शानदार विशाल आयोजन पहली बार हुआ था। आचार्य तुलसी ने अनुष्ठानपूर्वक शास्त्रीय विधि विधान से उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया।

उसके बाद उन्होंने महाश्रमण जी को खड़ा करके एक लिखित पत्र सौंपा, जिसका विवरण निम्न है -

अर्हम्

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहे तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करें, इसके लिये अवशेष जो करणीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे। **गणाधिपति तुलसी 5 फरवरी 1995**

इसके वाचन व सुपुर्दगी के बाद, वहां उपस्थित किसी भी व्यक्ति को सन्देह नहीं रहा कि अब महाप्रज्ञ के युवाचार्य एवं भावी आचार्य महाश्रमण जी होंगे। महाश्रमण मुदित ने अपने दोनों गुरुओं के मध्य अपनी योग्यता की इतनी पैठ जमा दी थी कि भावी आचार्य की स्पष्ट संभावनायें नजर आ गईं।

सरदारशहर पदार्पण: आचार्य महाप्रज्ञ जी का ज्योतिष में भी विश्वास था, उसके अनुसार उनके आयुष्य का यह अन्तिम वर्ष था। अतः सन् 2010 के चातुर्मास प्रवेश के समय ही उनके श्रीमुख से यह सहज ही उच्चारित हो गया - **यह सरदारशहर का चातुर्मास महाश्रमण का चातुर्मास होगा।** होनहार घटकर ही रहता है एवं 9 मई 2010 की भरी दोपहरी में सरदारशहर में तेरापंथ का महासूर्य अस्त हो गया। केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं बल्कि पूरा जैन धर्म संघ व अन्यान्यों ने भी इसे अपूरणीय क्षति माना।

11वें आचार्य महाश्रमण-तेरापंथ परम्परा के अनुसार वो आचार्य बन गये एवं उनके पदाभिषेक का अत्यन्त भव्य व विशाल समारोह गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में 23 मई 2010 में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी सहित अनेक राजनेताओं, विद्वानों की उपस्थिति में साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के निर्देशन में सम्पन्न कार्यक्रम में अपना पद ग्रहण किया। नय प्रतिष्ठित आचार्य श्री ने काफी भावपूर्ण उदगार व्यक्त करते हुये निम्न संकल्प भी स्वीकार किये -

मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार-विचार और सदाचारी की एकता को अक्षुण्ण रखने का पूरा प्रयास करूंगा।

मैं तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूँगा।

मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूँगा।

भावी योजना : उन्होंने अपने उद्बोधन में यह भी कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की अवस्मता से जो घोषित चातुर्मास व मर्यादा महोत्सव अशेष रह गये थे, उन्हें अब मैं पूरा करूँगा। उस अनुरूप सन् 2011 का चातुर्मास केलवा में किया। उसी कस्बे की अंधेरी ओरी में आचार्य भिक्षु ने अपना पहला चातुर्मास किया था, जहां पर यक्ष रहता था। उसके बाद सन् 2012 का जसोल व 2013 का जैन विश्व भारती लाडनूं में चातुर्मास करके आप 2014 हेतु अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली पधारे। यहाँ पर अपने दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु की जन्म शताब्दी का भव्य आयोजन सम्पन्न कराया। वहां पर उनके जीवन पर आधारित दो खण्डों में प्रकाशित विशाल जीवन दर्शन ग्रन्थ एवं उनकी रचित 108 पुस्तकों को संशोधन सहित पुनः प्रकाशित करके लोकार्पण हुआ।

पूर्व व दक्षिण भारत: लाल किले के प्रांगण में उनकी पूर्वी भारत की यात्रा हेतु 9 नवम्बर को विशाल आयोजन हुआ। जिसमें नेपाल के उपराष्ट्रपति भी पधारे। काठमाण्डु होते हुये 2015 का चातुर्मास विराटनगर (नेपाल) फिर भूटान होते हुये 2016 का चातुर्मास गोहाटी किया। 2017 का चातुर्मास कोलकाता करने के पश्चात सन् 2018 का चातुर्मास चेन्नई में सम्पन्न किया। इस लम्बी यात्रा के दौरान अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन में नैतिकता व अहिंसा के भावों को पुनर्प्रतिष्ठापित करने हेतु विशेष श्रम कर रहे हैं। अब सन् 2019 का बैंगलौर, 2020 का हैदराबाद व 2021 का भीलवाड़ा व 2022 का छापरा व 2023 का मुम्बई चातुर्मास प्रस्तावित है।

कविता

माँ का उपकार

माँ की एक दुआ तो जिंदगी बना देगी
खुद रहेगी पर आपको हंसा देगी
कभी भूल कर भी माँ को मत रूलाना मित्रो
क्योंकि एक छोटी सी बूँद पूरी धरती हिला देगी
खुश नसीब होते हैं वे लोग, जिनके पास माँ होती है।
जिस्म तो होता है पर जान नहीं होती है।
अरे उनसे जाकर पूछो जिनके पास माँ नहीं होती
हर पल में खुशी देती है, माँ
अपनी जिंदगी को भी तार देती है माँ।
भगवान ही क्यों ? माँ की भी पूजा करो मित्रों
क्योंकि भगवान को भी जन्म देती है माँ।



अयम स्वास्थ्य योग

गुड़ का जादू

गुड़- TREADE MOJASSE

गुण धर्म- गुड़ वीर्य वर्धक, भारी, वातनाशक, मूत्र शोधक एवं बलप्रद है। गुड़ मिष्ठवर्ग में अमूल्य पदार्थ हैं। प्रत्येक शुभ एवं मांगलिक कार्यों में गुड़ रखना शगुन माना जाता है। गुड़ की डली खाकर घर से जाना भी शुभ माना जाता है। भोजन के उपरान्त 20 से 30 ग्राम गुड़ का नित्य सेवन अनेक रोगों से बचाता है। एवं हमारी रोग निरोधक क्षमता में वृद्धि करता है। यह एक शक्तिवर्धक पौष्टिक आहार है। जो कि रोग ग्रस्त, अशक्त रोगी को भी शक्ति प्रदान करता है। अतः गुड़ रोगी एवं निरोगी सभी के लिये लाभप्रद है। एवं जन्म काल से लेकर वृद्धावस्था तक सभी के लिये उपयोगी है।

नवीन गुड़- यह मधुर भारी, गरम, मूत्रशोधक एवं जठराग्नि वर्धक है। अतिसार, रक्तपित्त एवं पित्तज प्रकृति वालों के लिये हानिप्रद है। गुड़ को पानी डालकर (चासनी बनाकर) छानकर मंद आंच पर उवालकर पुनः जमा देने से यह स्वादिष्ट एवं वातनाशक हो जाता है। इस समय थोड़ा सोंठ चूर्ण एवं काली मिर्च चूर्ण मिला देने से स्वाद एवं गुण दोनों ही बढ़ जाते हैं।

पुराना गुड़ - त्रिदोष (वात, पित्त कफ) नाशक बलवीर्य वर्धक एवं पुष्टिकर है। एक वर्ष पुराना गुड़ उत्तम एवं गुणयुक्त होता है। तीन वर्ष से अधिक हो जाने पर गुणहीन होने लगता है।

औषधीय उपयोग- पुराना गुड़

1. अदरक या सोंठ के साथ सेवन करने पर कफ दोष दूर करता है।
2. हरड़ के साथ सेवन करने से पित्त दोष को दूर करता है।
3. सोंठ के साथ सेवन करते से समस्त वात संबंधी विकारों को दूर करता है। हृदय की कमजोरी दूर कर हृदय को शक्ति प्रदान करता है।
4. प्रसूति से संबंधित रोगों को दूर करता है। इसीलिये प्रसूति स्त्रियों को पुराने गुड़ से बनाये गये लड्डू, हरीरा आदि दिये जाते हैं।
5. गुड़ 10 ग्राम जीरा चूर्ण 3 ग्राम मिलाकर सुबह शाम सेवन करने से उदर संबंधी विकारों से एवं वात रोगों में हितकर है।
6. गुड़ 10 ग्राम, वेलगिरी (विल्व) चूर्ण 10 ग्राम मिलाकर लेने से अतिसार, आमतिसार, रक्तातिसार, आमशूल, मलावरोध एवं पेट संबंधी सभी विकार नष्ट होते हैं।
7. 10 ग्राम गुड़ के साथ आंवला चूर्ण 10 ग्राम मिलाकर सेवन करने से बलवर्धक तृप्तिकारक, रक्तपित्त (नकसीर एवं रक्तार्श नाशक) दाह जलन सभी तरह के दर्द एवं मूत्र विकारों में लाभप्रद है।

8. आंवला चूर्ण में गुड़ मिलाकर चने बराबर गोलीयाँ बनायें। एक-एक गोली मुख में रखकर चूसने से मुख एवं गले के रोग दूर होते हैं। खांसी में आराम होता है। खासकर सूखी खांसी में गुड़ में घी मिलाकर बनाई गई गोलीयाँ अच्छी लाभप्रद हैं।
9. गुड़ 200 ग्राम, जीरा (सादा, बिना सिका) चूर्ण 200, ग्राम घी 50 ग्राम मिलाकर 30-30 ग्राम के लड्डू बनायें एक एक लड्डू सुबह शाम खाकर गर्म मीठा दूध पियें। प्रसूता स्त्रियों के लिये उत्तम स्तन्य दुग्ध वर्धक है। प्रयोग लगातार 3-4 मास तक या जब तक बच्चा दूध पीता है लगातार करें।
10. 50 ग्राम गुड़ नित्य 1 गिलास पानी में डालकर 3-4 घंटे के लिये रख दे। उसमें सौंफ 3 ग्राम एवं धनिया चूर्ण 3 ग्राम मिलाकर रख दे। 3-4 घंटे पश्चात यह पानी पीने से सभी पित्तज रोगों का शमन होता है। हिमोग्लोबिन बढ़ता है। रक्त शुद्धि होकर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। उत्तम टॉनिक है। स्वस्थ व्यक्ति को भी प्रतिदिन सेवन करना चाहिये। ग्रीष्म ऋतु में इसका नित्य सेवन करने से लू लगने का भय नहीं रहता है। अपनी रूचि अनुसार इसमें नींबू काला नमक एवं काली मिर्च भी डाल सकते हैं।
सूर्यावर्त शिरोरोग एवं आधाशीशी शिरोरोग में भी यह लाभप्रद है।

कविता

सच हंसने लगा

* रचयिता : एलक सिद्धांत सागर जी महाराज *

ज्ञान दीपक जला मिथ्या तम मिट गया।
तत्त्व का दर्शन प्रकाशित होने लगा।
दुख के सारे बादल छटने लगे।
भूल मेरी मिटी बोध जगने लगा।
द्रव्यगुण अवस्था का बोध होने लगा।
सच समझ में पूर्ण आने लगा।
झूठ का धंधा सारा दफन होने लगा।
झूठ रोने लगा सच तो हंसने लगा।
मेरी मन की दीवाली
मेरी दिल की मनने लगी।



आचार्य सुनीलसागर महाराज एवं उनकी प्राकृत रचनायें

* आशीष कुमार जैन, वाराणसी *

प्राकृत साहित्य में जीवन की समस्त भावनायें व्यञ्जित हुई हैं। कथा रूप में प्राकृत भाषा का अस्तित्व चाहे जितना प्राचीन हो, पर इस भाषा में साहित्य रचना ई. पू. 600 से उपलब्ध होता है। भगवान् महावीर और बुद्ध ने इस का आश्रय लेकर जनकल्याण का उपदेश दिया था। सम्राट अशोक ने शिलालेखों और स्तम्भलेखों को इसी भाषा में उत्कीर्ण कराया है। हाथीगुंफा शिलालेख प्राकृत भाषा में ही हैं। प्राकृत भाषा का जनता में प्रचार था, जनता इस का उपयोग करती थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण शिलालेख ही है। प्राकृत भाषा का साहित्य के रूप में भी ई. पू. 600 से ई. सन् 1800 तक लेखन होता रहा है। इस लम्बे समय में विभिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन हुआ है।

वर्तमान युग (विशेषकर बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी) में भी प्राकृत साहित्य लेखन की परम्परा जारी है। मध्यकाल में संस्कृत एवं लोक-भाषाओं का इतना अधिक प्रभाव बढ़ जाने पर भी प्राकृत साहित्य के निर्माण की परम्परा निरन्तर चलती रही है, किसी भी शताब्दी का कोई चरण शायद ही ऐसा मिले जिसमें थोड़ी-बहुत प्राकृत रचनायें न हुई हो, वर्तमान भी वह परम्परा चालू है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के दिगम्बर परम्परा में आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज के प्राकृत भाषा में प्रायश्चित विधन नाम कृति का लेखन किया। आचार्य विद्यानंद जी महाराज प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित हैं। वर्तमान में आचार्य सुनीलसागर जी महाराज ने प्राकृत भाषा में ग्रन्थों का लेखन किया है। उनकी शौरमनी प्राकृत भाषा में अनेक मौलिक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। उनमें भावणासारो, भावालोयणा, थदि-संगहो, णीदी-संगहो, अज्झप्पसारो, प्राकृत-बोध, णियप्पज्झाण-सारो, वयणसारो, सम्मदी-सदी बारह-भावण, भद्वाहुचरियं, भत्ति-संगहो आदि रचनायें प्राकृत वाङ्मय के लिये मील का पत्थर हैं।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज का जीवन परिचय :- आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिलान्तर्गत तिगोड़ा (हीरापुर) नामक ग्राम में श्री भागचन्द्र जी जैन एवं श्रीमति मुन्नीदेवी जैन के यहाँ आश्विन कृष्ण दशमी, वि.सं. 2034 तदनुसार 7 अक्टूबर 1977 को हुआ। इनका शुभ नाम संदीप जैन रखा। संदीप जब पाँच वर्ष के थे तब उनके पिताजी सन् 1982 के लगभग, अपनी ससुराल किशुनगंज में आकर रहने लगे थे। इस होनहार बालक का प्रारम्भिक शिक्षण किशुनगंज (दमोह) के शासकीय स्कूल में संपन्न हुआ। 1989 में आप धार्मिक शिक्षा एवं लौकिक शिक्षा ग्रहण करने मोराजी सागर में जाकर पढ़ने लगे, श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी द्वारा स्थापित महाविद्यालय सागर में आपने कक्षा 7वीं से बी.कॉम शास्त्री तक शिक्षा ग्रहण की और आपका अध्ययन काल 1989 से 1995 तक रहा। सत् संगति एवं अध्यात्म ज्ञान वशात् शास्त्री एवं बी.कॉम. परीक्षाओं के मध्य संदीप जी विशिष्ट रूप से वैराग्योन्मुख हुये।

मुनि दीक्षा-20 वर्ष की अल्पायु में ही 20 अप्रैल 1997 को महावीर जयंती के पावन पर्व पर बरुआसागर, झांसी में तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी द्वारा जैनेश्वरी दिगम्बर दीक्षा अपार जन समूह के बीच प्रदान की गयी। आचार्य श्री ने मुनि सुनीलसागर नाम प्रदान कर, घोषित किया। तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर जी ने जन्म दिवस माघ शुक्ला सप्तमी दिनांक 25 जनवरी 2007 को औरंगाबाद में मुनि सुनीलसागर जी को आचार्य पद प्रदान कर। वरद हस्त रूप में आगामी भविष्य के लिये आशीर्वाद प्रदान किया।

आडलू एवं सोलापुर चातुर्मास के बाद गोम्पटेश्वर बाहुबली स्वामी के दर्शन की तीव्र भावनावश 21 दिसम्बर 2008 को सोलापुर से श्रवणबेलगोला की ओर विहार किया। बीजापुर, बाबानगर, जमखंडी, लोकापुर चन्नराय-पट्टण आदि नगरों से होते हुये 5 फरवरी 2009 को श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री का मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ अपने **णमो जिणिदं गोम्पटं तथा भद्रबाहुचरियं** की रचना की। आपके द्वारा रचित भावणासारो ग्रंथ का कन्नड़ में अनुवाद हुआ। 11 अप्रैल 2009 को प्राकृत भाषा के विविध आयाम- संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें आपके द्वारा रचित **णमो जिणिदं गोम्पटं** स्तुति को जब डॉ. मयूर शहा सोलापुर ने प्रस्तुत किया तो स्वामी जी सहित सभी लोग भाव विभोर हो गये। और स्वामी जी ने अपने भाषण में आचार्य श्री को **अभिनव नेमिचन्द्र चक्रवर्ती** कहकर पुकारा और कहा कि प्राकृत भाषा में आचार्य नेमिचन्द्र जी के बाद 1000 वर्ष के अन्तराल में पहली बार किसी प्राकृत भाषा में स्तुति लिखी गई है। इस स्तुति को एक हजार वर्ष याद लिखने का सौभाग्य आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज को प्राप्त हुआ। और श्री चारुकीर्ति स्वामी जी तथा विद्वानों ने आचार्य श्री की बहुत प्रशंसा की और प्राकृताचार्य की उपाधि से अलंकृत किया। संगोष्ठी में आचार्य श्री का प्रवचन प्राकृत भाषा में हुआ।

दक्षिण यात्रा व नातेपूते चातुर्मास के बाद पुनः आपको गुरुदेव के दर्शन करने एवं चरण सान्निध्य में रहने का लाभ। 23 मई 2010 को कुंजवन उदगांव की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में अनन्तवीर्य भगवान की 43 फुट ऊंची प्रतिमा को गुरु की आज्ञा से आपके द्वारा सूरीमंत्र दिया गया।

तपस्वी सम्राट का स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता गया और 18 दिसम्बर 2010 को विष्णुकुमार चौधरी को लिखे गये पत्र में अपना पट्टाचार्य पद आचार्य सुनीलसागर जी को स्वयं सौंप दिया। उन्होंने इसके पूर्व भी कितनी बार आचार्य सुनीलसागर जी से कहा था। मेरा पद सम्भालो, हर बार मना करने के कारण पूर्व सूचना रहित पत्र में लिखकर रखा, मेरा पद आचार्य श्री सुनीलसागर जी को देना और गुरुदेव ने अपना उत्तराधिकार पद दे दिया। तपस्वी सम्राट ने 24 दिसम्बर 2010 को इंगिनी मरण सिद्ध किया। 22 दिसम्बर 2010 को आचार्य सुनीलसागर जी ने गुरुदेव को पत्र लिखा। गुरुदेव ने वह पत्र दो बार अच्चे से पढ़कर कहा कि सुनीलसागर जी से कहो कि खूब धर्म प्रभावना करो। और उसी पत्र के नीचे लिख दिया कि **मेरा पद आचार्य सुनीलसागर जी को देना** और नीचे आचार्य सन्मतिसागर न लिखकर सिर्फ सन्मतिसागर लिखा। 24 दिसम्बर को प्रातः उनके समाधिमरण कर देवलोक की सूचना मिली। समाचार सुनकर मानों एक क्षण के लिये

आप गुरु वियोग से खिन्नमना हो गये। 26 दिसम्बर 2010 को आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज की आज्ञा एवं लिखित आदेशानुसार, योग्यतानुसार, योग्यतम शिष्य होने से सारे देश व मुम्बई की विवेकी समाज द्वारा आचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) परम्परा के चतुर्थ पट्टाधीश के रूप में विशालतम संघ की जिम्मेदारी आचार्य श्री सुनीलसागर जी को सौंपी गई।

आचार्य सुनीलसागर जी महाराज आचार्य आदिसागर अंकलीकर परंपरा के श्रेष्ठ संत हैं। आज वर्तमान में जिन्होंने प्राकृत भाषा में ग्रन्थों को लिखने की विलुप्त परम्परा का प्रारम्भ किया है। आपके द्वारा रचित प्राकृत भाषा की पुस्तकें विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं।

आपके द्वारा आज तक 50 से भी अधिक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जो एक-एक पुस्तक एक-एक रत्न के समान हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों में 14 से भी अधिक पुस्तकें प्राकृत भाषा में लिखी गई हैं। आज तक आपके द्वारा लगभग 62 दीक्षाएँ प्रदान की जा चुकी हैं।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज द्वारा लिखित प्राकृत कृतियाँ :

1. भावणासारो (प्राकृत), 2. णीदीसंग्रहो (प्राकृत), 3. प्राकृत बोध (प्राकृत व्याकरण), 4. भद्रबाहुचरियं (प्राकृत), 5. सम्मदी-सदी (प्राकृत), 6. भावालोयणा (प्राकृत), 7. वयण सारो (प्राकृत), 8. णियप्प-ज्ञाणसारो (प्राकृत), 9. शुदि संगहो (प्राकृत), 10. अज्झप्पसारो (प्राकृत), 11. बाहुबली (प्राकृत), 12. अनंतवीर्य (प्राकृत), 13. बारह-भावणा (प्राकृत), 14. भक्ति संग्रह (भक्ति-संगहो)

आचार्य श्री सुनीलसागर जी ने संयमी जीवन व्यतीत करते हुये स्थान और समय प्रभाव से संवेदनाओं के जिस रूप की अनुभूतियों की है, उसको शब्दबद्ध कर रचनाओं का रूप दिया है, वह उनकी स्फुट रचनाएँ हैं। वे यत्र-तत्र-पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी हैं इसी प्रकार उनकी कुछ अप्रकाशित कृतियाँ भी हैं, जो कतिपय कारणों से प्रकाशित नहीं हो सकती हैं।

कविता

इ तहान

✽ अपूर्वा जैन, झांसी ✽

हर सुबह हर साँझ एक नया इम्तहान है जिंदगी,
मुश्किलों में जो हिमालय सम अडिग हो,
उसका नाम है जिंदगी, काँटों के बीच जो
गुलाब की तरह खिले उस खुशबू का नाम है जिंदगी ॥
दल दल में भी जो कमल की तरह स्वच्छ रहें
उस विश्वास का नाम है जिंदगी ॥
अपनी आत्मविश्वास का दीपक रोश करें,
उस उजाले का नाम है जिंदगी ॥



जैन धर्म का दर्पण-गो मटसार जीवकाण्ड छन्दोदय

✽ डॉ. प्रेम भारती, भोपाल ✽

धर्म और दर्शन दोनों में अन्तर है। धर्म की उत्पत्ति आत्मा की भूख से होती है और दर्शन की जिज्ञासा से। यही कारण है कि जब धर्म किसी न किसी प्रकार के रूढ़िवाद में फँस जाता है और जब दर्शन धर्म का अनुगामी हो जाता है, तो उसका स्वतंत्र चिंतन क्षीण होने लगता है और उसकी भूमिका धार्मिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन तक ही सीमित हो जाती है।

भारतीय दर्शन के अनुसार मानव सत्ता का वृहत्तर अंश ही अस्ति, नास्ति, प्रिय, ब्रह्म या सच्चिदानंद माना गया है। अतः ज्ञानाग्नि द्वारा जीवन भाव को भस्म करने के उपरान्त मानव मन में शुद्ध चैतन्य की पूर्णता तथा मर्यादा स्थापित हो जाये। इसी को मोक्ष या निर्वाण कहा गया है। आजकल दर्शन और धर्म के भेद करने का विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। ऐसे में मुझे भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित बाबा दौलतराम वर्णी कृत गोम्मटसार जीवकाण्ड छन्दोदय पुस्तक पढ़ने को मिली है। पुस्तक के प्रबंध संचालक सुरेश जैन (आई.ए.एस) तथा सम्पादक प्रमोद जैन हैं। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र के प्राज्ञ पुरुष हैं। विषय के मर्मज्ञ हैं।

पाठकगण उत्सुक होंगे कि पुस्तक का नाम सामान्य प्रचलन में नहीं है अतः उसे जान लें। आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने अपने शिष्य वीर मार्तण्ड चामुण्डराय के अज्ञान-अंधकार को दूर करने के लिये इस ग्रंथ की रचना की है। चामुण्डराय का पारिवारिक नाम गोम्मट था, अतः इस ग्रंथ का नाम भी गोम्मटसार रखा गया। गोम्मट मराठी शब्द है, जिसका अर्थ है- उत्तम और आकर्षक। अतः यह पुस्तक ज्ञान की दृष्टि से उत्तम है।

प्राज्ञ पुरुष श्री सुरेश जैन के अनुसार गोम्मटसार जैन संस्कृति का आधारभूत पारिभाषित और लाक्षणिक ग्रन्थ है। इस ग्रंथ के प्रथम भाग का नाम जीव-काण्ड और द्वितीय भाग का नाम कर्मकाण्ड रखा गया है। इसमें 734 गाथाएँ हैं, जिनमें गुणस्थान और मार्गणा की चर्चा की गई है। मोह और मन, वचन, कार्य की प्रवृत्ति के कारण जीवन के अंतरंग परिणामों में प्रतिक्षण होने वाले उतार-चढ़ाव को गुण स्थान कहा जाता है। गुणस्थान में भावनात्मक तथा आध्यात्मिक विकास के चौदह सौपान हैं। इन सौपानों पर आगे बढ़ते हुये उच्चतम सौपान पर पहुँच कर साधक सिद्ध बन जाता है। मार्गणा का अर्थ है, खोज करना। जीव जिन भावों के द्वारा खोजे जाते हैं या जिन पर्यायों द्वारा खोजे जाते हैं, उन्हें मार्गणा कहते हैं।

डॉ. प्रेम भारती लोकनिष्ठ व्रती रचनाकार है। उनके शब्द कर्मानुमोदित हैं। उनके सोच और लेखन में मर्यादा उनका पाथेय है। यही आधार है और यही आधेय भी। उनका सम्पूर्ण लेखन दायित्वपूर्ण जीवनदृष्टि की ओर इंगित करता है।

अरूणामा उनके साहित्य का रंग है। संस्कारों का संस्कारों से शोधन उनकी क्रिया है। न उनकी संज्ञायें अनावश्यक विशेषण का बोध देती हैं और न क्रियायें क्रिया विशेषणों का।

विषय का उनका संज्ञान अनुभव और अनुसंधान से पुष्ट है।

पारस और दीपक दोनों में से डॉ. भारती पारस नहीं, दीपक को चुनते हैं। उनकी सोच है

पारस के सोने से सोना नहीं बन सकता, लेकिन दीपक के स्पर्श द्वारा दीपक सत्ता में आ सकता है।

डॉ. भारती भारतीयता के पक्षकार हैं। उनकी भारतीयता भूगोल पर आश्रित नहीं है। भावना और कर्तव्य के द्वन्द में कर्तव्य के पक्ष में खड़े दिखना ही भारती की भारतीयता की व्याख्या है। कुरुक्षेत्र की राधा की मानसिकता की यह पूर्वपीठिका, यही उत्तरपीठिका भी।

डॉ. देवेन्द्र दीपक, निदेशक, म.प्र. साहित्य अकादमी, भोपाल म.प्र.

प्रस्तुत ग्रंथ प्राकृत भाषा का है, जिसका हिन्दी पद्यानुवाद छन्दोदय नाम से बाबा दौलतराम वर्णी ने किया है। अतः इस ग्रंथ का नाम बाबा दौलतराम वर्णी छन्दोदय रखा गया है। इसमें दोहा, चौपाई, गीतिका, कवित्त, सवैया आदि अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रंथ की रचना को देखकर मुनि विद्यानंद और विद्यासागर आदि प्रतिष्ठित आचार्यों ने इसको हिन्दी साहित्य का उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ माना है। इन छन्दों की व्याख्या श्री प्रमोद जैन ने की हैं। छन्दों की रचना बृज भाषा में की गई है। अतः पाठकों को उसका अर्थबोधगम्य हो, इस दृष्टि से व्याख्या के आधार पर इस ग्रंथ की विषय वस्तु को समझना सहज को सका है। विषय वस्तु लाक्षणिक एवं दार्शनिक होने से पाठक के लिये दुरुह है। इसे समझना बहुत कठिन सा लगता है। अतः व्याख्या द्वारा ग्रंथ ही उपयोगिता बढ़ गई है।

इस प्रकार धर्म और दर्शन का एक सुंदर समन्वित रूप इस ग्रंथ में प्रतिपादित किया है। धर्म के इन दोनों पक्षों का समन्वय न हो तो धर्म भी अपनी वास्तविकता को खो देता है। दुर्भाग्यवश मनुष्य इन दो पक्षों में से किसी एक पक्ष को महत्व देने की भूल कर बैठता है और उसे ही धर्म मान लेता है। ऐसे में धर्म का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगता है। बिना समझे बूझे बाहरी जीवन के विषय सुखों का परित्याग कर देने से या आध्यात्मिक चोला ओढ़ लेने से मनुष्य की भावनाओं का दमन होता है। अतः आत्मसंयम के पीछे जो सिद्धांत इस ग्रंथ में बनाये गये हैं, उसका सावधानी पूर्वक अभ्यास करना चाहिये। धर्म और बुराई दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते।

प्रायः देखने में आया है कि व्यक्ति दुकान खोलता है और पुत्र से कहता है-आटे में मिलावट कर लो? हाँ, पिता जी। मिर्ची में मिलावट कर लो? हाँ, पिताजी। सारा काम पूरा हो गया है। अच्छा बेटे चलो अब महाराज का प्रवचन सुनने चलो। कृपया ऐसे मनोवृत्ति के लोग इस पुस्तक को नहीं पढ़ें। मिलावटी स्वभाव होने से वे धर्म को भी मिलावट का विषय मानते हैं। ऐसी पुस्तक पढ़कर उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता। धर्म का साक्षात् लाभ है-चेतना का रुपान्तरण, फिर भी जो लोग सचमुच आत्मा की खोज में जुटे हैं और क्रियाकांड में लिप्त हैं। उन्हें इस ग्रंथ को पढ़कर अवश्य आत्मदर्शन होगा।

इस पूरे ग्रंथ में मार्गणा में स्पष्ट किया गया है कि अपने चरित्र ही हानि न होने दें, इसको कषाय कहते हैं। देखने में आ रहा है लोग धर्म को मानते हैं, चरित्र को भुला देते हैं। इस ग्रंथ को पढ़कर हम अपना चरित्र निर्माण करें, यही धर्म है और इस ग्रंथ का संदेश है।

ग्रंथ की सबसे बड़ी निष्पत्ति भी हैं- अपने आपको जानना। संसार में नास्तिक भी है, आस्तिक भी हैं किन्तु अपने आपको नहीं जानता, यह बहुत बड़ा आश्चर्य है। दुनिया को सबसे

बड़ा खतरा उन आस्तिकों से है, जो सिद्धांततः तो आस्तिक हैं, किन्तु व्यवहारतः नास्तिक से भी दो कदम आगे हैं। ऐसे धर्मात्मा समझते हैं, पूजा करना ही सबसे बड़ा धर्म है। मुनियों का आशीर्वाद मिल जायें किन्तु त्याग के मार्ग पर चलना न पड़े। ऐसे लोगों को यह ग्रंथ शुष्क ही लगेगा।

ऐसे लोगों के लिये आज धर्म एक समस्या बन गया है। इसलिये पाठकों को इस ग्रंथ को पढ़कर धर्म को वर्तमान स्वरूप में जानने का प्रयत्न करना होगा। इसके अध्यापन से पाठक अपनी समस्याओं को सुलझाने का मार्ग खोजें, किन्तु धर्म को समस्या न बनायें। आज की नई पीढ़ी में धर्म की जिज्ञासा तो बढ़ रही है किन्तु उसकी सही व्याख्या अथवा व्यवहार उन्हें कहीं नहीं दिखाई देता। इसलिये पाठकों को वर्तमान के संदर्भ को जोड़कर इस पुस्तक पर अपनी बुद्धि के अनुसार मननपूर्वक चिन्तन करना होगा तभी इस प्रकार की रचना एवं प्रस्तुति का महत्व बढ़ेगा। ऐसी मेरी मान्यता है।

समस्याओं के उफान पर छोट देने के लिये इस प्रकार की पुस्तकें अवश्य प्रकाशित की जाना चाहिये। श्री सुरेश जैन तथा श्री प्रमोद जैन ने साधकों में चित्त निर्माण का जो दर्पण यहाँ पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत किया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। आज धर्म की मीमांसा सही ढंग से हो इसकी मांग है। आज जो साहित्य प्रकाश में आ रहा है, उससे संस्कार की जमी हुई परतें उखड़ती नजर आती हैं। यदि इस प्रकार का प्रयत्न नहीं किया गया, तो नई पीढ़ी के मानसिक आवेग पर धर्म के आलोक का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ेगा।

सम्पादकद्वय ने इस ग्रंथ के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुये लिपिगत तथा भाषागत दोषों का परिमार्जन कर इसे सुगम और सरल बनाने का जो प्रयास किया है यह श्लाघनीय है।

कविता

छोटा पद बड़ा मद

छोट कद छोटा पद पर कितना मन छाया मद
दुनिया को देखो तो कितनी है ये दुनिया
तू अदना सा फिर समझे
तू अपने को कितना बड़ा द्वीपों में
एक एशिया उसमें भी भारत छोटा सा
भारत में पैतीस प्रांत उसमें है तेरा प्रांत
प्रांतों में बहुत जिला गाँव नगर महानगर
मुहल्लों में डगर-डगर तेरो मकान
घरोंदे समान कसरा फिर उसमें एक
बैठा तू सिमटा सा एक
बोलो तुम कितने बड़े अहं मद में व्यक्त बड़े।



जल पर्यावरण और मूकमाटी

✽ ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर ✽

जल यह तो प्राणीमात्र का जीवनदाता है। यह विभिन्न उपयोगों में आने वाला है। इस जल को अधिक साफ रखने के लिये विविध प्रकार के प्रदूषणों से बचाना हमारा कर्तव्य है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी ने मूकमाटी काव्य में जल की महिमा को व्यक्त करते हुये लिखा है कि जल पावन है, शीतल है, और समुद्र का जल भी उज्ज्वल है। यथा :-

क्षीर सागर की पावनता, मूलतः रही हैं।

जल के प्रदूषण की चिन्ता करते हुये कवि हृदय बोल उठता है कि जल-तत्व अब बलशाली नहीं रह गया है। जिस जल में जन्म लेकर मछली आनन्द का अनुभव करती थी। वह जल अब प्रदूषित हो गया है। इसलिये जल के जीव व्याकुल हो रहे हैं। यथा-

मूकमाटी में आचार्य श्री कहते हैं कि उछलने को मचलती सी यह मछली

जल में जन्म लेकर भी, जल से जलचर जन्तुओं से, जड़ में शीतलता कहाँ माँ।

आचार्य श्री ने जल प्रदूषण को व्यक्त करते हुये लोगों को सतर्क किया है नर्मदा का नरम कंकर, गुणोदय काव्य में भी जल संरक्षण की बात कही है सुनीति शतक में कहा है कि जल के आश्रित होने पर ही जल में लहरें उठती हैं। यदि जल नहीं है तो लहरे भी नहीं उठेंगी। जल से ही बीज अंकुरित होते हैं जल नहीं होगा तो बीज भी अंकुरित नहीं होगा और बीज अंकुरित नहीं होगा तो वृक्ष नहीं होंगे और वृक्ष न होने पर जीवन भी संभव नहीं होगा इस प्रकार से जल के बिना इस संसार का होना भी असंभव है जल बिन कल हो जल में उठती लहरें जल के आश्रित हो।

परम्परा है बीज वृक्ष से वृक्ष बीज से फिर से है किन्तु बीज को दग्ध करो तो वृक्ष कहाँ फिर जायेगा ?

इस प्रकार आचार्य श्री ने प्रत्येक स्थान पर जल प्रदूषण तथा संरक्षण की चर्चा की है जैन मुनि तो स्वयं ही जल संरक्षण करते हैं हम लोग तो सिर्फ जल बचाओ आदि नारे मात्र लगाते हैं परंतु साधु तथा आचार्य तो स्वयं उस कार्य को करके ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हमारे साधु तो एक कमण्डल मात्र जल लेते हैं और उसी से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं जिस युग में इतनी भौतिकता हो जिसके लिये तरह-तरह की क्रीम आदि का उपयोग इस शरीर की सजावट के लिये करना पड़े उस समय में हमारे साधु स्नान तक न करें इससे अच्छा जल संरक्षण और क्या हो सकता है ?

3. अग्नि पर्यावरण- आचार्य श्री द्वारा रचित मूकमाटी महाकाव्य तो प्रत्येक स्थान पर पर्यावरण संरक्षण से भरा हुआ है चाहे पृथ्वी पर्यावरण हो या जल पर्यावरण या अग्नि पर्यावरण प्रत्येक स्थान पर इसके संरक्षण की बात कही है आचार्य श्री मूकमाटी में अग्नि, अग्निकाय, अग्निकायिक इनके चैतन्य कहते हुये कहते हैं कि वह तेज तत्व को सूचित करने वाली है। इसके दुष्परिणाम भयंकर होते हैं।

तेज तत्व को सूचित किया बड़वानल भयंकर रूप, ले खौल उठा

आचार्य श्री ने मूकमाटी पृ. 231 पर कहा है कि यह सौर्यमण्डल के रूप में प्रभाकर का नाम लिया जाता है। उसे गगनमणि कहा जाता है। यह देखा भी है और ग्रह भी हैं। ग्रहगणों के कारण से सूर्यमण्डल की ऊर्जा व्यग्रता का रूप धारण कर चुकी है, प्रदूषित वातावरण के कारण सौर्यमण्डल में व्यग्रता आई है। महाकवि अर्थात् आचार्य श्री ने मूकमाटी में ही आगे कहा है कि प्रभामण्डल से युक्त प्रभाकर को प्रदूषित वातावरण के कारण से उसे निष्प्रभ, भययुक्त, लपलपाती रसना वाला और आग की बूंदों को टपकाने वाला भी कहा है। इस प्रकार से अग्नि की प्रदूषणता को भी आचार्य श्री ने तरह-तरह से व्यक्त किया है।

आचार्य श्री ने अग्नि को आलोक द्रव्य के रूप में स्वीकार करते हुये उसके महत्व को भी स्थान दिया है। उन्होंने अग्नि के भी रस तत्व की बात कही है और यह भी कहा है कि अग्नि प्रभा एवं कान्ति से पूर्ण है। यदि अग्नि प्रदूषित नहीं है तो अग्नि की उष्णता का भी अपना स्थान है। शुद्ध अग्नि की आभा तमस, धूम के हटने एवं छटने से ही साकार रूप लेती है। निर्विकार, निर्धूम अग्नि अरुण होती है। तभी तो प्रभाकार की अरुण रश्मियों से अरविन्द अर्थात् कमल खिलते हैं। (मूकमाटी पृ. 283)

4. वायु पर्यावरण :- पृथ्वी पर महावेग एवं बल से युक्त, वायु का कई रूपों में विवेचन किया गया है। दशों दिशाओं में विचरण करने वाली वायु सम्पूर्ण लोक में व्याप्त है।

आचार्य श्री ने मूकमाटी में वायु के चक्रवात को उत्पात और घात की संज्ञा दी है। यथा
वात-वात में चक्रवात जब उत्पात घात की ओर, बढ़ता ही जा रहा इस अति को इति के लिये संकेत मिलता है उपालंभ के साथ।

आचार्य श्री ने वायु प्रदूषण को भी मूकमाटी में व्यक्त किया है यथा-

मन्द-2 सुगन्ध पवन बह रहा है। बहना ही जीवन है।

इससे बढ़कर श्रेयसी कौन सी हो सकती है न निशाकर है न निशा न दिवाकर है न दिवा अभी दिशाये अंधी है।

दुरभि संधि-श्वास-श्वास पर नासिका बन्द कर आर्त धुलि घूँट बस पीती ही आ रही हूँ।

वायु यदि प्रदूषित है तो उससे जीव मण्डल और भूमण्डल भी प्रदूषित है। आज हानिकारक विविध प्रकार की गैसों के कारण हवा इतनी प्रदूषित हो गई है कि वनस्पति का अपना अस्तित्व भी समाप्त होता जा रहा है। वायु प्रदूषण से चन्द्रमण्डल, रात्रि, दिन, दिन का सूर्यमण्डल एवं सभी दिशाये अंधी हो गई हैं। जो सुगन्धयुक्त पवन वह रही थी उसी पवन का काम ही बहते रहना था, परन्तु चारों ओर की दुरभिसंधि ने पवन में भी दुर्गन्धि व्याप्त कर दी है। जिससे वायुमण्डल भी प्रदूषित हो गया है।

सुख कहाँ-आपका सुख- आपके हाथ में

आपका जीवन आपके हाथ कार्यक्रम - रक्त वाहनियों में अवरोध का वैज्ञानिक, आधुनिक, सुरक्षित व बिना चीर-फाड़ का एक स्थायी उपचार है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने बाईपास सर्जरी और एंजियोप्लास्टी को इस रोग के इलाज के लिये उपयोग किया परन्तु उनकी यह तकनीक नाकाम रही क्योंकि जल्दी ही रक्त वाहनियों में पुनः अवरोध देखा गया। इसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं।

चिकित्सा विज्ञान ने फिर अवरोध के कारणों को अच्छी तरह जांचा और जाना कि इस रोग का स्थाई निदान आधुनिक तकनीक के द्वारा संभव नहीं है और इस सूत्र से ही विकसित हुआ आपका जीवन आपके हाथ कार्यक्रम।

शोध द्वारा यह प्रमाणित किया गया कि कॉलेस्ट्रॉल एवं चर्बी के रक्त वाहनियों के अंदर जामाव के कारण हृदय रोग विकसित होता है। अगर इसके कारणों को पूरी तरह प्रतिबंधित किया जाये तो अवरोध के जमाव को न केवल रोका जा सकता है बल्कि जमी चर्बी को भी रक्त वाहनियों से घटाया जा सकता है। आपका जीवन आपके हाथ, कार्यक्रम के द्वारा दी जा रही पूर्ण जानकारी और व्यवहारिक ज्ञान जैसे योग, उचित जीवन शैली, बिना तेल का खाना इत्यादि को अपनाकर व्यक्ति अपने आपको पूर्णतः रोग मुक्त कर सकता है।

औषधि चिकित्सक जीवन शैली के बारे में नहीं सिखा सकते और योग शिक्षक औषधि के बारे में व हृदय रोग के कारणों को नहीं बता सकते। आधा ज्ञान हृदय रोगियों के लिये न केवल पर्याप्त होता है बल्कि नुकसान देय भी हो सकता है। आपका जीवन आपके हाथ, कार्यक्रम ने इन सबका निवारण किया। औषधि विज्ञान और जीने की कला को एक साथ लेकर। यह प्रशिक्षण पूर्ण रूप से जाँचा और परखा हुआ है। जिससे हृदय रोगी पूर्णतः सुरक्षित है। चिकित्सकों, हृदय रोग विशेषज्ञों, भोज्य विशेषज्ञों, योग कुशल शिक्षकों द्वारा चलाया जा रहा, व डॉ. विमल छाजेड़ एम.डी. एवं भूतपूर्व परामर्शदाता अ.भा. आर्यु. स. (AIIMS) नई दिल्ली द्वारा संचालित साओल हृदय रोगियों को ठीक करने का सर्वाधिक सफल तरीका है।

योग :- 1. प्रार्थना-2 मिनट, 2. कपाल भाती-1 मिनट, 3. नाड़ी सोदम प्रणाम-1 मिनट, 4. भवरा आवाज-1 मिनट

नोट :- समय नहीं होव तो ओम नमो सिदेभ्य संकल्प नमस्कार करके सबको त्याग करके फिर ध्यान में बैठें। ॐ को तीन हिस्सों में बाँटे। चिर मुद्रा धारण करके आकाश, उकारा, माकारा इसको करने के लिये शरीर के अंगों को तीन हिस्सों में बाँटे। पांच से कमर तक आकारा कमर से गले तक उकारा, गले से सिर तक माकारा। अंत में तीन बार ॐ को गहराई से उच्चारण करें एवं प्रत्येक मंत्र के बाद में महसूस करें, एवं रीढ़ की हड्डी सीधी रखे एवं आँखें बंद रखें। जब संकल्प छोड़े ॐ शांति का मंत्र पड़े एवं धरती माता के चरणों में अहंकार का त्याग करें एवं हल्के होकर वापस आयें। उसके बाद हथेली स्पर्श करें।

समय होने पर यह योग जरूर करें - 1. सूक्ष्म विराम, 2. पिर्जींग एक्सरसाईज, 3. लुर्जींग एक्सरसाईज, 4. गोगिंग, 5. सिद्ध नमस्कार, 6. शव आराम, 7. पयन मुक्त आसन, 8. पुर्जन आसन।

शव आसन प्रत्येक व्यक्ति को 3 से 10 मिनट तक जरूर करना है।

9. लाफिंग आसन- रामचंद्र जी, किशन जी, रावण जी, इनकी हँसी का उपयोग जरूर करें। कल के लिये आज का दिन क्यों खोयें। जिन पलों में हँस सकते हैं उन पलों में रोये क्यों। कर्म योग के लिये दिन विभाजन इस प्रकार से करें -

1. 6 घंटे सोना, 2. 2 घंटे शील क्रिया व्यायाम (योगा), 3. 3 घंटे मनोरंजन, भोजन, नाश्ता, 4. 2 घंटे पूजा, ध्यान, साहित्य पढ़ना, 5. 11 घंटे परिश्रम।

बीमारी के मुख्य कारण हैं 30 से 40% पेट की खराबी एवं 60 से 70% मानसिक तनाव। दोनों सही हैं तो पूर्व कर्म के उदय इसके जिम्मेदार हैं। योगासनों के अभ्यास के लिये कुछ सामान्य निर्देश जहाँ भी रहें, मन से (ईमानदारी से रहें) एवं अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करें सही योग हैं।

1. भोजन तुरंत बाद आसन न करें। भारी भोजन के ल गभग 4 घंटे बाद और हल्के भोजन के 2 घंटे बाद अभ्यास करें। मादक द्रव्यों का सेवन न करें।
2. योगासन स्नान के पहले या बाद में कभी किये जा सकते हैं। लेकिन अभ्यास और स्नान के बीच आधे घंटे का अंतर रखें।
3. आसन और शारीरिक व्यायामों को न मिलायें। तनन ओर ऐसे ही अन्य व्यायामों के बाद काफी समय तक श्वसन करने के बाद ही आसन करें।
4. किसी भी आसन में शरीर को तनाव रहित रखना महत्वपूर्ण है। अंतिम आसन मुद्रा में सभी तनावों से मुक्त हो जाइयें। श्वसन के बीच कुछ मिनट के लिये तनाव मुक्त हो जाइये।
5. योगासनों के बाद आपको तनाव मुक्त और ताजा महसूस होना चाहिये। कभी भी थकान अशान्ति और पसीना नहीं आना चाहिये।
6. मुद्रा को देर तक बनायें रखने के लिये अपनी क्षमता से अधिक प्रयास न करें। अपनी प्रगति के साथ-साथ समय बढ़ाने का प्रयत्न करिये।
7. प्रगति के लिये दैनिक अभ्यास आवश्यक है।
8. महिलाओं को मासिक धर्म के समय आसनों का अभ्यास नहीं करना चाहिये। गर्भ के पाँचवे मास के बाद अभ्यास रोक दें और प्रसव के दो-तीन मास बाद ही अभ्यास करें। प्रार्थना में नामोकार मंत्र का उच्चारण करें। चार लाईन अवश्य याद रखें।
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्रोत बहे॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥

चलो देखें यात्रा

चंपापुर

2000 वर्ष पूर्व आचार्य कुंदकुंद देव ने निर्वाण भक्ति की रचना की थी जिसमें लिखा था चंपाया वासुपूज्य जिणगाहो अर्थात् चंपापुर में वासुपूज्य जिनेन्द्र देव ने मोक्ष की प्राप्ति की थी अर्थात् आचार्य पूज्यपाद जी ने अपनी निर्वाण भक्ति में लिखा चंपापुरे च वासुपूज्य सुता सुधीमान् अर्थात् वासुपूज्य भगवान चंपापुर में उत्कृष्ट सिद्धि को प्राप्त हुये। इन दोनों प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तीर्थंकर वासुपूज्य का निर्वाण चंपापुर में हुआ एवं उनके पाँचों कल्याणक इसी तीर्थ पर हुये हैं। इस तीर्थ पर दो कोठियों हैं। एक तेरापंथी एवं एक बीसपंथी कोठी है। तेरापंथी कोठी में 19 मंदिर हैं और बीसपंथी कोठी में 35 वेदियों पर जिन भगवान के दर्शन होते हैं।

आसपास के तीर्थ- मंदारगिरी 55 किमी. नवादा 190 कि.मी शिखर जी 265 कि.मी गुणावा 193 किमी. पावापुर 216 किमी. कुंडलपुर 265 किमी. राजगृही 250 किमी. सुल्तानगंज 22 किमी. यहाँ पर दिगम्बर जैन मंदिर हैं।

पहुँच मार्ग चंपापुर भागलपुर रेलवे स्टेशन से चंपापुर 4 किमी. दूर है। बस स्टैण्ड भागलपुर बागवाड़ी पी.एन.बी कॉलेज से 0 माईल है। यहाँ पर पहुँचने के लिये रेल एवं सड़क मार्ग दोनों हैं।

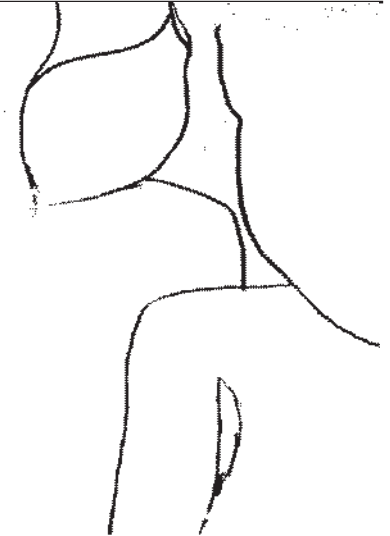
आवास व्यवस्था- 26 कमरे तेरापंथी में 21 कमरे बीसपंथी में 15 कमरे बिना अटेच 4 हॉल 13 पंथ में 1 हॉल 20 पंथ में कुल यात्रियों के ठहरने की क्षमता 1400 यहाँ सशुल्क भोजनशाला है।

संपर्क सूत्र- प्रबंधक राजेश जैन- 8863869621, मंत्री मनोज पाटनी 9431001597

कविता

राम । त

करे विपत्ति में बंटवारा रामभक्त पहचान ।
संपत्ति में हो बंटवारा रावण का कुल जान ॥
करुणाधारी परोपकारी रामभक्त होता है ।
दुखी देखकर औरों का जो भीतर से रोता है ।
शरण में जीवों को जो देता अनुपम जाण ॥
अत्याचारी घात विचारी चित्त क्रूरता धार ।
स्वार्थ अहं में प्रभु को ध्यावो क्या पावे भव पार ।
रावण कुल का वही समझइये जिसके झूठी शान ॥
काम क्रोध मद त्याग जिन्होंने मर्यादा को धारा ।
जाति पांति से ऊपर उठकर पतितों को उभारा ।
रामभक्ति में लीन सुधिजन करें राम का गान ॥





समाधि का मूलग्रंथ भगवती आराधना

शिवाय आचार्य की एक मात्र रचना उपलब्ध है वह है भगवती आराधना प्रस्तुत ग्रंथ में सम्यग्दर्शन- सम्यग्ज्ञान-सम्यग्चारित्र और सम्यग्गतप इन चार आराधनाओं का वर्णन किया गया है उपलब्ध ग्रन्थ में चालीस अधिकार एवं 2166 गाथायें है प्रस्तुत लोकप्रिय ग्रंथ पर अपराजितसूरि ने विजयोदय टीका लिखी तथा पंडित आशाधर जी ने मूलाराधन दर्पण टीका लिखी एवं प्रभाचन्द्र आचार्य ने भगवती आराधना पर आराधना पंजीका टीका लिखी एवं शिवजित अरूण की भावार्थ दीपिका टीका भी उपलब्ध है।

वस्तुतः इस ग्रंथ में आराध्य- आराधक, आराधना और आराधना फल इनका सम्यक् वर्णन किया गया है। यहाँ रत्नत्रय आराध्य है। निर्मल परिणाम वाले भव्यजीव आराधक हैं। जिन उपायों से रत्नत्रय की प्राप्ति होती है, वे उपाय आराधना हैं और इस रत्नत्रय की आराधना करने से अभ्युदय और मोक्ष रूप फल की प्राप्ति होती है, यह आराधनाफल है।

इन चार आराध्य आदि पदार्थों की आराधना उद्योतन, उद्यवन निर्वहण, साधन और निस्तरण इन उपायों से होती है। सम्यक् दर्शनादि को अतिचारों से अलिप्त रखना, उनमें दोष उत्पन्न न होने देना उद्योतन है। आत्मा में बार-बार सम्यक्दर्शनादि की परिणति करते जाना उद्यवन है। परीषहादिक प्राप्त होने पर स्थिर चित्त होकर सम्यक् दर्शनादि से च्युत न होना निर्वहण है। अन्य कार्यों में चित्त लगने से यदि सम्यक् दर्शनादि तिरोहित होने लगे तो पुनः उपायों से उन्हें पूर्ण करना साधन है। आमरण सम्यक् दर्शादि को निर्दोष धारण करना निस्तरण है।

इस प्रकार भगवती आराधना में मनुष्य भव को सार्थक करने के लिये सल्लेखना या समाधिमरण की सिद्धि की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। शिवाय ने इस ग्रन्थ में प्राचीन समय की अनेक परम्पराओं को निबद्धकर साधक जीवन को सफलता पर प्रकाश डाला है।

केरियर



पेट्रोलियम उद्योग में अवसर

जब से निजी कम्पनियों ने भारतीय पेट्रोलियम उद्योग में प्रवेश किया है, युवा पीढ़ी के लिये इस क्षेत्र में करियर के नये अवसर उत्पन्न हो गये हैं हमारे देश में जिन क्षेत्रों का बहुत तेजी से विकास हो रहा है पेट्रोलियम और ऊर्जा उनमें से एक है तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग तथा अन्य तेल कंपनियाँ इस क्षेत्र में भारी लाभ अर्जित कर रही हैं। भारत एशिया के तेल और प्राकृतिक गैस बाजार में बड़ा खिलाड़ी बनकर उभर रहा है।

तेल उद्योग को अपस्ट्रीम (अन्वेषण और उत्पादन क्रियाकलाप) तथा डाउन स्ट्रीम (रिफाइनिंग) मार्केटिंग और वितरण क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है जिसमें सभी स्तरों पर करियर निर्माण के शानदान अवसर उपलब्ध हैं। अपस्ट्रीम क्षेत्र में जिस प्रकृति का कार्य किया जाता है उसमें तेल की संभावना और तेल तथा गैसी की मौजूदगी के लिये परीक्षण करना तथा हाइड्रोकार्बन अन्वेषण के लिये द्वि आयामी तथा त्रि आयामी भूकम्पीय आंकड़े प्राप्त करने के लिये तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल है। यह कार्य भू-गर्भशास्त्रियों द्वारा परिष्कृत प्रोद्योगिकियों का उपयोग कर किया जाता है, जिसमें जियो फिजिसिस्ट और इंजीनियर महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मूलरूप से पेट्रोलियम इंजीनियर का काम पेट्रोलियम को न्यूनतम नुकसान पहुँचाते हुये किरायती तथा सुरक्षित तरीके से पेट्रोलियम को निकालकर सतह का लाना होता है।

इसकी अन्य गतिविधियों में मैटीरियल रिसोर्स मैनेजमेंट, कांटेक्टर रिलेशनशिप और ड्रिलिंग स्टाफ का पर्यवेक्षण भी शामिल है। ये लोग विभिन्न क्षेत्रों में इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, ठेकेदारों और ड्रिलिंग स्टाफ के साथ मिलकर काम करते हैं।

पेट्रोलियम उद्योग में भू गर्भशास्त्रियों, जियो फिजिस्ट और पेट्रोलियम इंजीनियरों के लिये अपस्ट्रीम गतिविधियों में एवं केमिकल मेकेनिकल, इलेक्ट्रिकल तथा इंस्ट्रूमेंटेशन तथा प्रोडक्शन इंजीनियरों के लिये डाउनस्ट्रीम गतिविधियों में करियर के विकल्प उपलब्ध हैं।

कोर्सेस :- पेट्रोलियम इंजीनियरिंग का कोर्स अंडरग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट दोनों स्तरों पर संचालित किये जाते हैं। किसी अन्य इंजीनियरिंग डिग्री पाठ्यक्रम की तरह ही पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में बी.टेक के चार वर्षीय पाठ्यक्रम के लिये भौतिक शास्त्र रसायन शास्त्र तथा गणित विषयों में बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। एम.टेक. पाठ्यक्रम पेट्रोलियम पेट्रोकेमिकल तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग स्नातको के लिये खुला है। जो पेट्रोलियम इंजीनियरिंग स्नातक नहीं है, उन्हें कुछ परिचयात्मक प्रश्न पत्र देने होते हैं।

रोजगार के मौके :- पेट्रोलियम उत्पादन कंपनियों कंसल्टिंग इंजीनियरिंग कम्पनियों कुओं की खुदाई करने वाली तथा जांच कंपनियों के साथ-साथ ओ एन जी सी, इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कम्पनियाँ प्रमुख हैं, इनमें रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जनवरी 2020
स्वागत है संकल्प से

प्रथम-

देश के जियेंगे हम समाज को जियें हम ।
धर्म के लिये सदा त्याग ही करेंगे हम ॥
परिवार को बढ़ायेंगे अपने हस्त शिल्प से ।
नया वर्ष का स्वागत है संकल्प से ॥

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

भारत की भाषा है हिन्दी हिन्दी ही अपनायें ।
हिन्दी में हस्ताक्षर करने कभी

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
दिसम्बर 2019 के विजेता

प्रथम : श्री विनयचंद जैन, विदिशा
द्वितीय : श्रीमति रजनी विमलचंद जैन, मलकापुर
तृतीय : कान्ता जैन, मदनगंज किशनगढ़

नहीं शरमायें ॥

भारत माता यशोगान हमका

हृदय के जल्प से

पावन नये साल का स्वागत है संकल्प से

श्रीमति दीपा जैन, शाहगढ़

तृतीय-

भारत है गणतंत्र अनूठा समता का
अधिकार है
जाति पंथ में बट जाता के पहल सदा बेकार है
शांति दूत भारत की तुलना नहीं कोई
विकल्प से

अखण्ड राष्ट्र भारत का स्वागत है संकल्प से

श्रीमति रूचि जैन, सागर

वर्ग पहेली क्र. 248
दिसम्बर 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति कुसुम मिलाप जैन, कोटा
द्वितीय : श्रीमति इन्दु बड़जात्या, बाकानेर धार
तृतीय : श्रीमति कमला जैन, खरगोन (म.प्र.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जनवरी 2020 का हल

01. अहिंसा	18. शासन	35. घासलेट
02. कुटिबद्ध	19. प्रकाश	36. जीवन
03. अहिंसा	20. भविष्य	37. आत्मा
04. सामूहिक	21. आत्मा	38. बाजार
05. धर्म	22. जेल	39. पापी
06. धर्मात्मा	23. जीव	40. मृत्यु
07. सार्वभौमिक	24. सिद्धत्व	41. 45 लाख
08. धर्म	25. संसार	42. 76 लाख
09. सत्य	26. कौड़ी	43. 6 वें
10. विश्वास	27. उत्साह	44. 2021 में
11. आँखें	28. सम्पदा	45. असंयम के
12. असत्य	29. आचरण	46. 3 लेशायें
13. शब्द	30. आस्था	47. 22 लाख
14. हितकारक	31. बलवान	48. 7 लाख
15. महसूस	32. मोह	49. चार
16. सत्य	33. विषाक्त	50. पांच
17. अनुशासित	34. आत्मिक सम्पदा	



पुस्तक विरुद्ध

संसार स्वरूप

संसार: सारवर्जितः ।

संसार असार है ।

निःसारे खलु संसारे सुखलेशोऽपि
दुर्लभः ।

यह इस संसार में लेश मात्र भी सुख दुर्लभ है ।

असारोऽयमहोत्यन्तं संसारो दुःख पूरितः ।

यह संसार असार और अत्यन्त दुःखों से
भरा है ।

प्राप्तयते सुमहद्दुःखं जन्तुभिर्भवसागरे ।

प्राणी संसार रूपी सागर में बहुत दुख पाते हैं ।

दुखं संसार संज्ञकम् ।

दुख ही संसार का दूसरा नाम है ।

एकाकिनैव कर्तव्यं संसारे परिवर्तनम् ।

जीव को संसार में अकेले ही परिभ्रमण

करना पड़ता है ।

एक एव भवभृत्प्रजापते मृत्युमेति
पुनरेक एवं तु ।

यह जीव अकेला ही जन्मता और अकेला
ही मरता है ।

संसारोऽनादिरेवायं कथं स्यात्प्रीतये सताम् ।

यह अनादि संसार सज्जन पुरुषों की प्रीति
के लिये नहीं हो सकता ।

सर्व तु दुःखमेवात्र सुखं तत्रापि
कल्पितम् ।

इस लोक में सब दुख ही दुःख है, सुख तो
कल्पना मात्र है ।

काल ज्ञानं हि सर्वेषां नयानां मूर्धनन
संस्थितम् ।

समय का ज्ञान सब नयों से श्रेष्ठ है ।

आदिपुण्य से

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए ।

1. आ द य् आ व् ण् ई

2. ण आ अ व् य् व् ई

3. अ र् आ स् क् अ आ स् अ ग् र्

4. अ र् आ स् क् अ म् ज् ज् ष् अ उ

5. अ ओ अ म् य् प् अ द् ए य्

परिणाम :

जनवरी 2020: (1) धन्यकुमार चरित्र (2) श्री णिक चरित्र (3) अमर सेन चरित्र
(4) जीवन्धर चरित्र (5) वरांग चरित्र

दुनिया भर की बातें



दिसम्बर 2019

■ 1 दिसम्बर

- इस्लामाबाद संग्रहालय में भगवान बुद्ध की दुर्लभ मूर्ति लगाई गयी।
- मुम्बई : नाना पटोले काँग्रेस के विधायक महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष चुने गये।
- इराकी संसद प्रधानमंत्री आदिल अब्दुल महदी का इस्तीफा स्वीकार किया।

■ 2 दिसम्बर

- कोच्चि : सब लेफ्टिंट शिवांगी स्वरूप भारतीय नौसेना की पहली महिला पायलट बन गई।
- अध्येध्या पर 9 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ जमीयत उलेमा ए हिन्द ने पुनर्विचार याचिका दायर की।
- तमिलनाडु में भारी बारिश से घर ढहे 17 लोगों की मौत हुई।

■ 3 दिसम्बर

- राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव 16वीं बार बने।
- चेन्नई के इंजीनियर षण्मुगम् सुब्रमणियम ने चंद्रयान के विक्रम लेण्डर को खोजा उसका मलबा मिला नासा ने बधाई दी।
- जापानी एक कम्पनी ने सिगोट छोड़ने वाले को 6 दिन की छुट्टी देने का प्रस्ताव दिया।

■ 4 दिसम्बर

- खार्तूम (सूडान) सूडान में एक सिरेमिक कारखाने में गैस टैंकर फटने से 18 भारतीय सहित 23 लोगों की मौत हुई 130 लोग घायल हुये।
- पूर्व वित्तमंत्री पी चिदम्बर को 106 दिन बाद सुप्रीम कोर्ट से सर्शत जमानत मिली।
- नारायणपुर (छ.ग.) आइ टी बी पी के जवान मसुदुल रहमान ने छुट्टी नहीं मिलने से नाराज जवान ने साथियों पर फायरिंग कर दी 6 जवानों की मौत हुई।

■ 5 दिसम्बर

- कोलकाता : पश्चिम बंगाल की विधानसभा राज्यसभा भवन में ताला पड़ा।
- सरकार ने 220 से अधिक भ्रष्ट कर्मियों को समय से पहले रिटायरमेंट दिया।
- सुप्रीम कोर्ट ने कहा शबरी माल में महिला प्रवेश का फैसला अंतिम नहीं।

■ 6 दिसम्बर

- हैदराबाद : 27 नवम्बर को महिला डॉक्टर दिशा के साथ दुष्कर्म एवं निमर्म हत्या के चारों आरोपियों का पुलिस ने एन्काउन्टर किया सब हैरान हलाकान।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा पोक्सो एक्ट में दया याचिका का प्रावधान नहीं होना चाहिये।

■ 7 दिसम्बर

- हिंदी के प्रसिद्ध लेखक स्वयं प्रकाश का निधन हुआ।
- हांगकांग की चीन के समर्थकों ने रैली आयोजित की हजारों लोग शामिल हुये अमेरिकी झंडे जलाये।
- बगदाद: तहरीर चौक पर बंदूक धारियों ने फायरिंग की 3 पुलिस अधिकारियों सहित 25 लोगों की मौत हुई।

■ 8 दिसम्बर

- दिल्ली : अनाज मंडी इलाके में एक फैक्ट्री में आग लगने पर 43 लोगों की मौत हुई।
- स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर 28 दिनों अस्पताल से लौटीं।

■ 9 दिसम्बर

- नागरिकता संशोधन विधेयक गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में पेश किया एवं 293 पक्ष में मत पड़े।
- कर्नाटक में भाजपा ने 15 में से 12 विधानसभा सीटें जीती।
- फिनलैंड की 34 वर्षीय सना मारिन प्रधानमंत्री चुनी गई।

■ 10 दिसम्बर

- कश्मीर और लद्दाख में घने कुहरे के कारण दृश्यता 100 मी. रही सभी उड़ानें रद्द हुई।
- हिन्दी वि.वि. के प्रो. डा. फिरोजखान ने संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान का पद छोड़ दिया। ए.वी.पी. उनका विरोध कर रही थी।
- गुवाहाटी : नागरिकता संशोधन बिल का 10 साल के इतिहास में पहली बार प्रभावशील विरोध हुआ।

■ 11 दिसम्बर

- नागरिकता संशोधन विधेयक राज्य सभा में 125 पक्ष में तथा 105 विपक्ष में मत पड़े विधेयक पारित हुआ।
- नानावटी- मेहता आयोग ने गुजरात दंगे मामले में नरेन्द्र मोदी एवं अमित शाह सहित 3 मंत्रियों को क्लीन चिट दी।
- पाकिस्तान की एक अदालत ने हाफिज सईद पर आतंकी फंडिंग का आरोप तय किया।

■ 12 दिसम्बर

- नागरिकता संशोधन बिल के विरोध में असम में विसम हालात बनी लोगों ने कर्फ्यू

तोड़ा एक की मौत हुई।

- इजरायल में एक साल के अंदर तीसरी बार संसद भंग हुआ।

■ 13 दिसम्बर

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री की पार्टी बोरिस जॉनसन ने 650 में से 363 सीटें जीती।
- काँग्रेस पूर्व अध्यक्ष राहुल गाँधी के द्वारा रेप इन इंडिया कहने पर संसद में हंगामा हुआ। भाजपा माफी मांगने पर अड़ी।
- भारत की वित्तमंत्री निर्मला सीतामरण को 100 ताकतवर महिलाओं में फोर्ब्स पत्रिका के सर्वेक्षण में 34वाँ स्थान मिला।

■ 14 दिसम्बर

- कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला की हिरासत 3 माह तक बढ़ी।
- जयपुर : पेंथर शहर में 5 किमी. अंदर घुसा 21 घंटे तक दहशत बनी रही।
- सूडान के पूर्व राष्ट्रपति उमर अलशीर को कोर्ट ने भ्रष्टाचार मामले में दो साल की सजा सुनवाई।

■ 15 दिसम्बर

- फिल्मी अभिनेत्री गीता काक का निधन हुआ वेशोले, और त्रिशूल फिल्म में काम कर चुका।
- लेबनान में 40 दिन बाद फिर शुरु हुआ सरकार विरोधी प्रदर्शन।
- संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक रिपोर्ट में कहा कि पाकिस्तान में हिन्दू और इसाई सबसे ज्यादा असुरक्षित है।

■ 16 दिसम्बर

- नई दिल्ली : नाबालिग से दुष्कर्म मामले में विधायक कुलदीप सेंगर को तीस हजारी अदालत ने दोषी करार किया।
- बांग्लादेश ने 49 वां विजय दिवस मनाया समारोह भारती सेना का बैंड भी शामिल हुआ।

- अमेरिका ने उत्तरी कोरिया से बातचीत की पेशकश की।

■ 17 दिसम्बर

- पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति एवं सेना प्रमुख परवेज मुशरफ को देश द्रौह मामले में एक विशेष अदालत ने मौत ए सजा सुनाई।

- नावालिंग दुष्कर्म मामले में उन्नाव के विधायक कुलदीप सेंगर को तीस हजारी अदालत 20 वर्ष की सजा सुनाई।

- नागरिकता संशोधन विधेयक विरोध प्रदर्शन मामले में सुप्रीम कोर्ट आदेश देने से इंकार किया।

■ 18 दिसम्बर

- जयपुर : सीरियल बम विस्फोट 2008 मालमे मोहम्मद सखर आजमी सहित 5 लोग दोषी सिद्ध हुये। बम धमाके में 71 लोग मारे गये थे।

- उड़ीसा मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने कैब मामले में शांति बनाये रखने की अपील की।

- निर्भया मामले के दोषी मृत्युदंड सजायाफ्त अक्षय कुमार सिंह की सभी याचिकायें खारिज कर दी।

■ 19 दिसम्बर

- अमेरिका सीनेट संसद ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के विरुद्ध अहाभियोग का प्रस्ताव पारित किया।

- पाक कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि मुशरफ यदि फाँसी से पहले मर जाये तो उनके शव को 3 दिन तक चौक में लटकायें।

- बालासोर : पिनाक गाइडेड रॉकेट प्रणाली का सफल परीक्षण हुआ।

■ 20 दिसम्बर

- नागरिकता संशोधन विधेयक के विरोध 12 राज्यों में प्रदर्शन हुआ ममता बनर्जी ने 5वीं

रैली की।

- आंध्रप्रदेश की पुलिस ने पाक के लिये जासूसी करने वाले नौ सेना के सात कर्मी को गिरफ्तार किये।

- भारतीय विदेशमंत्री जयशंकर से अमेरिका के राष्ट्र पति डोनाल्ड ट्रम्प प्रोटोकॉल तोड़कर मिले।

■ 21 दिसम्बर

- अमेरिका में चीन और पाक को धार्मिक निगरानी सूची में एक बार फिर रखा।

- अयोध्या श्रीराम जन्म भूमि मंदिर ट्रस्ट पर केबिनेट की मंजूरी हुई।

- नागरिक संशोधन विधेयक के विरोध में राजद ने बिहार बन्द करने आह्वान किया, जिसमें समर्थकों ने सड़कों पर जाम लगाया ट्रेनें रोकी वाहना को तोड़फोड़ किया।

■ 22 दिसम्बर

- तीसरी नई शिक्षा नीति को केबिनेट ने तैयार किया जिसके अनुसार कॉलेजों को युनवर्सिटी से मान्यता जरूरी नहीं है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा यदि मुझसे नफरत है तो मेरे पुतले जलाओ पर गरीब का ओटो मत जलाओ।

नागरिकता कानून के समर्थन में नागपुर में विशाल तिरंगा रैली निकली।

■ 23 दिसम्बर

- झारखंड विधानसभा चुनाव मतगणना हुई झामुमो ने 46 सीटें जीते भाजपा ने 25 सीटें।

- नवाज शरीफ की बेटी मरियम नवाज के विदेश जाने पर पाकिस्तान सरकार ने रोक लगाई।

- रियाई : पत्रकार जमाल खशोगी हत्याकांड के 5 दोषियों को मौत की सजा सुनाई गई।

■ 24 दिसम्बर

- मारुती कम्पनी के पूर्व एम.डी जगदीश खट्टर पर 116 करोड़ रुपये घोटाले

का मामला दायर हुआ।

- रोहतांग दरे के नीचे बन रही सुरंग अटल बिहारी वाजपेयी के नाम रखने का निर्णय लिया।

- आगर-मालवा : काँग्रेस नेता दरबार सिंह काम्प्लेक्स तोड़ा गया।

■ 25 दिसम्बर

- लखनऊ: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अटल बिहारी वाजपेयी प्रतिभा का अनावरण किया।

- जम्मू-कश्मीर के उरी सेक्टर के निकट पाकिस्तानी गोलीबारी में सेना के अधिकारी शहीद हुये।

■ 26 दिसम्बर

- सेना प्रमुख जनरल विपिन रावत ने कहा भीड़ को हिंसा के लिये उकसाया जाना सही नेतृत्व नहीं।

- विरोध प्रदर्शन के मद्दे नजर उ.प्र. में हाई अलर्ट जारी हुआ।

- फिलीपीन्स में समुद्री तूफान से फनकोन से 13 लोगों की मौत हुई।

■ 27 दिसम्बर

- टीवी सीरियल कलाकार कुशल पंजाबी ने घर में खुदकुशी की वे 37 वर्ष के थे।

- जम्मू : भारत ने एल ओ सी पर पलटवार किया पाकिस्तान के 4 सैनिक ढेर हुये।

- कजाकिस्तान के अल्माती एयरपोर्ट के पास एक यात्री विमान उड़ान भरने बाद एक इमारत से टकराया 12 लोगों की मौत हुई 66 घायल हुई।

■ 28 दिसम्बर

- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने रोहिंग्या मुसलमानों के समर्थन में आये 134 देशों ने

प्रस्ताव पारित किया उनके उपर अत्याचार एवं मानवाधिकार उल्लंघन की कड़ी निंदा की।

- सोमालिया की राजधानी मोगादिशू भीषण बम धमाके में 10 लोगों की मौत हुई।

- फिल्मी सबसे बौने कलाकार नत्थू दादा निधन हुआ वे 70 वर्ष के थे।

■ 29 दिसम्बर

- बसपा सुप्रीमों मायावती ने म.प्र. विधायक श्रीमति रमाबाई को नागरिक संशोधन विधेयक का समर्थन करने से उन्हें पार्टी से निलम्बित किया।

- कर्नाटक के उडुपी के पेजावर मठ के प्रमुख विश्वेश तीर्थ स्वामी का निधन हुआ वे 88 वर्ष के थे 7 वर्ष की उम्र में सन्यासी बने।

- झारखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ हेमंत सोरेन ने ली। वे झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता है।

■ 30 दिसम्बर

- मुम्बई : महाराष्ट्र में उद्धव सरकार के मंत्री मंडल का विस्तार 34 दिन बाद अजित पवार फिर उपमुख्यमंत्री बने।

- सेना प्रमुख विपिन रावत को देश का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ नियुक्त किया गया।

- पी.एम. परिसर (आवास) में आग लगी हडकंप मची।

■ 31 दिसम्बर

- केन्द्र सरकार के स्वच्छता सर्वेक्षण में इंदौर शहर लगातार 4थी बार प्रथम रहा।

- जनरल मनोज मुकुंद नखाने ने 28 वें थलसेना अध्यक्ष पद का कार्यभार सम्हाला।

- कोटा : आठ पाकिस्तानी शरणार्थियों को नागरिकता दी गई।



दिशा बोध



मेघ-महिमा

1. समय पर न चूकने वाली मेघ वर्षा से ही धरती अपने को धारण किये हुए है, और इसीलिए लोग उसे 'अमृत' कहते हैं।
2. जितने भी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ हैं, वे सब वर्षा के द्वारा ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं; और जल स्वयं ही भोजन का एक मुख्य अंग है।
3. यदि पानी न बरसे तो सारी पृथ्वी पर अकाल का प्रकोप छा जायें, भले ही वह चारों ओर समुद्र से घिरी हुई है।
4. यदि स्वर्ग के झरने (मेघवर्षा) सूख जावें, तो किसान लोग हल जोतना ही छोड़ देंगे।
5. वर्षा ही नष्ट करती है और फिर वह वर्षा ही है, जो नष्ट हुई वस्तुओं को फिर से हरा-भरा कर देती है।
6. यदि आकाश से पानी की बौछारें आना बन्द हो जाएँ, तो घास तक का उगना बन्द हो जाएगा।
7. स्वयं शक्तिशाली समुद्र में ही कुत्सित वीभत्सता का दारुण प्रकोप हो उठे, यदि आकाश उसके जल को पान करना और फिर उसे वापिस देना अस्वीकार कर दे।
8. यदि स्वर्ग (मेघों) का जल सुख जायें, तो पृथ्वी पर न धार्मिक आयोजन होंगे और न भोज ही दिये जाएँगे।
9. यदि ऊपर से जल धारायें आना बन्द हो जाएँ; तो फिर इस पृथ्वी पर न कहीं दान रहे, न कहीं तप।
10. पानी के बिना संसार में कोई काम नहीं चल सकता, इसलिए सदाचार भी अन्ततः वर्षा पर ही आश्रित है।
11. जल ही जीवन है। इसे बचायें।

इसे भी जानिये

कमाल की मौली

- * 31 मई 2019 तक 23 विदेशी आतंकी सहित 101 आतंकी इस साल 2019 में मारे गये हैं। 2015 में 108 आतंकी 2016 में 150 एवं 2017 में 213 तथा 2018 में 250 आतंकी विभिन्न मुठभेड़ों में मारे गये।
- * कु. मौली जैन संदेश जैन ओम हार्डवेयर गंजबासौदा ने क्लेट (आल इण्डिया लॉइन्ट्रस्ट) में सम्पूर्ण भरत में 5वाँ स्थान बनाया।
- * कोलकाता की डॉली जैन ने साड़ी बांधन का करोबार चलाया उनके ग्राहकों में बॉलीबुड अभिनेत्री भी है उनकी टीम में 25 से ज्यादा लोग है।
- * असम के गुवाहाटी में कामाख्यादेवी के मंदिर अंबुवाची मेला लगा जिसमें 25 लाख लोग एकत्रित हुये इसमें 300 सी.सी.टी.वी कैमरे और 400 सफाई कर्मों लगे राज्य सरकार ने मेला क्षेत्र को तम्बाकू मुक्त घोषित किया।
- * अलीगढ़ कचौरी विक्रेता मुकेश कुमार का सलाना टर्न ओवर 60 लाख रुपये वह प्रतिदिन 5500 रुपये की ब्रिकी करता है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान - ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोन: 0731-4003506 मो.: 8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका

✽ ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर ✽

हमारा भारत देश धार्मिक और संस्कृति प्रधान देश है। भारतीय संस्कृति की नैतिकता का आदर्श चरित्रवान नारी के विभिन्न रूपों के लिए संरक्षित है। हमारा देश ही एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ नारी को अनेक रूपों में पूजा जाता है। ऋग्वेद में स्त्री को ग्रह कहा जाता है। हमारे देश में 3 बल माने गए हैं- धन बल, बुद्धि बल और बाहुबल। इन तीनों की अधिष्ठात्री देवियाँ लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा एवं काली नारी ही हैं। नारी को शक्ति स्वरूप के रूप में वैदिक ग्रंथों में वर्णित किया गया है। सीता, सावित्री को पतिव्रता आदर्श महिला के रूप में जानते हैं। जैन धर्म में ब्राह्मी, सुंदरी, मनोरमा, चंदनबाला, मैना सुंदरी, अंजना सती भी अविस्मरणीय हैं। आधुनिक इतिहास में पद्मिनी, दुर्गावती, पद्माधाय, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना स्वरूप भी स्वर्ण पन्नों पर अंकित हैं। कहा भी है- **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता**। नारी को ममता, दया, करुणा, श्रद्धा की मूर्ति कर्तव्य परायणता, शीलवती, वात्सल्यमयी, कल्याणमयी आदि विशेषणों से विभूषित किया है। धर्म का उद्योत करने वाले तीर्थंकर भी इसी नारी की कोख से जन्म लेते हैं। नीतिकारों ने कहा है-

जननी परमार्थाया जननी परमागतिः जननी देवता साक्षात् जननी परमोगुरुः।

या कर्त्ती परमात्री च जननी जीवनस्य नः नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥
सुभाषचंद्र बोस ने कहा था- **A good mother is better than hundred teacher.**
मनु स्मृति में कहा है-

उपाध्यायानांशाचार्य आचार्यण शतयित्व।

सहस्रत्रतु पितु न माता गौर वेणातीश्यते॥

अर्थात् 10 उपाध्याय से उत्कृष्ट एक आचार्य, 100 आचार्य से उत्कृष्ट 1 पिता है, 100 पिता से उत्कृष्ट एक माता है। अतः 1 लाख उपाध्याय जो एक बालक पर संस्कार डालते हैं, उतने संस्कार एक पिता डाल सकता है तथा 10 लाख उपाध्यायों के बराबर एक बालक पर 1 माता संस्कार डालती है।

नारी विशिष्ट मूल्यवान निधि है, वह गृहस्थ जीवन की निर्माता है। वह केवल पुरुष के विलास की सामग्री नहीं है और न ही कलुषित काम का यंत्र है। वह तो पवित्रता का आवास है। तभी तीर्थंकरों, महापुरुषों, अवतारों की जननी बनी। नारी का शुद्ध जीवन ज्योतिष्मान शुद्ध हीरेके समान है। वह मूर्तिमान, श्रद्धा, त्याग, तपस्या, लज्जा, विनय, ममता, सरलता, सेवा-परायणता की मूर्ति है। उसका गौरव शील, संयम और त्याग में निहित है।

Every Women is a volume if she knows how to read it.

अर्थात् प्रत्येक नारी एक श्रेष्ठ ग्रंथ है, यदि उसे भली प्रकार से पढ़ना जाने तो। जिस प्रकार ग्रंथ का प्रत्येक शब्द, सम्मान-आस्था एवं अध्ययन का विषय होता है, वैसे ही नारी का प्रत्येक भाव-विचार, गुण, आस्था एवं सम्मान का विषय होता है। **जिस प्रकार शरीर में नाड़ी**

का महत्व है, उसी प्रकार गृहस्थ धर्म में नारी का महत्व है। नारी घर की शोभा है, क्योंकि वह घर रूपी उपवन को हरा-भरा बनाए रखने में सदैव तत्पर रहती है। किसी दार्शनिक ने कहा है- “पति के लिए, संतान के लिए ममता, समाज के लिए चरित्र, विश्व के लिए दया, करुणा का भाव संजोने वाली प्रवृत्ति का नाम ही नारी है।”

नारी वह धुरी है, जिसके चारों ओर पूरे परिवार की गाड़ी सम्यक् रूप से चल सकती है। धुरी मजबूत न हो तो गाड़ी रूपी परिवार के टूटने की संभावना रहती है। कहा है-

कार्येषु मंत्री वचनेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा।

धर्मानुकूला क्षमया धरित्री, षड्भिगुणैः स्त्रीकुल तारिणी स्यात्॥

अर्थात् नारी पति के हर कार्य में सलाह देने से मंत्री, बोलने में नम्र मृदुभाषी होने से दासी, भोजन कराते समय माता, भोगों में रंभा, पति के साथ धर्मकार्य के अनुकूल चलती है तथा नारी पृथ्वी के समान क्षमाशील होती है। ये गुण वाली नारी ही अपने कुल का उद्धार करती है।

परिवार संरक्षिका के रूप में नारी का दैवीय रूप श्रद्धास्पद रहता है। वास्तव में नारी महान है। माता-पिता की सेवा और संतति संवर्द्धन करने वाली नारी घर को एक सूत्र में बाँधती है। नीतिकार कहते हैं-

सेवा जननी जनक की, तीरथ है घर माँह।

क्यों जग में खोजत फिरे, कल्पतरु की छाँह॥

वर्तमान में नारी जागरूकता - सदियों से नारी प्रतिबंधों में जकड़ी रही थी, कौमार्यावस्था में पिता, यौवनावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र अधीन रहने वाली नारी, घर-आँगन की सीमा में कैद रहने वाली नारी, दहलीज के अंतर छटपटाती और कराहती नारी आज के आधुनिक युग में चहार दीवारी से बाहर दहलीज लांघकर, पर्दा त्यागकर, पुरुष के समान दपतरों में कर्मचारी, प्रबंधक, शिक्षक, समाज सेविका, अभिनेत्री, रिक्शा एवं ट्रक चालक, पहलवान, पुलिस विभाग, सैन्य विभाग, व्यापार, टेक्नीकल विभाग आदि सभी क्षेत्रों में आसमान की ऊँचाइयाँ छू रही हैं। पर्वत की ऊँची चोटियाँ हो या सागर तल नारी नेहर जगह अपना अस्तित्व बनाया है। यहाँ तक कि राजनीति, एयरलाइंस, अंतरिक्ष में नारी का प्रवेश उसकी साहसिकता का अनोखा पृष्ठ है। इस प्रकार से नारी उत्थान और नारी प्रगति ने जो नव परिवेश संचरित किया वह सराहनीय है।

महात्मा गाँधीजी कहते थे कि- “यदि मेरे स्वतंत्रता आंदोलन में माताएँ न आती तो मैं वर्षों में भी देश स्वतंत्र नहीं करा पाता।” भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गाँधी, राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिलजी ने भी देश का संचालन कुशलता पूर्वक किया है।

आज की नारी आर्थिक दृष्टि से भी स्वतंत्र है तथा सामाजिक दृष्टि से भी स्वतंत्र है। आज औरत अबला नहीं सबला है। वह स्वनिर्भर है। काम काजी महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ संयुक्त परिवार के बंधनों से मुक्ति मिल गई है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी : आज नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। पश्चिमी

उत्तरप्रदेश में हरियाणा के पास के जिलों में शराब के विरुद्ध महिलाओं ने बीड़ा उठाया और कई दर्जनों शराब के ठेकों पर ताले डलवा दिए, यह नारी सशक्तिकरण का परिणाम है।

वर्तमान में कई राज्यों में बढ़ती हुई हिंसा के कारण महिलाओं के लिए महिला पुलिस थानों की व्यवस्था की गई है। जयपुर, तमिलनाडु, दिल्ली, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में स्थापना हुई है, इन सबकी प्रभारी अधिकारी महिलाएँ ही हैं। **Stock market, software Industry** में महिलाओं की 76.4 प्रतिशत भागीदारी है।

वर्तमान में जीवन की प्रथम पाठशाला में नारी का प्रवेश बड़ी सोच-समझकर होता है। विज्ञान का 'एग्रियोसिंटेसिस' को लोगों ने अभिशाप के रूप में ग्रहण किया है। माता-पिता लिंग परीक्षण करके संतान के रूप में बेटी है ऐसा पता लगते ही उस बेटी की भ्रूणावस्था में ही मृत्यु निश्चित है। सर्वेक्षण में आँकड़े बताते हैं कि प्रत्येक वर्ष 2,10,000 बेटियाँ पैदा होने से पहले ही मार दी जाती हैं। इस नारी हिंसा का परिणाम यह है कि भारत में स्त्री-पुरुषों का अनुपात निरंतर घट रहा है। वर्तमान में 1000 पुरुष पर 933 महिलाएँ ही हैं।

वर्तमान में नारी दहेज लाने की साधन बना दी गई है। भारत में हर 77वें मिनट में दहेज को लेकर मौत होती है। प्रत्येक 24 घंटे में भारत में 33 महिलाएँ जिंदा जला दी जाती हैं या मार दी जाती हैं। विडम्बना तो यह है कि महिलाओं के विरुद्ध हिंसा में सिर्फ पुरुष ही नहीं अपितु महिलाएँ भी साझेदार हैं। वास्तव में महिलाएँ वर्तमान में कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं, न परिवार में न ही समाज में। हर 3 मिनट में महिलाओं के खिलाफ एक आपराधिक वारदात होती है। **राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो** की रिपोर्ट के अनुसार **अमेरिका में** प्रति 9 सेकंड में बलात्कार की शिकार होती है। भारत में प्रत्येक महीने 937 महिलाएँ बलात्कार की शिकार होती हैं।

वर्तमान में महिलाओं की दयनीय स्थिति : सर्वेक्षण के अनुसार विश्व की करीब एक मिलियन अर्थात् 1 खरब जनसंख्या में से 68 प्रतिशत महिलाएँ गरीबी में जी रही हैं।

1. विश्व में संपूर्ण कार्य का लगभग 60 प्रतिशत भाग महिलाएँ ही करती हैं, फिर भी महिलाओं के हिस्से में एक प्रतिशत जमीन तथा विश्व की आमदनी का 10 प्रतिशत भाग ही कमा पाती हैं।
2. विश्व में प्रायः हर देश में महिलाओं का औसतन वेतन, पुरुषों की तुलना में 30 से 40 प्रतिशत कम है।
3. विश्व के 130 मिलियन (अर्थात् 130 लाख) बच्चों में अधिकतम उन लड़कियों की संख्या है, जिन्होंने प्रायमरी विद्यालय में भी प्रवेश नहीं लिया है अर्थात् अशिक्षित हैं।
4. विश्व में हर वर्ष 65 लाख स्त्रियाँ गर्भवती होने पर जटिलताओं, अज्ञानता व सही देख-रेख न हो नेसे तथा असुरक्षित गर्भपात से 1 लाख से अधिक स्त्रियाँ मर जाती हैं।
5. विकसित देशों में प्रति लाख प्रसव पर 16-17 की मातृ मृत्युदर की तुलना में भारत में 540 मातृ मृत्युदर है।
6. विश्व में शरणार्थियों की संख्या लगभग 2-3 मिलियन (2-3 लाख) है, उनमें 80 प्रतिशत महिलाएँ एवं उनके बच्चे हैं, जो अशिक्षा, बीमारी, गरीबी तथा शारीरिक अपंगता के शिकार हैं।

वर्तमान में पनपती नारी स्वच्छंदता : नारी प्रगति, नारी आधुनिकता, नारी स्वतंत्रता ने एक दूसरा आयाम भी धारण किया है- वह है स्वच्छंदता का। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय नारी पर तीव्र गति से पड़ रहा है। पुरुषों के समान कपड़े पहनकर, बाल कटवाकर, धूमपान करना, ड्रिंक करना, अर्द्धनग्न काया में देर रात तक क्लबों/बियरबारों में डांस करना, वैश्यावृत्ति करना, विज्ञापन एवं पोस्टरों में नारी देह का व्यापार बच्चों के लालन-पालन से विमुख होना, तलाक व पुनर्विवाह को सहजता से लेना आदि। क्या यह भी नारी प्रगतिशीलता है? पाश्चात्य सभ्यता की होड़ में नारी शील/लज्जा, मर्यादा, सांस्कारिक तथा चारित्रिक गुण, धर्मशीलता को तजना क्या वास्तविक नारी स्वतंत्रता/नारी प्रगति, नारी सशक्तिकरण है?

नारी स्वयं ऐसी पाश्चात्य संस्कृति की ओर तेजी से बढ़ रही है, जो नारी की वर्तमान स्थिति को दुःखद व दयनीय बना रही है। संस्कृति, आदर्शों, मूल्यगत मान्यताओं को नकारकर आधुनिक नारी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना न आधुनिकीकरण है न तो नारी प्रगति है, न ही नारी सशक्तिकरण है, सिर्फ नारी स्वच्छंदता तथा नारी पतन है।

आज समाज को ऐसी नारी शक्ति की आवश्यकता है, जो समाज को भ्रष्ट आतताइयों से मुक्त कर दें। नारी की प्रेरणा पुरुष के उत्साह और कर्तव्य परायणता को कई गुना बढ़ा दे। आज किसी समाज/राष्ट्र की उन्नति/अवनति नारी शक्ति एवं प्रेम शक्ति पर निर्भर होती है। नारी जब स्वयं ही कर्तव्य विमुख हो खिलौना बन जाती है, कठपुतली बन मनोरंजन का साधन बनकर रह जाती है, तो राष्ट्र का पतन अवश्यंभावी है। कहा है-

नारी की महिमा प्रत्येक क्षेत्र में नर से बढ़कर पाई है।

नारी अनमोल रत्न है, उसकी महिमा देवों ने गाई है।

नारी, नारी है वह आरी नहीं है। वह बचाती है, मारती नहीं है। नारी के बिना संसार की कल्पना भी व्यर्थ है, क्योंकि नारी ही नर और नारी का सृजन करती है। वह स्वयं में नहीं जीती, बल्कि स्वयं में संसार को जीती है। नारी संसार निर्मात्री है, संस्कृति का संरक्षण करती है। चीन में एक कहावत है- **“आधा आकाश महिलाओं के कंधे पर है।”** अर्थात् विश्व निर्माण नारी की महत्ता को इंगित करता है।

अतः संपूर्ण नारी जगत का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह विरासत में प्राप्त हुए संस्कारों की पाश्चात्य सभ्यता की आंधी में न उड़ने दे और भौतिकता के प्रवाह में अपने कदम न डिगने दें। नीतिकारों ने कहा है-

सतीत्वेन, महत्वेन, वृत्तेन विनयेन च।

विवेकेन स्त्रियः कश्चित् भूषयन्ति धरातलम्॥

अर्थात्- नारी अपने सतीत्व से, अपने महत्व से, चरित्र से, विनय से, विवेक से इस पृथ्वी के लिए भूषण स्वरूप है।

अतः वर्तमान में नारी-नारी की गौरव गरिमा, आदर्शवादिता, श्रेष्ठता, महानता को जाने माने एवं पहचानने एवं श्रेष्ठ आदर्श सत्य पर कदम रखते हुए अपनी उन्नति प्रगति का तथा आत्म कल्याण का पथ प्रशस्त करे।

आओ सीखें : जैन न्याय

अनुमान प्रमाण की आवश्यकता

प्रत्येक भारतीय दर्शन अनुमान प्रमाण को अवश्य मानता है किन्तु एक मात्र चार्वाक दर्शन ऐसा है जो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता को नकारता है। उस दर्शन के कुछ तर्क हैं जो अनुमान प्रमाण को अस्वीकार करने का समर्थन करते हैं वे तर्क निम्न हैं -

1. अनुमान से अर्थ का निश्चय नहीं होता है।

2. व्याप्ति ग्रहण होने के बाद अनुमान की प्रवृत्ति होती है, व्याप्ति का ग्रहण प्रत्यक्ष से तो संभव नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्ष तो निकटवर्ती पदार्थ ही ग्रहण करता है। अतः वह समस्त पदार्थों को लेकर व्याप्ति ग्रहण करने में असमर्थ है।

3. अनुमान से व्याप्ति का ग्रहण संभव नहीं है क्योंकि अनुमान व्याप्ति ग्रहण पूर्वक होता है। अतः अनुमान से व्याप्ति ग्रहण मानने पर अनवस्था दोष एवं इतरेतराश्रय दोष आते हैं।

4. अन्य कोई प्रमाण व्यक्ति का ग्राहक नहीं है, तब अनुमान प्रमाण कैसे संभव होगा ?

निष्कर्ष - अतः एक मात्र प्रत्यक्ष ही प्रमाण होता है अनुमान नहीं।

चार्वाक दर्शन के विद्वानों द्वारा अनुमान के अप्रमाण सिद्ध करने वाले तर्कों को जैनाचार्यों ने मूलतः ही अस्वीकार करने योग्य कहते हुये अपने ठोस तर्क कुछ निम्न प्रकार से दिये-

1. चार्वाकों का उक्त कथन विचारपूर्ण नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण की तरह अनुमान प्रमाण भी अविसंवादक होता है। अनुमान के द्वारा जाने गये विषय में विसंवाद का अभाव होता है।

2. अनुमान को गौण क्यों माना जाये? (अ) उसका विषय प्रत्यक्ष पूर्वक होता है इसलिये अथवा (ब) उसका विषय गौण होता है इसलिये अविकल्प ठीक होता है क्योंकि कोई प्रत्यक्ष भी अनुमान पूर्वक होते हैं। अतः वे प्रत्यक्ष भी गौण कहलायेंगे क्योंकि दूर से अनुमान से अग्नि को जानकर जब व्यक्ति अग्नि के पास जाता है तो प्रत्यक्ष से अग्नि को जानता है। (ब) का पक्ष भी ठीक नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष की तरह अनुमान का विषय भी वास्तविक सामान्य-विशेषात्मक है।

3. जैन, बौद्धों की तरह अनुमान का विषय कल्पित सामान्य नहीं मानते हैं।

4. हम व्याप्ति का ग्रहण तर्क प्रमाण से मानते हैं।

5. तर्क प्रमाण के बिना मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण की सिद्धि चार्वाक भी नहीं कर सकते हैं।

6. अनुमान प्रमाण के बिना अतिन्द्रिय परलोक आत्मा स्वर्ग आदि का अभाव कैसे सिद्ध करेंगे?

7. परलोक आदि का निषेध करने से प्रत्यक्ष भिन्न प्रमाणान्तर का अस्तित्व सिद्ध होता है

अतः अनुमान प्रमाण की आवश्यकता सिद्ध होती है।

मानवता कल्याणकारी : तीर्थंकर ऋष देव की शिक्षाएँ

* डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर *

तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षाएँ मानवता के कल्याण के लिये हैं उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं।

तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिये पर्याप्त हैं कि ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिये इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिये अनिवार्य होती हैं।

प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी को तीर्थंकर ऋषभदेव जयंती जैन समुदाय में हर्ष, उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनायी जाती है। इस दिन जैनधर्म के आदि प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था। चौदहवें कुलकर नाभिराय राजा और उनकी पत्नी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन, मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में हुआ था। इन्द्रों ने बालक का सुमेरु पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके ऋषभ यह नाम रखा। जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखलों में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद् भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैन धर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है।

जैन परंपरा के अनुसार वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में ऋषभदेव (आदिनाथ) प्रथम तीर्थंकर हैं, जिन्होंने मानव जाति को पुरुषार्थ का उपदेश दिया। अपने जीवन निर्माण के लिये परिवार राष्ट्र के लिये उन्होंने कर्म का उपदेश दिया। मानव जाति से उन्होंने कहा कि- तुम पुरुषार्थ के द्वारा अपनी समस्याओं को हल कर सकते हो, इस दृष्टि से विभिन्न कलाओं का निरूपण किया। साम्राज्य का भी त्याग किया, तप त्याग के द्वारा कैवल्य प्राप्त किया। वीतराग, निराकार हो गये। धर्म के उपदेश द्वारा समाज का सृजन किया। परमात्मा के रूप में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, सर्वे भवन्तु सुखिनः को साकार करते रहे।

यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड अजनाभवर्ष भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय के नाम से प्रसिद्ध था। ये नाभि और कोई नहीं अपितु स्वायुंभव मनु के पुत्र प्रियव्रत के पुत्र नाभि थे। नाभिराय

का एक नाम अजनाभ भी था।

जैनधर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिये उज्ज्वल प्रकाश हैं। उन्होंने कर्मों पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिये हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं।

भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है। तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं।

सामाजिक संरचना में उन्होंने प्रजाजनों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुये उनको अपने अपने कर्तव्य, अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया। सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया।

प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिये आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुये स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है -

1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि-खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4. विद्या-पढ़ना लिखना, 5. वाणिज्य-व्यापार, 6. शिल्प- सभी प्रकार के कलाकारी कार्य।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग में अद्भूत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया। कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब और नव बसंत खिल उठा। जनता ने अपना स्वामी उन्हें माना और धीरे-धीरे बदलते हुये समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ।

ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया। लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया। ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकणतीय ज्ञान से पुरुस्कृत किया। आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरण शास्त्र तथा गणितीय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है। आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बड़ाओ का अभियान चला

रही है, ऐसे में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उनके द्वारा दी गयी बेटीयों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगे।

प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, पत्रन, द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुर्पुद किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया।

तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं। उनके पुत्र भरत और बाहुबली का कथन इस तथ्य का प्रमाण है कि संसारी व्यक्ति कितना रागी-द्वेषी रहता है, जो अपने सहोदर के भी अधिकार को स्वीकार नहीं कर पाता। दोनों भाईयों के बीच हुआ युद्ध हर परिवार के युद्ध का प्रतिबिम्ब है। बाहुबली का स्वाभिमान हर व्यक्ति के स्वाभिमान का दिग्दर्शक है। निरासक्त व्यक्ति की यह आध्यात्मिक दृष्टि है।

तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जीवन शैली, दर्शन एवं आदर्शों का प्रचार-प्रसार भारतीय युवा पीढ़ी के लिये और भी अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से इनमें भौतिकवादी विचारों एवं आदर्शों को आगे ले जाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है जिसे पुरजोर प्रयास से साथ रोकना अनिवार्य है। पाश्चात्य सभ्यता का यह मार्ग निःसंदेह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से काफी भिन्न है और संभवतः हमारे मानवीय मूल्यों के विपरीत भी है।

आज मानवता के सम्मुख भौतिकवादी चुनौतियों के कारण नान प्रकार के सामाजिक एवं मानसिक तनाव तथा संकट व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भूमण्डल स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। भगवान ऋषभदेव द्वारा बताई गई जीवन शैली की हमारी सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में काफी प्रासंगिकता एवं महत्ता है। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियां मिलती हैं जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।

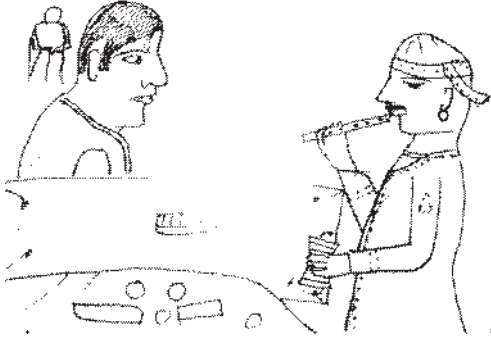
भगवान ऋषभदेव ने नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदलने का कार्य किया है। समस्त स्त्री जाति को भोग्या समझने वाले समाज को विवाह बंधन का ज्ञान देकर जनसंख्या नियोजन का सूत्रपात किया। विवाह के पवित्र बंधन को न मानने के कारण आज विश्व में कई भाग एड्स नाम भयानक बीमारी की चपेट में आये हैं। यदि आज का समाज संयम, ब्रह्मचर्य सिद्धांतों का पालन करता है तो इस महामारी से सुरक्षा प्राप्त कर सकता है। पर्यावरण को विनाश से बचाया जा सकता है।

तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत तथा शिक्षाएं आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और उपयोगी हैं तथा भविष्य के विश्व संस्कृति के लिये आधार हैं।

कहानी

बत्तीस फिट का साँप

घड़ी के तीन बज चुके थे सूरज आसमान पर तमतमा रहा था चारों तरफ लूलपट के कारण लोग छाया ढूँढ़ रहे थे कई लोग तो होटलों में बैठकर



हूँ जब खेल खत्म हो जायेगा तब आप कहेंगे कि मैंने ऐसा खेल कभी नहीं देखा मुझे काली महाकाली की सिद्धि है। **काली महाकाली** तेरा

चाय पीने के बहाने छाया की व्यवस्था कर रहे थे आइस्क्रीम वालों की घण्टियाँ और आवाजे बस स्टेण्ड को गुंज रही थी बसों के चारों तरफ आइस्क्रीम जलजीरा बेचने वाले लोग चक्कर लगा रहे थे किसी समय बरगद के झाड़ के नीचे से डमरु बजने की और बांसुरी बजने की आवाज सुनाई दी लोग धीरे-धीरे करके गोल में खड़े होते गये मदारी का खेल देखना शुरू कर दिया कुछ महिलायें भी खेल देखने को उत्सुक दिखी वे भी अपनी छतों पर खड़े होकर घूँघट की ओट से मदारी का खेल देख रही थी मदारी का खेल शुरू हुआ मदारी ने बच्चों से कहा सब बच्चे मिलकर तालियाँ बजायें मदारी की बात सुनकर सभी लोगों ने मिलकर तालियाँ बजाई मदारी ने फिर से डमरु और बांसुरी बजाना शुरू कर दिया थोड़ी देर बाद मदारी बोला कदरदानों आपने ऐसा खेल कभी नहीं देखा होगा जो मैं दिखाने जा रहा

वचन जाये न खाली आपने कभी बत्तीस फिट का साँप नहीं देखा होगा और मैं जादू से आप सबको दिखाऊँगा मुर्दा तीन फिट ऊपर उठेगा और आसमान में उड़ने लगेगा।

मदारी ने सबसे पहले एक खाली टिपारे में कबूतर बनाया बनाके सबको दिखाया कबूतर देखकर लोगों ने जोरदार तालियाँ बजा दी और मदारी भी उत्साह में आ गया उसने फिर दूसरा आयटम दिखाया हड्डी से हड्डी बजाई और कहा अब मैं मशान जगाऊँगा और खाली टिपारे में साँप बनाऊँगा और उसने एक बांस के टिपारे को खाली सबको दिखाया और फिर टिपारे को बन्द कर दिया फिर उसके ऊपर चारों तरफ हड्डी घुमाई और टिपारे को खोल दिया तो उसमें से एक फुसकारता हुआ साँप बाहर निकला सारे खड़े बैठे लोगो ने जोनदार तालियाँ बजाई फिर मदारी ने एक रूमाल उठाया रूमाल को फटकारा और कहा देखो

भाई इस रूमाल में कुछ तो नहीं है सबने कह दिया नहीं है। फिर उसने एक लड़के के हाथ में रूमाल दे दिया और कहा फूंक मारो लड़के ने फूंक मारी और मदारी ने जादू की छड़ी घुमाई और कहा इसे खोलो लड़के रूमाल खोला और झटकारा तो उसमें एक दस का रूपया निकला। मदारी ने उस लड़के से पूछा कि क्या ये तुम्हारा है। लड़के ने कहा नहीं ये मेरा नहीं है। फिर मदारी ने एक सूपा लिया और उसमें कुछ ज्वार के दाने रखे और उन ज्वार के दानों पर पानी छिड़कना शुरू कर दिया और सूपे को हिलाता रहा देखते ही देखते सूपा पूरा ज्वार की लाई से भर गया जिसे देखकर सारे दर्शक दांतों के तले अंगुली दबाने लगे कुद लोग तो कहने लगे बड़े कमाल का जादूगर है मदारी ने खूब ताली बटोरी।

अब मदारी ने जमीन पर दरी बिछाई और अपने साथ चल रहे बच्चे को कहा जमूरे इधर में आ और जनता से कहा ये मेरा एक ही बेटा है मैं अपनी हाथ पर छुरी चलाऊँगा इसकी गर्दन कट जायेगी फिर ये मुर्दा बन जायेगा। और इसे मैं जादू से आसमान में उड़ाऊँगा और इस बच्चे के लिये आप सब लोगों को दुआ करना होगी तब यह बच्चा जिंदा होगा इसके बाद आगे का खेल होगा।

मदारी ने अपने हाथ पर मुट्ठी बांधकर छुरी मारी और बच्चा तड़फने लगा ओढ़ी हुई चादर से हाथ पैर फड़फड़ाने लगे तब मदारी बोला इस बच्चे की गर्दन में अलग

कर देता हूँ और उसने चादर के भीतर ही भीतर गर्दन जैसी चीज को घुमाकर अलग करके बता दिया कई लोगों की आंखों में आंसू आ गये तब मदारी ने आवाज लगायी कि मैं इसको आसमान में ऊड़ाऊँ या जिन्दा कर दूँ तब सभी बैठे खड़े लोगो की आवाज आई इसे जिंदा कर दो तब मदारी ने आवाज लगाई हर भगवान को पहचानने वाला इंसान यही चाहेगा कि ये बच्चा जिन्दा हो जाये जो भगवान को सज़ता है वह किसी को मरते हुये नहीं देख सकता है, यह मेरा अकेला बेटा है, मेरे बुढ़ापे का सहारा है मेरे आप लोगों को खेल दिखाने को मार डाला, अब मेरा कौन है, फिर उसने एक काली माई की फोटो उठाई माई खुश हो गयी तो ये माता ही जिन्दा करेगी मेरे बस की कोई बात नहीं है। आप सब मेरी सहायता करें और माता को खुश करें, आप सब जानते हो ये माता कैसे खुश होगी आपकी श्रद्धा और भक्ति से खुश होगी आपके दान से खुश होंगी, जिसके जेब में जो कुछ भी है वह माता के ऊपर चढ़ा दे और जो पैसे होते हुये भी माता के ऊपर नहीं चढ़ायेगा वह सात कदम आगे जायेगा चक्कर खाकर गिर जायेगा मुँह से फंसूकर निकलेगा खून भी निकल सकता है, लौटकर जब मेरे पास आयेगा मैं उसका कोई सहयोग नहीं कर पाऊँगा।

यह सब कहने के बाद मदारी ने डमरू बजाते हुये फोटो सबके सामने घुमाना शुरू कर दी लोगो ने अपने-अपने जेब से पैसे

निकला कर माता के फोटो पर रखना शुरू कर दिये, जब पूरा गोला हो गया तो उसने सारे पैसे उस बालक ऊपर गिरा दिये सुरेन्द्र भी एक कोने में खड़ा था वह अपने घर से अपनी बीमार माँ की दवाई लेने निकला था सुरेन्द्र सींग किशोर उमर का था उसने अपने गांव में कभी जादू का खेल नहीं देखा था वह यह भी नहीं जानता था कि इस खेल की सच्चाई क्या है यह माया जाल है या सच। इकहरे वदन का गौरा सुरेन्द्र गोर चट्टा ठाकुर का बच्चा था नारहट की गालियों में उसकी धूम सबको आकर्षित कर लेती थी। पांचवी कक्षा पढ़ने वाला यह बालक बाहर की दुनिया पहचान नहीं पा रहा था। दुनिया में वह नहीं जानता था कि दुनिया में सब अच्छे इंसान नहीं होते हैं सब इंसान बेईमान नहीं होते हैं, झकास सफेद चोले में दरिंदे भी छुप होते हैं लम्बा तिलक लगाने वाले लोग और मीठी वाणी बोलने वाले प्रायः बेईमान निकल जाते हैं और बदमाश होते हैं कुछ तो जनता को बेवकूफ बनाने के लिये ही पैदा होते हैं पर सुरेन्द्र तो बच्चा था दिल का सच्चा था गांव का लाड़ला था क्योंकि वह छोटी उमर में ही अपने पिता की गोद को खो चुका था कभी-कभी गांव के लोग उसे बहुत लाड़ किया करते थे ठाकुर लल्लन सींग तो उसे देखते ही गाना गाने लगते हैं।

बच्चे मन के सच्चे

ये जग की आंख तारे

ये वो नन्हें फूल हैं जो

भगवान को लगते प्यारे

और सुरेन्द्र भी उनका गाना सुनकर

मस्ती करने लगता था। लल्लन सींग एक नेक इंसान थे वे गांव की विधवा परिव्रिता और वृद्ध महिलाओं की सेवा करने में रूचि रखते थे। उनकी इस सेवाभाव को लोग कुछ अलग ही नजर से देखते थे। सुरेन्द्र की माँ सरोज जब भी किसी समस्या से घिर जाती तो वह लल्लन सींग की चौखट पर दस्तक दे देती थी वैसे भी अगर लल्लन सींग को मालूम चल जायें कि सरोज कोई समस्या से घिरी हुई है कष्ट में है या आपत्ति में है तो वह सरोज के पास स्वयं चला जाते थे।

सुरेन्द्र अपने घर के पास लगे हुये पीपल के झाड़ू के नीचे मायुस सा बैठा था उसकी आंखों से आँसू भी बह रहे थे तभी उसका मित्र सुनील वहाँ आकर खड़ हो गया सुनील ने कहा सुरेन्द्र क्यों रो रहे क्या तुम्हारी मम्मी ने तुम्हें मारा है। सुरेन्द्र कुछ भी नहीं बोला और धीरे-धीरे उसकी सिसकियां बढ़ते गई तब सुनील ने फिर कहा क्या तुझे किसी ने मारा है या किसी ने कुछ कह दिया है, तब सुरेन्द्र ने सिर हिलाकर संकेत दिया नहीं तभी सुनील ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुये पूछा तो क्या सुरेन्द्र तेरा पेट दर्द कर रहा है अभी तक तू मुझे हर बात बताता रहा है पर आज क्या हो गया जो तू मुझसे अपना दर्द छुपा रहा है बता नहीं तो मैं तेरी मम्मी को बुलाकर अभी ले आता हूँ। क्या तुझे मेरा भरोसा नहीं रहा तूने आज तक मुझे अपना दोस्त माना था पर आज क्या हो गया दोस्ती में संदेह हो गया क्या सुनील कहने लगा अच्छा तू मुझे मत बता मैं तेरी मम्मी को बुला कर लाता हूँ तब सुरेन्द्र ने सुनील का

हाथ पकड़ा और उसे जाने से रोका तब सुनील ने कहा तू एक तो बता नहीं रहा है और दूसरा मम्मी को बुलाने से रोक रहा है क्या पागल हो गया है। कुछ समझ बची है कि नहीं। तब सुरेन्द्र ने कहा वैसे ही तो मम्मी बीमार हैं और तू जाकर के मम्मी से ये कहेगा कि सुरेन्द्र रो रहा है तो मम्मी की तकलीफ कितनी बढ़ जायेगी, तो फिर सुनील ने जोर से कहा तो तू रो क्यों रहा है तब सुरेन्द्र ने अपनी हाथों पर हाथ फेरते हुये आंसू पोंछकर कहा कि सुनील बात ये है कि मैं बीमार मम्मी की दवा लेने दस रुपये लेके निकला था लेकिन मैं दवा लेने के पहले एक जादू मदारी का खेल देखने लगा खेल में मदारी ने बहुत सारे करिश्में दिखाये और आखरी में अपनी बेटे की ही गईन काटी दी और फिर रोने लगा और कहने लगा कि मेरा एक बेटा है यदि ये मर गया तो इसकी मां मेरी जान खा लेगी यदि आप लोग चाहते हैं कि मेरा बेटा जिंदा हो जाये तो आप लोग माँ काली की फोटो पर जितने जो कुछ भी पैसे हो वो चढ़ा दे तो मैंने भी

दस रुपये चढ़ा दिये, अब मैं अपनी माँ की दवाई कैसे लेके जाऊँ मुसीबत तो यह है कि अभी मम्मी के सामने जाकर मैं क्या जबाब दूंगा जब वह मेरे से पूछेगी दवा कहाँ है तो मैं क्या बताऊँगा। जब सुनील ने बड़ी मासूमियत से कहा कि कह देना के मैंने एक मदारी के बेटे को जिन्दा करवाने के लिये दस रुपये का सहयोग दे दिया तब सुरेन्द्र ने कहा, नहीं रे मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है मैं मदारी के मायाजाल में फंस गया न तो उसका बेटा मरा था और नहीं उसे कुछ हुआ था ये तो मदारी का छल था आंखों में धूल झोंकता था क्योंकि उसने कहा था कि मैं मुर्दा को उड़ाऊँगा पर उसने मुर्दा उड़ाया नहीं और जनता चिल्लाती रही कि मदारी भाई तुमने कहा था हम बत्तीस फिट का सांप दिखायेंगे वह दिखाओं ना कहा है तब मदारी ने कहा यहां का खेल यहीं खत्म हुआ यदि तुम्हें बत्तीस फिट का सांप देखना है तो आगे आ जाये जहाँ भी खेल होगा वहाँ बत्तीस फिट का सांप दिखायेंगे।

क्या आप जानते हैं

नोबेल पुरस्कार 2019

साहित्य में रसायन में	आस्ट्रिया के हेडको को पोलैंड की लेखिका ओल्गा तोका चुर्क को। अमेरिका के जॉन गुड सफ को ब्रिटेन के स्टेनली विटिंगम को जापान के अकीरा योशिनो को
शांति में	इथोपिया के प्रधानमंत्री अबी अहमद को।
अर्थशास्त्र में	1 भारतीय मूल के अभिजीत बनर्जी, 2 उनकी पत्नी फ्रांसीसी मूल की एस्तेय को 3 अमेरिकी माइकल क्रेमर को

हमारे गौरव

पं. सुमेरुचन्द्र दिवाकर

जन्म :- आपका जन्म भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिवार सभा के जन्मदाता, समर्पित समाजसेवी एवं विशेषख्याति प्राप्त सिंघई श्री कुंवरसेन जी जैन के सम्पन्न घर में 8 अक्टूबर 1905 अर्थात् विजयदशमी, रविवार को सिवनी में हुआ था। आपको धार्मिक संस्कार और सेवा के गुण विरासत में ही मिल गये।

शिक्षा :- श्री सुमेरुचन्द्र जी ने अध्ययन हेतु विदेशी सत्ता द्वारा संचालित अंग्रेजी मिराज हाईस्कूल में प्रवेश लिया। सन् 1921 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में उस विद्यालय को छोड़ दिया।

हिन्दू विश्वविद्यालय से इन्टर, जबलपुर से बी.ए. तथा नागपुर विश्वविद्यालय से एल.एल.बी की परीक्षायें उत्तीर्ण कर उपाधियाँ प्राप्त की।

ब्रह्मचर्यव्रत:- युवावस्था में भी इनका रागभाव अत्यन्त क्षीण था। विवाह प्रस्ताव आने पर आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत की बात कहकर उन प्रस्तावों को अस्वीकृत किया और व्रतपालन के लिये सुमेरु की तरह अचल रहे।

कार्यक्षेत्र:- रामटेक गुरुकुल के संस्थापकों में एक श्री सुमेरुचन्द्र दिवाकर जी भी थे। उन्होंने इसका कई वर्षों तक संचालन किया।

पं. श्री सुमेरुचन्द्र जी प्रभावक वक्ता एवं लेखक रहे हैं। पर्युषण पर्व और महावीर जयन्ती पर भारत के उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम से साम्रह्य आमंत्रण पर गये।

साहित्य सेवा :- अनेक ग्रन्थों का सम्पादन एवं मौलिक प्रणयन कर श्री दिवाकर जी ने मां जिनवाणी की अनुपम सेवा करने का अवसर पाया। आपके द्वारा सम्पादित ग्रंथों में 1. महाबन्ध भाग एक का हिन्दी अनुवाद, 2. महाबन्ध पूर्ण मूल तथा ताम्रपदार्थ प्रति का सम्पादन, 3. कषायपाहुड़ मूल व हिन्दी अनुवाद, 4 जैन गजट साप्ताहिक पत्र का सम्पादन ख्यात है। श्री दिवाकर जी ने दक्षिण के मूडबिंद्री से महाबन्ध जैसे महान ग्रंथों की भट्टारकों के एकाधिकार से प्राप्त कर इनका सम्पादन और विस्तृत भूमिका लिखी।

महत्वपूर्ण कृतियों हैं- 1. जैनशासन, 2. चरित्रचक्रवर्ती, 3. तीर्थंकर, 4. महाश्रमण महावीर (हिन्दी व कन्नड़), 5. आध्यात्मिक ज्योति, 6. जैनशासन का मर्म, 7. महावीर जीवन दर्शन (हिन्दी व मराठी), 8. विश्वतीर्थ श्रवणबेलगोला, 9. निर्वाणभूमि सम्मोदशिखर, 10. निर्वाणभूमि चम्पापुरी, 11. नन्दीश्वर दर्शन, 12. अहिंसा और विश्वशांति, 13. पशु बलिदान पर विचार, 14. तात्विक चिन्तन (गुजरात व हिन्दी), अध्यात्मवाद की मर्यादा, 15. सैद्धान्तिकचर्या, 16. पाप-पुण्य मीमांसा, 17. इष्टोपदेश, 18 समाधिशातक, 19. समीचीन दृष्टि, 20. सुलझे पशु उपदेश सुन, 21. दिगम्बरत्व पर एक दृष्टि, 22. आचार्य शान्तिसागर महाराज : जीवन चरित्र, 23. आचार्य देशभूषण महाराज : जीवन चरित्र, 24. आगमपथ, 25. पंचास्तिकाय।

आपकी अंग्रेजी पुस्तकों में- 1. रिलीजन एण्ड पीस, 2. म्लेनसेस ऑफ जैनज्म, 3. एन्टीक्वटी ऑफ जैनज्म, 4. लार्ड पार्श्वनाथ, 5. ए पब्लिक हालिडे तीर्थंकर महावीर : लाईफ एण्ड क्लिफासॉफी आदि।

साधुसेवा का सुफल: अनेक दिगम्बर गुरुओं की सेवा से प्राप्त आशीर्वाद के कारण आप अपने पवित्र जीवन की स्वर्णिम संध्या तक निरन्तर अध्ययन और लेखन में व्यस्त रहे। दिनांक 25 जनवरी सन् 1994 की पूर्ण सावधानी के साथ णमोकार महामंत्र का श्रवण एवं मनन करते हुये अशुचि देह से सम्बन्ध का परित्याग कर दिया। आपके द्वारा की गई अभिव्यक्तियों समाज के लिये सदा प्रकाशस्तम्भ हैं।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



जैन व्या तत्व फिल्म प्रोड्यूसर श्री ताराचन्द्र बड़जात्या (जैन)



भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष 3 मई 2013 को पूर्ण हुये थे। भारतीय सिनेमा के सब से सम्मानित व्यक्ति दादा साहेब फाल्के की पूर्ण फीचर फिल्म राजा हरिश्चन्द्र का 3 मई 1913 को प्रदर्शन हुआ था, जिसने सिनेमा के इतिहास में एक क्रांती के युग को जन्म दिया था। उन्होंने मनोरंजन के साथ एक सशक्त माध्यम भी प्रदान किया, जिसने पूरे देश को सामाजिक सरोकार व संस्कृति को दिशा प्रदान की। भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली बोलती फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन अगली उल्लेखनीय घटना थी, यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मैजैस्टिक सिनेमा, मुम्बई में प्रदर्शित हुई थी।

1940 का दशक युद्ध तथा उथल-पुथल का दशक था इस के बावजूद भारतीय सिनेमा ने अच्छी प्रगति की, इसी दशक में 15 अगस्त 1947 को ताराचन्द्र बड़जात्या (जैन) ने अपनी राजश्री पिकचरज प्रा. लि. की स्थापना की जो कि फिल्मों के वित्तर्क के रूप में उभरी। 1950 का दशक फिल्म संगीत का स्वर्णिम युग था, देश के बड़े बड़े संगीतकार इसी दशक में ऊबरे तथा निर्माताओं द्वारा सामाजिक विषयों पर फिल्मों का निर्वाण किया गया। 1960 के दशक में भी यह नई प्रवृत्ति जारी रही, श्री ताराचन्द्र बड़जात्या (जैन) ने इसी दशक में राजश्री प्रोडक्शन प्रा. लि. निर्माण डिविजन की 1962 में शुरुआत की जिसने प्रथम हिन्दी फिल्म आरती बनाई जिसे राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफलता मिली। 1970 के दशक में भारतीय सिनेमा में मसाला फिल्मों का जन्म हुआ, जिसमें अत्याधिक आकर्षण और पूर्ण मनोरंजन था, 1980 के दशक में समानतर सिनेमा के दौर में महिला फिल्म निर्माताओं का उदय हुआ, 1990 का दशक मिश्रित फिल्मों का दौर रहा जिसमें रोमांटिक, एक्शन और कॉमेडी फिल्मों का निर्माण हुआ। डॉलबी, डिजिटल, ध्वनि प्रभाव, उन्नत विशिष्ट प्रभाव के साथ नई तकनीक और आधुनिक कारियोग्राफी ने रूपहले पर्दे पर गुणवत्ता से उल्लेखनीय सुधार हुआ 2000 के दशक में प्रमुखतः अंतराष्ट्रीय फिल्म समारहों और व्यवसायिक प्रदर्शनों के अवसर के साथ भारतीय सिनेमा ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। 2010 का दशक रूपहले पर्दे के लिये अपने साथ भारतीय सिनेमा के 100 वर्षों के पूर्ण होने का शुभ समाचार लाया इसी दशक में 3 मई 2013 की भारत सरकार के डाक विभाग ने 50 डाक टिकटों के मिनिएचर शीट जारी किये थे, जिनमें 18 डाक टिकटों पर दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेताओं को चित्रित किया गया तथा बाकी 32 डाक टिकटों पर सिनेमा के विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियों को चित्रित किया गया,

यह डाक विभाग के इतिहास में पहली बार हुआ है कि इतने व्यापक स्तर पर एक ही समय पर 50 डाक टिकटों को जारी किया गया। इन्हीं डाक टिकटों में प्रसिद्ध फिल्म प्रोड्यूसर श्री ताराचन्द बड़जात्या (जैन) को भी एक डाक टिकट पर चित्रित किया गया है। श्री तारा चन्द बड़जात्या का जन्म एक मारवाड़ी जैन परिवार में 10 मई 1914 को कूचामान शहर (राजस्थान) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने कलकत्ता युनिवर्सिटी के विद्या सागर कॉलेज से ग्रेजुएशन की और मात्र 19 वर्ष की आयु में भारतीय सिनेमा जगत से जुड़ गये, जहाँ इन्होंने बिना कोई परिश्रमिक लिये परिक्षण ग्रहण किया। इसके बाद वे एक कामयाब फिल्म प्रोड्यूसर बन गये। तारा चन्द बड़जात्या जिन्होंने 1947 में राजश्री की शुरुआत की थी वह फिल्म जगत में 6 दशकों तक बड़ी कामयाबी से छाये रहे। इनके परिश्रम ने राजश्री को फिल्म वितरण तथा निर्माण के क्षेत्र में प्रमुख स्थान दिलाया, राजश्री प्रोडक्शन की रंगमंडली ने 50 के करीब फिल्मों भारतीय सिनेमा को दी, एक टेलीविजन का व्यापक प्रसार तंत्र दिया तथा निर्यात के क्षेत्र में भी बढ़ चढ़कर पहचान बनाई। तारा चन्द्र बड़जात्या दक्षिण के नामी प्रोड्यूसरों को भारतीय सिनेमा में कदम रखने में बड़े सहायक सिद्ध हुये तथा उनकी बहुत सी फिल्मों का वितरण कार्य अपने हाथों में लिया।

जिन फिल्म निर्माता निर्देशकों ने उन पर पूरा भरोसा किया उनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम मनमोहन देसाई का है। जिन्होंने अपनी कई सफल फिल्मों जैसे कि अमर अकबर अंथोनी, परवरिश, धर्मवीर, कुली आदि फिल्मों के वितरण का अधिकार इन्हें सौंपा। जिन सफल फिल्मों से सबसे अधिक लाभ मिला उनमें शोले, जुगनू, रोटी कपड़ा और मकान तथा विकटोरिया नं. 203 प्रमुख हैं। अपनी फिल्मों में वे मानवतावादी भारतीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील दिखे, उन्हें लगता था कि देश की भाषा, देशी संगीत और देशी भाव-बोध अगर सार्थक रूप में लोगों को सामने लाया जाये तो लोगों की सराहना मिलेगी, बिल्कुल ऐसा ही हुआ।

दूसरी प्रमुख बात यह थी कि वे नये कलाकारों और संगीतकारों को सदैव प्रोत्साहित करते रहे, उन्होंने जिन लोगों को पहला बड़ा ब्रेक दिया उनमें- राखी, जया भादुड़ी, सारिका, रंजीत, रामेश्वरी, सचिन, अनुपम खेर, अरूण गोविल, माधुरी दीक्षित, सत्येन बोस, बासु चटर्जी, हीरेन, सुधेन्दु हेमलता, उदित नारायण तथा अलका याग्निक आदि शामिल हैं।

अपनी फिल्मों में वे भारतीय समाज के सकारात्मक पक्ष को ज्यादा दिखलाने की कोशिश करते थे। हिन्दी का प्रयोग वह शुरू से आखिर तक करते रहे। उनकी फिल्मों में जो नाम दिखलाये जाते थे वह भी हिन्दी में होते थे।

राजश्री प्रोडक्शन ने अपनी दूसरी फिल्म दोस्ती बनाई जिसमें एक भी बड़े अभिनेता या अभिनेत्री को नहीं लिया, लेकिन इस फिल्म ने बाक्स ऑफिस पर धूम मचा दी, इस फिल्म को 1964 में फिल्म फेयर का सर्वोच्च अवार्ड दिया गया। इन्होंने ऊँचे आदर्श की मान्य प्राप्त

पारिवारिक व सामाजिक फिल्में बनाई जिनमें बाद्य संगीत के मिश्रण से लोग का मनोरंजन किया गया। इनकी बनाई हुई एक के बाद एक सफलतम फिल्में आई जिनमें जीवन-मृत्यु, उपहार, पिया का घर, सौदागर, गीत गाता चल, तपस्या, चितचोर, दुल्हन वही जो पिया मन भाये, अखियों के झरोखे से, सावन को आने दो, तराना, नदिया के पार, सारांश आदि की लम्बी लिस्ट है।

इनके तीनों बेटों अजीत, कमल तथा राज भी राजश्री में अपने पिता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना शुरू कर दिया तथा राजश्री को और ऊँचाईयों पर ले गये। तारा चन्द्र बड़जात्या ने अपने पौत्र सूरज में बहुत बड़ी प्रतिभा को देखा, जो स्वाभाविक तौर पर सदा ही आगे की सोचता, उसे इन्होंने ने मात्र 24 वर्ष की आयु में ही प्रोत्साहित किया कि वह राजश्री के बेनर के नीचे स्वतंत्र रूप से फिल्म का निर्देशन करे सूरज ने अपनी पहली फिल्म मैंने प्यार किया का अकेले ही निर्देशन किया तथा ताराचन्द्र बड़जात्या इस फिल्म के प्रोड्यूसर थे। यह फिल्म बाक्स ऑफिस पर बड़ी कामयाब साबित हुई तथा इसे 1989 में फिल्म फेयर का बेहतरीन फिल्म होने का अवार्ड मिला, इस फिल्म की कामयाबी से सूरज इतना उत्साहित हुआ कि उसने अपनी अगली फिल्म हम आप के हैं कौन बनाकर भारतीय सिनेमा उद्योग में कामयाबी के झंडे गाड़ दिये इस फिल्म को चहुँओर से सराहा गया और यह भारतीय सिनेमा के इतिहास में तथा विदेशों में बड़ी सफल फिल्म साबित हुई। भारत सरकार ने तारा चन्द्र बड़जात्या को फिल्मों पर बनी कमेटी का सदस्य नियुक्त किया इस कमेटी की चेयर पर्सन श्रीमति इंदिरा गांधी जी थी।

दूसरी बार भारत सरकार के इन्हें वर्किंग ग्रुप आफ फिल्मस का सदस्य नियुक्त किया, जिस ग्रुप ने भारत की पार्लियामेंट को फिल्मों के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश की थी।

श्री ताराचन्द बड़जात्या का 21 सितम्बर 1992 को 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

ताराचन्द बड़जात्या पर डाक टिकट :- भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर 8 टिकटों वाली मिनिएचर शीट में एक बहुरंगी डाक टिकट पर तारा चन्द बड़जात्या का चित्र छपा है, डाक टिकट का मूल्य 500 पैसे है, मिनिएचर शीट को 3 मई 2013 को भारत सरकार के डाक विभाग ने वेट ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया से स्कियोरटी प्रिंटिंग प्रेस, हैदराबाद से छपा कर जारी किया था। प्रत्येक डाक टिकट को 8 लाख 10 हजार संख्या में छपा गया था। इन मिनिएचर शीटों का विमोचन राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने किया था। डाक टिकट पर तारा चन्द बड़जात्या को हाथ में कलम लेकर अपने कार्यालय में एक कुर्सी पर बैठकर काम करते हुये दिखाया गया है। डाक टिकट के ऊपर 500 मूल्य तथा भारत-इंडिया लिखा है। नीचे इंग्लिश तथा हिंदी में तारा चन्द बड़जात्या लिखा है। इसी पूरी श्रृंखला में जो डाक टिकट जारी किये गये हैं उन सब पर भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष का लोगो छपा हुआ है।

विशेष पत्र

✽ सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल ✽

एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज की प्रेरणा से संस्थापित और अब राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त **संस्कार सागर** मासिक पत्रिका आपके कुशल संपादन में नियमित रूप से मध्यप्रदेश के औद्योगिक नगर इन्दौर से प्रकाशित हो रही है। यह अत्यधिक सराहनीय है कि सिद्धांतसागर जी जैन सिद्धांत के विविध पक्षों पर संस्कार सागर में प्रकाशित अपने आलेखों के माध्यम से अत्यधिक कठिन जैन विषयों को सरलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। बहुचर्चित धार्मिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक संस्कार सागर धीरे-धीरे अपनी शिखर पर पहुँच कर 20 वर्षों की लंबी यात्रा पूरी कर रहा है।

इस पत्रिका का प्रत्येक अंक आकर्षक, पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है। यह पत्रिका हर आयुवर्ग के लिये रूचिकर ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय है। अनेक विधाओं को एक साथ संजोए **गागर में सागर भरने जैसी है**। इस पत्रिका का प्रत्येक अंक हमारे पढ़ने की जिज्ञासा को शांत करता है और नये-नये विषयों पर लिखने के लिये प्रेरणा प्रदान करता है। अनेक युवा और नये लेखकों की लेखन प्रतिभा को मुखरतापूर्वक अभिव्यक्ति करता है।

इस पत्रिका के माध्यम से समग्र भारतीय संस्कृति की आधारभूत जैन संस्कृति की आन, वान, शान और स्वाभिमान को वृद्धिगत करने के लिये आपके ठोस एवं सार्थक प्रयास, सराहनीय, अभिनन्दनीय और अनुकरणीय हैं। आपकी पत्रिका में प्रकाशित विविध आलेखों से हमें जैन दर्शन के साथ ही सभी भारतीय दर्शनों की सार्थक, सही और सटीक जानकारी सहज ही प्राप्त हो जाती है। पूरे भारत के पन्द्रह सौ से अधिक दिगंबर जैन संतों की विविध जानकारी संकलित कर आप बहुत ही उपयोगी एवं ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक संत और उनके शिष्यों के लिये संस्कार सागर संदर्भ ग्रन्थ ही बन गया है।

नये-नये विषयों पर प्रस्तुत आपके संपादकीय आलेख विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक बिन्दुओं से आपूरित होते हैं और हम सबको पढ़ने में रूचिकर लगते हैं। रचनाओं को आमंत्रित करने और संग्रह करने का आपका सतत परिश्रम और संपादन कौशल स्तुत्य एवं प्रणम्य है।

जैन जगत के विविध आयामों पर शताधिक आलेखों की विदुषी युवा लेखिका ब्र. समता जैन मारोरा को आपने महिला संपादक पद पर प्रतिष्ठित कर सराहनीय कार्य किया है। आपको हार्दिक साधुवाद। सद्यः प्रकाशित उनके लेख संग्रह जैनागम के विविध आयाम भाग-1 के लिये वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज ने अपना मंगल आशीर्वाद देकर इस युवा महिला को प्रोत्साहित किया है। हमारी सभी ब्रह्मचारी भाईयों और ब्रह्मचारी बहिनों से विनम्र आग्रह है कि वे आपसे और समता जी से प्रेरणा लेकर इसी प्रकार से जिनवाणी की सेवा करते रहें।

ब्र. जिनेश मलैया, संपादक संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर

उदयपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ विविध कार्यक्रम

रेत्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर दीक्षा शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि उदयपुर के जैन एवं प्राकृत विभाग के आयोजकत्व और अन्तर्मुखी चातुर्मास व्यवस्था समिति-उदयपुर के प्रयोजकत्व में दिनांक 29 सितम्बर 2019 को श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अशोकनगर, उदयपुर में प्रातः 8 बजे से राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी संपन्न हुई तथा इसी अवसर पर श्रीफल पुरस्कार समर्पण समारोह, सरस्वती आराधना, गुरुपूजन, नाटिका पाठशाला, पार्श्वनाथ चालीसा नृत्यनाटिका, जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी द्वारा आयोजित आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के प्रति विनयांजलि सभा के साथ विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी : सर्वप्रथम जैनविद्या एवं प्राकृत पत्रकारिता की आधुनिक प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय पत्रकारिता संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र पं. सम्राट शास्त्री के मंगलाचरण और उपस्थित अतिथियों द्वारा द्वीपप्रज्जलन के साथ प्रारंभ हुआ। प्रो. वीरसागर जैन दिल्ली के अध्यक्ष चयन के उपरान्त संगोष्ठी के निर्देशक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने स्वागत भाषण दिया। इस सत्र के सारस्वत अतिथि प्रो. उदयचन्द जैन उदयपुर और मुख्य वक्ता डॉ. महेश जैन भोपाल थे, विषय प्रवर्तन डॉ. ज्योतिबाबू जैन उदयपुर ने किया, डॉ. धर्मेन्द्र जैन और डॉ. रजनीश शुक्ला नई दिल्ली ने जैन विद्या एवं प्राकृत पत्रकारिता की आधुनिक प्रासंगिकता विषय पर अपने वक्तव्य दिये। सत्र का संयोजन डॉ. सुमत कुमार जैन ने व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ज्योतिबाबू जैन ने किया।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 1 बजे प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रेम सुमन जैन उदयपुर ने की, सारस्वती अतिथि डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज इन्दौर को बनाया गया। इस सत्र में वैज्ञानिक श्री पी.एन. अग्रवाल, श्री अकलेश जैन अजमेर, श्री मनीष जैन शाहगढ, श्री तपिस कुमार जैन, श्रीमति रीना जैन, सारस्वत अतिथि डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज व संगोष्ठी निर्देशक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने संबोधित किया। प्रो. जिनेन्द्र जी ने बताया कि प्राकृत की भावणासारो, तित्थयर भावणा और विराग सेतु ये पुस्तकें मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि. के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की प्रक्रिया में हैं। डॉ. मनुज के वक्तव्य के उत्तर में प्रो. प्रेम सुमन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी द्वारा पाइय पीयूस नाम से एक प्राकृत पत्रिका प्रारंभ करने की घोषणा की। इस सत्र का संचालन डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. ज्योतिबाबू जैन सह प्रोफेसर मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि उदयपुर थे।

श्रीफल पुरस्कार समर्पण समारोह : संगोष्ठी के प्रथम सत्र के उपरान्त पूज्य मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य और उनके निर्देशन में प्रतिष्ठित श्रीफल पुरस्कार समर्पित किये गये। ये पुरस्कार 1. रविदत्त मेहता 2. राजेश माली, 3. विकास जैन, 4. सचिन चौधरी, 5. देवकुमार, 6. ब्रजेश कुमार झाँ और, 7. चन्द्रप्रकाश वेद ने प्राप्त किये।

आचार्य विद्यानंद-विनयांजलि सभा : जैन प्राकृत स्कालर्स सोसायटी उदयपुर द्वारा आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के प्रति विनयांजलि सभा आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. प्रेम सुमन जैन ने की, संचालन प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने किया तथा संगोष्ठी में आगत प्रायः सभी विद्वानों-पत्रकारों ने अपने उद्गार व्यक्त कर विनयांजलि समर्पित की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : पूज्य मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज एवं पूज्य मुनि श्री अनुक्रमसागर जी महाराज के ही पावन सान्निध्य में विविध महिलामण्डलों द्वारा, सरस्वती आराधना, अष्ट प्रातिहार्य पूजन, गुरुपूजन किया गया, पार्श्वनाथ चालीसा के आधार पर पार्श्वनाथ के भव-जीवन की घटनायें दिखाते हुये नृत्यनाटिका प्रस्तुत की गई, बच्चों ने पाठशाला नाटक प्रस्तुत किया। नौ घंटे लगातार नृत्य प्रस्तुत करने वाली कनिष्का चित्तौड़ा ने जैन भजन पर नृत्य तथा शास्त्रीय कथक नृत्य प्रस्तुत किया।

चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी पर बृहद् राष्ट्रीय विद्वत् गोष्ठी यरनाल में स पन्न

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज मुनि दीक्षा शताब्दी महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 27 से 30 दिसम्बर 2019 में संपन्न हुई। मंगल सान्निध्य वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का रहा। कुशल नेतृत्व स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी श्रवणबेलगोला ने प्रदान किया। सारस्वत अतिथि स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक स्वामी जी हुमचा रहे। जिनसेन भट्टारक स्वामी जी नांदिनी आदि समस्त भट्टारक स्वामीजियों को भी आमंत्रित किया गया था। इस संगोष्ठी में 93 विद्वानों ने भाग लिया। पांच पुस्तकों, तीन पत्र-पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। चारित्र चक्रवर्ती स्मृतिग्रन्थ निकालने का संकल्प किया गया और स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी का अभिवंदन ग्रन्थ प्रकाशित करने की उद्घोषणा की गई।

उद्घाटन सत्र दिनांक 27 दिसंबर 2019 को प्रातः 10.30 से हुआ। सर्वप्रथम आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंग के साथ आगत सभी विद्वान, अतिथि व जन सामान्य एक विशाल शोभायात्रा के साथ सभामंडल पर पहुंचे। पहले ध्वजारोहण हुआ, इसके बाद फीता खोलकर मंडप का लोकार्पण हुआ, तत्पश्चात उद्घाटन सत्र प्रारंभ हुआ। विद्वत् सम्मेलन के सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांशु कुमार जैन बड़ौत थे, सत्र का संचालन डॉ. अनुपम जैन ने किया।

सर्वप्रथम मंगलाचरण डॉ. सुशीलचंद्र जैन मैनपुरी ने किया, अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन किया, तदुपरान्त आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन व शास्त्र भेंट किया विद्वानों ने किया। स्वागत गान नन्हीं नन्हीं बालिकाओं ने गणमोकर-गीत नृत्य प्रस्तुति के साथ किया। इस सत्र के असम केन्द्रीय विश्वविद्यालय तेजपुर असम के कुलपति प्रोफेसर विनोद कुमार जैन ने मुख्य आतिथ्य ग्रहण किया। उद्घाटन वक्तव्य डॉ. श्रेयांशु कुमार जैन ने किया, विषय प्रस्तुति विजयनगर कृष्णदेव राय विश्वविद्यालय बल्लारी के कुलपति डॉ. सिद्धु अलगुरु व डॉ. सुशीलचंद्र जैन मैनपुरी ने की। हुमचा के भट्टारक स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक स्वामी जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि 100 वर्ष में पहली बार इस परंपरा के किसी आचार्य का चातुर्मास वर्षायोग यरनाल की पवित्रभूमि पर हो रहा है।

तदोपरांत वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज जी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ। आपने कहा कि चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी दक्षिण चर्या के धनी थे। वे डरे नहीं, झुके नहीं, रुके नहीं। परीषदों और उपसर्गों से वे डरे नहीं, यहां तक कि उनके विहार मार्ग को भी रोका गया, तो भी वे रुके नहीं, विपरीत परिस्थितियों में भी वे कभी झुके, नहीं आत्मकल्याण मार्ग पर बढ़ते हुये जैन संस्कृति के उन्नयन में कभी रुके नहीं। उन्होंने बताया कि आचार्य श्री शांतिसागर जी का यद्यपि 9 वर्ष की अवस्था में एक 6 वर्ष की कन्या से विवाह हो गया था। विवाह के 6 माह बाद ही उसका देहांत हो गया था। इसके बाद उन्होंने विवाह नहीं किया। उन्होंने

बचपन से ही त्याग मार्ग को उन्नत बनाये रखा।

दोपहर 2.00 बजे से प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ। सत्र का संचालन डॉ. सुरेन्द्र भारती ने किया। सत्र के अध्यक्ष डॉ. शीतलचंद जी जयपुर रहे। आलेख का वचन-प्राचर्य अजीत प्रसाद मूडतबिंद्री ने कन्नड़ में किया, डॉ. टी.आर. जोडट्टी धारवाड़ ने भी कन्नड़ में अपना आलेख वाचन किया। उपरान्त डॉ. प्रेमसुमन जी जैन उदयपुर, पंडित भरत काला मुंबई, डॉ. ज्योतिबाबू जैन खतौली अने अपना आलेख वाचन हिन्दी में किया। द्वितीय सत्र 27 दिसम्बर को अपराह्न 4.00 बजे प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष प्रोफेसर प्रेमसुमन जी उदयपुर रहे, संचालन श्री राजेन्द्र जैन महावीर सनावत ने किया। आलेख वाचन श्री रावसाहेब पाटील सोलापुर ने तथा श्री धनदत्त बोरगांवे मिरज ने मराठी में किया, डॉ. पी.जी. केम्पणावर ने कन्नड़ में आलेख वाचन किया। प्रोफेसर जीवनधरकुमार श्रवणबेलगोला ने कन्नड़ में आलेख वाचन किया।

28 दिसम्बर को प्रातः 8.00 बजे सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता पं. अरूण कुमार जैन सांगानेर ने तथा संचालन ब्र. जयकुमार जैन निशांत टीकमगढ़ ने किया। इस सत्र में डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज इन्दौर ने आचार्य श्री शांतिसागर जी पर तिर्यचों कृत उपसर्ग और उसका प्रभाव विषय पर आलेख वाचन किया। तदुपरान्त श्री विजय दादा अवती जयसिंहपुर, डॉ. सुरेश कुमार जैन मैसूर, डॉ. अप्पण्णा हंजे गदग, इंजी. दिनेश जी भिलाई, डॉ. राजेन्द्र कुमार महावीर सनावत, डॉ. अनुपम जैन इंदौर के आलेख वाचन हुये। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. वृषभप्रसाद जैन लखनऊ ने तथा संचालन पं. आनंद प्रकाश जैन कोलकाता ने किया। आलेख वाचन श्री सुषमा रोटे कोल्हापुर, श्री सुनेत्रा नकाटे पुणे, डॉ. अभिजीत अलगौडर शास्त्री मैसूर, श्री राजेन्द्र पाटील शास्त्री श्रवणबेलगोला, ब्रह्मचारी राकेश भैया सागर, श्री शैलेश जैन सांगानेर जयपुर ने किया।

संचालन श्री श्रीधर हेर वार्ड कोल्हापुर मराठी में मराठी में विनोद कुमार जैन छतरपुर वाराणसी शास्त्री भागवत 28 तारीख के अध्यक्ष विनोदक कुमार जी महावीर शास्त्री सोलापुर मराठी।

पंचम सत्र की अध्यक्षता डॉ. जीवंधर कुमार होतपेटे ने तथा संचालन डॉ. शांतिकुमार मैसूर ने किया। इस सत्र में प्राचार्य श्रीधर हेरवाडे कोल्हापुर, डॉ. पुरदत्त चौगुले कराड, डॉ. सुजाता जैन बैंगलुरु, डॉ. रेखा जैन, जैन विश्वविद्यालय बैंगलुरु, ब्रह्मचारी विनोद कुमार जी जैन छतरपुर, डॉ. अमित जैन आकाश वाराणसी, सुमित जी जैन उदयपुर, पंडित मनोज शास्त्री भगवां ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। इसी तरह अन्य महानुभावों ने अन्य आठ सत्रों की विधिवत् अध्यक्षता व संचालन किया। इन सत्रों में 53 विद्वानों ने अपने आलेखों का वाचन किया। 30 दिसम्बर को समापन सत्र में सभी विद्वानों व विशेष अतिथियों का सम्मान किया गया, चारित्र चक्रवर्ती स्मृतिग्रन्थ निकालने का संकल्प दोहराया गया और स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी का अभिवंदन ग्रन्थ प्रकाशित करने की उद्घोषणा की गई।

प्रवचन - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

कठिन होता है मोक्ष का मार्ग

जबलपुर- बहुत धूप हो रही हो। रास्ता बहुत विकट हो। आप थक गये हो, लेकिन मंजिल तक पहुँचना भी अनिवार्य हो। ऐसे में सवाल उठता है कि कैसे पैर उठाये। जब पैर उठाना बहुत कठिन हो रहा है। उसी समय अच्छी हवा चलने लगे, फिर तो आपके पैर उठेंगे। मोक्ष मार्ग भी में ऐसी ही कठिनाइयाँ रहती हैं। ये उद्गार आचार्य विद्यासागर ने शनिवार को दयोदय तीर्थ में शनिवार को मंगल प्रवचन में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा, मोक्ष के साथ कुछ शेष नहीं रह जायेगा। इसीलिये पहले ही कठिनाइयाँ आती हैं। फिर कोई कर्म शेष नहीं रह जाता। लेकिन मोक्ष से पूर्व कर्म जमकर धक्का देता है। उस समय उस ठंडी हवा की भाँति गुरुदेव शिष्यों का साथ देते हैं। मोक्ष मार्ग में देव, गुरु और शास्त्र के अलावा हम अपने आपको पाना चाहते हैं तो अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।

देव, गुरु, शास्त्र के माध्यम से भगवान को देखने से हमें अपना भान हो जाता है। गुरु का साथ मिलने से हमारा आलस्य समाप्त हो जाता है, हम चलने लग जाते हैं। शास्त्र जिनवाणी से हमारी आंखें खुलती हैं। हमें किस ओर जाना है, मार्गदर्शन मिलता रहता है। तीनों मार्ग का विस्मरण न करने से लाभ होता है। भले दुनिया को भूल जायें, पर इन्हें कभी न भूलें। दुनिया का अर्थ राग, द्वेष, मोह से है।

क्या आप जानते हैं

नोबेल पुरस्कार 2018

क्र.	क्षेत्र	वैज्ञानिक/पात्र के नाम	किस देश के
1.	चिकित्सा क्षेत्र में	एबिसन (जेम्स बी. एलियन)	अमेरिका टेक्सास
2.	भौतिकी क्षेत्र में	1 आर्थर एशकिन 2 गेरार्ड मेरा 3 डोना स्ट्रुक्लेंड	अमेरिका फ्रांस कनाडा
3.	रसायन क्षेत्र में	फ्रांसिस अर्नाल्ड जार्ज स्मिथ	अमेरिका अमेरिका
4.	शांति	डॉक्टर डेनिस मुकेगे नादिया तुराद	काँगो इराक
5.	अर्थशास्त्र क्षेत्र में	विलियम नॉर्थोस पॉल रोमर	अमेरिका अमेरिका

अनिद्रा दूर करके अच्छी नींद लेने के उपाय

* जिनेंद्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) *

जीवन में शारीरिक परिश्रम के बाद जब शरीर व मन थक जाता है। तब नींद उस थकावट को दूर कर पुनः शरीर को कार्य करने योग्य बनाती है। परिश्रम के फलस्वरूप शरीर की अनेकों शिकायतें नष्ट हो जाती हैं, आहार उस कमी को पूरा करता है। परिश्रम करते समय स्नायुमंडल में अचेतन भाव आता है व उस समय हमें नींद आने लगती है। नींद की हालत में मस्तिष्क में रक्त संचालन क्रिया घटकर रक्त कम हो जाता है। पावन तंत्र में रक्त की अधिकता हो जाती है, अन्य अंग भी थक जाते हैं, ज्ञान शक्ति लुप्त हो जाती है यही नींद है। यदि किसी कारण से नींद में गड़बड़ी होने पर अर्थात् नींद न आने को अनिद्रा रोग कहते हैं।

सेहत के लिये जितना जरूरी पौष्टिक आहार और व्यायाम है, उतना जरूरी अच्छी नींद लेना भी है। पर्याप्त व अच्छी नींद में कमी से हृदय रोग, सिर दर्द, मोटापा, भूख ज्यदा लगना, हाई ब्लड प्रेशर, चिड़चिड़ापन, थकावट, सुस्ती महसूस होना आदि का सीधा प्रभाव आपकी कार्यक्षमता और एकाग्रता पर पड़ता है। कम नींद से मस्तिष्क के हाईपोथेलेमस में सक्रियन्यूरोन्स के एक समूह की कार्यशैली गड़बड़ हो जाने से आरेक्सिन नामक हार्मोन का संतुलन बिगड़ने से समस्याएँ शुरू हो जाती हैं।

आधुनिक- सुख सुविधाएँ के कारण शारीरिक गतिविधियाँ का कम होना, खानपान पर ध्यान नहीं देना, असंतुलित भोजन, बंद कमरों में रहना, तनाव ग्रस्त रहना इसके अलावा गठिया, थायरॉइड, डायबिटीज महिलाओं में मेनोपाज के समय हार्मोन में बदलाव व पुरुषों में प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना भी अनिद्रा के लिये जिम्मेदार है। इसके अतिरिक्त मन की उत्तेजना, स्वप्न, रक्तहीनता, अजीर्ण, दुख, खुशी, जम्हाई आना, थोड़ी सी आहट पर नींद टूट जाना, भय, खरटि भरना, दाँत किट किटाना, हृदय रोग, रात्रि जागरण, दिन में ज्यादा आराम करना आदि अच्छी नींद लेने के लिये सोने से पूर्ण गुनगुने पानी से नहाना या हाथ पैर मुँह अच्छी तरह से धोना जिससे हमारी मांसपेशियों नरम पड़ने से आराम मिलता है व शरीर का तापमान भी कम होने से नींद आती है। ढीले साफ हल्के कपड़े पहनना, सोने के बिस्तर साफ, अधिक नरम नहीं होवे, कमरे में हल्की रोशनी, मोबाइल, टी.वी. से दूरी बनाये रखना, दूसरे दिन की कार्यरेखा तैयार रखना और मनपसंद किताबें पढ़ना। सोने के दो घंटे पहिले भोजन करना व हल्का भोजन करना, गरम दूध पीना भी लाभदायक है। कमरे में सही दिशा में सोना, सिर उत्तर दिशा में नहीं करें। नींद न आने पर मन में उल्टी गिनती 100 से 1 तक गिनना भी लाभदायक है। अखरोट व कटू के बीज में मेलानोनिन नामक तत्व भी हमें अच्छी नींद लाने में उपयोगी है। ज्ञान मुद्रा मस्तिष्क के संपूर्ण विकार दूर करके स्नायुमंडल को शक्तिशाली बनाती है।

नियमित व्यायाम व योग का प्रभाव शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर पड़ता है। दिनभर बैठकर काम करने से शरीर का निचला हिस्सा सुस्त अवस्था में पड़ जाने से सोते समय पीठ व कमर दर्द नींद में बाधक बनता है जिससे व्यायाम से लाभ होता है। नींद बहुत गहरी होने पर अर्थात् सहज में उठा न सकने पर उसे स्वाभाविक नींद नहीं समझना चाहिये यह वास्तविक शांतिदायक नहीं है। नशा, नींद की दवाई आदि के सेवन की नींद मानसिक शक्ति की उत्तेजना व सुस्तीपन लाते हैं।

अनिद्रा के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने हेतु उचित चिकित्सा पद्धति अपनाना चाहिये। आयुर्वेदिक व होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति ही सर्वोत्तम लाभदायक है जिससे शरीर के मूल रोग दूर होकर अच्छी नींद लाने में सहायक है। ऐलोपैथी पद्धति में नींद लाने की औषधियाँ अत्यधिक मात्रा में लेने से अन्य रोगों को उत्पन्न कर सकती हैं।

दुनियाँ भर में हुये शोध कहते हैं कि अच्छी नींद नहीं आना अपने आप में बड़ी बिमारी है एवं इसे नियंत्रण करना केवल स्वयं के हाथों में है। इच्छा शक्ति जाग्रत करके उचित चिकित्सक की सलाह से उपचार कराकर एक स्वस्थ शरीर जिसमें स्वस्थ मन रहता है जब ये दोनों सबल हो तभी जीवन आनंद दायक होता है।



हास्य तरंग

1. सेमीनार में एक बुजुर्ग अपनी उम्र का राज बता रहे थे। मेरी उम्र 75 साल की है मैंने कभी सिगरेट, तम्बाकू, शराब नहीं पी, जुआ नहीं खेला और किसी औरत की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा, शादी नहीं की, भाग ले रहे एक श्रोता ने कहा, दादा जी मुझे बड़ा आश्चर्य है कि इतने वर्ष से किसके लिये जिन्दा हो।
2. शादी समारोह के महिला संगीत कार्यक्रम में एक लड़की ने खुश होते हुये कहा-हाँ-हाँ क्यों नहीं। लड़की बोली तो फिर आपकी कुर्सी में ले जाऊँ।
3. फोन की घंटी बजी तो पति ने पत्नि से कहा मेरा पूछे तो कह देना मैं घर पर नहीं हूँ। पत्नि ने फोन से बात कही हाँ घर पर ही है। पति मैंने मना किया था ना, पत्नि हाँ फोन मेरे लिये था।
4. भारतीय वैज्ञानिकों को चांद की सतह पर पानी की खोज की जिसका स्वाद बिल्कुल भारतीय पानी जैसा है। तभी दूसरे दिन ज्योतिष ने बताया कि यह वही पानी है जो भारतीय महिलाओं ने करवाचौथ पर चांद पर चढ़ाया था।
5. दो डॉक्टर सामने से लंगड़ाकर आ रहे व्यक्ति को देखकर अपनी-अपनी राय बता रहे थे। पहला डॉक्टर, उस व्यक्ति के बाये पैर में फ्रेक्चर है। दूसरा डॉक्टर नहीं उसके दाये पैर में फ्रेक्चर है। दोनों आपस में बहस करने लगे, तभी उन्होंने तय किय चलो उस व्यक्ति से ही पूँछ लेते हैं। व्यक्ति उनकी बात सुनकर मेरी चप्पल टूटी है।
6. साहिल से टीचर पूछती है आज तुम सिर्फ मोजे पहिनकर आये हो? टीचर जी मम्मी पापा में झगड़ा हो रहा था। एक जूता मम्मी के एक जूता पापा के हाथ में था। मैंने 15-20 मिनट इंतजार किया और बस आ गया।

संकलन : जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* जैन बनाओ

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- इसमें खेल प्रारंभ करने वाले दोनों स्वयंसेवक हाथ के बदले एक रस्सी के दोनों सिर पकड़ेंगे। इस रस्सी में वे जबरन जिसे लपेट लेंगे। वह हिन्दू बनकर बाहर बैठ जायेगा। इस प्रकार वे सबको हिन्दू बनायेंगे।

* संदेश

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- 10-15 संख्या के दो या अधिक पर बनाकर उन्हें पंक्तिबद्ध बैठाये शिक्षक कागज पर अलग-अलग सूचनायें लिखकर गर के पहले स्वयंसेवक जैसे आज रात्रि 8.30 बजे सब स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश पहनकर हनुमान शाखा के संघ स्थान पर कौमुदी संचालन हेतु एकत्र होंगे। संचलन के बाद खीर का प्रसाद भी मिलेगा। कार्यक्रम का शुल्क पाँच रुपये हैं। आदि वह इस सूचना को याद कर करायेंगे। सभी खिलाड़ी ऐसा ही करेंगे। इस प्रकार प्रादा सूचना को गर का अंतिम खिलाड़ी कागज पर लिखकर शिक्षक को देगा। शिक्षक प्रत्येक गट की प्रारंभिक तथा अंतिम सूचना पढ़कर सबको सुनायेंगा।

* स्वर पहचान

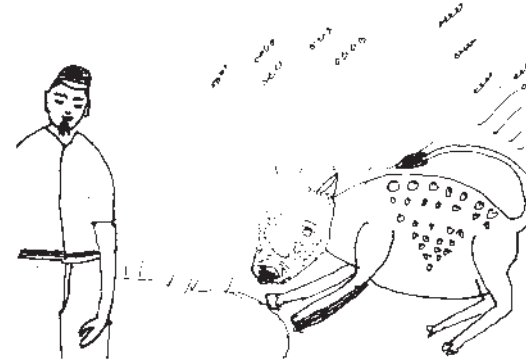
खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- एक खिलाड़ी की आँख पर पट्टी बांधे, अब कोई अन्य स्वयंसेवक (अ) उससे कोई रोचक प्रश्न पूछेगा। वह (अ) को स्वर से पहचान कर उसका नाम बताते हुये उसके प्रश्न का उत्तर देगा।

बाल कहानी

मौत का आ आस



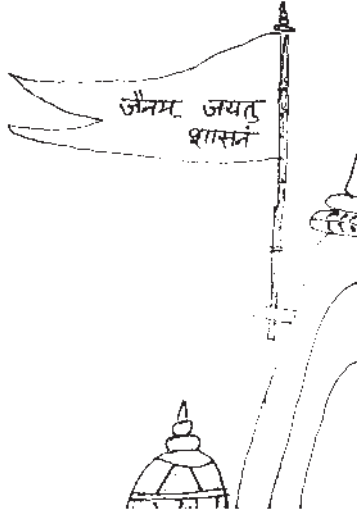
रूस देश के मास्को से 5300 मील दूर एक सुन्दर सा गांव सुलूक है सुलूक गांव में ऊँचे नीचे भवन हैं ऊँचे नीचे भवनों से लगा हुआ खेतों का समूह है वही पर एक अलकजेन्डर नाम का किसान रहता था। अलकजेन्डर की सुन्दर सी पत्नी थी उसका नाम प्लेटेन था प्लेटेन बहुत खूबसूरत सीधी सादी

ग्रामीण महिला थी और वह अलकजेन्डर को शराब पीने से रोका करती थी प्लेटेन कहा करती थी अंगूरी या शराब आग का दरिया है जिस तरह से आग के दरिया फंसा हुआ व्यक्ति बाहर नहीं निकल सकता उसी तरह शराब पीने वाला व्यक्ति मरते दम तक शराब से छुटकारा नहीं पा पाता है इस बात पर अलकजेन्डर ने अपनी पत्नी से लड़ने की रोज की आदत बना ली थी उसे वह अपना दुश्मन समझता था।

एक दिन की बात है अलकजेन्डर और प्लेटेन का सुबह से ही झगड़ा हो गया अलकजेन्डर ने कहा मैंने छत्तीस साल तेरे साथ बिता दिये मुझे सिर्फ झगड़ा ही मिला है। तू मेरी पत्नी नहीं पनौती है आज मैं अपनी जिन्दगी का आखरी दिन समझ रहा हूँ भगवान करे मुझे भालू खा जाये। यदि मैं खेत से न लौटू तो समझना मुझे भालू खा गया और तेरा मेरा पिण्ड छूट गया इतना कहकर अलकजेन्डर घर से निकल गया खेत में पहुँचने के बाद अलकजेन्डर ने अपनी बोटल खोली और भर पेट शराब पी और खेत में जाकर के काम करने लगा काम करते-करते उसे नींद आ गई वह खेत में ही खुले मैदान में सो गया संयोग की बात है कि कहीं से भालू आ गया और उसने अलकजेन्डर को खाना शुरू कर दिया और न तो अलकजेन्डर संभल पाया और न भग पाया ग्रामीणों को पता लगा और अलकजेन्डर की चीखें सुनकर वे इकट्ठे हो गये और उन्होंने भालू को मार डाला परन्तु अलकजेन्डर के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये अलकजेन्डर की पत्नी प्लेटेन ने सभी ग्राम वासियों को बताया कि ये तो घर से ही कहकर आये थे कि यदि मैं न लौटू तो समझ लेना मुझे भालू खा गया। इससे ऐसा लगता है आदमी को अपनी मौत का आभास पहले से ही हो जाता है।

संस्कार गीत

गर्व से कहो



गर्व से कहो कि हम जैन है
धर्म को बचाने हम बैचेन है।

1.

जीने का अधिकार सबको जैन की
आवाज है।
सत्य अहिंसा ही जैन धर्म का साज है।
अनेकांत ही तो जैन दृष्टि जैन है।

2.

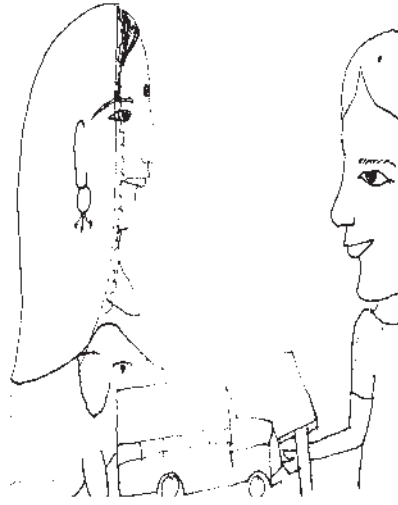
जैनियों का योगदान आजादी की जंग में
जैन जन साथ रहा आपदा प्रसंग में
उच्च सोच राष्ट्रवादी एक मात्र जैन है

3.

भारतीय संस्कृति जैनियों का प्राण है।
वीतरागी साधना जैन की पहचान है।
क्रांतिकारी अरू शहीद हुये कितने जैन है।

बाल कविता

खिलौना



खुशियाँ गम सब मन में लाते
बचपन में बस साथी बनाते
देखो खेल खिलौना
नीले और गुलाबी भाते
बच्चों को हम समझ न पाते
कैसे हो उनके खिलौना
मिल जुलकर सब बच्चे खेले
हँसलें-पिटें-पीटलें-रोलें
भूल न पाते खिलौना
हिंसक क्रूर खिलौना न देना
इनके भाव समझ तुम लेना
बचपन नहीं खिलौना
भूल न करना मम्मी पापा
क्यों न हो मन आपी छापा
मजेदार बच्चों को खिलौना

समाचार

दीक्षाये सम्पन्न

सुसनेर- आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज के करकमलों से 1 जनवरी 2020 को क्षुल्लक श्री मार्दवसागर महाराज को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनि श्री मार्दव सागर जी महाराज रखा गया।

सम्मदशिखर- आचार्य श्री अनेकान्त सागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. नवनीत गंगवाल मुंबई को मुनि दीक्षा दिनांक 23 जनवरी 2020 को दी गई। जिनका नाम मुनि श्री आत्मीय सागर जी महाराज रखा गया।

रोहिणी दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज के करकमलों से दिनांक 23 जनवरी 2020 एलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज, ब्र. कन्हैया लाल निवाई, ब्र. कमलेश जी रोहिणी दिल्ली को दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री शुभसागर जी महाराज, क्षुल्लक शुभकामना सागर जी महाराज, क्षुल्लिका शुभयोगमति माताजी नाम रखा गया।

आगामी दीक्षा

यरनाल- आचार्य श्री वर्धमासागर जी महाराज के करकमलों से 30 जनवरी 2020 को श्री कैलाशचंद जी काला कोलकाता, कस्तूरी आदिनाथ चौगले बस्तवाड़ को दीक्षाये दी जावेगी।

समाधिमरण

बांसवाड़ा- आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सुधीरसागर महाराज जी का समाधिमरण 31 दिसम्बर 2019 को ब्रह्ममुहूर्त में हुआ।

अहमदाबाद- गणिनी आर्यिका शुभमति

माताजी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका सुभावमति माता जी का समाधिमरण हाटकेश्वर अहमदाबाद में 13 जनवरी 2020 को 2.45 पर हुआ।

बडौत- आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी की शिष्या आर्यिका श्री प्रत्यक्षमति माताजी का समाधिमरण 13 जनवरी 2020 को प्रातः 7.15 पर हुआ।

बूंदी देवपुरा- आचार्य श्री विरागसागर जी के शिष्य क्षुल्लक श्री विश्ववोत्तम सागर महाराज का समाधिमरण मुनि श्री विश्रान्तसागर जी महाराज के सान्निध्य में 07 जनवरी 2020 को देवपुरा बूंदी में हुआ।

सुसनेर- आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज के सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री मार्दवसागर जी महाराज का समाधिमरण सुसनेर में 01 जनवरी 2020 को हुआ।

सागर - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्री सुनयमति माताजी का समाधिमरण 29 दिसम्बर 2019 को भाग्योदय तीर्थसागर में प्रातः 5.30 बजे हुआ।

पाठशाला संगोष्ठी सम्पन्न

गंजबासौदा- मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज एवं मुनि श्री पद्मसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 28 से 30 दिसम्बर 2019 को पाठशाला संगोष्ठी श्री दिगम्बर जैन महावीर विहार गंजबासौदा में सम्पन्न हुई।

वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

सिरोंज- मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज एवं मुनि श्री पद्मसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर की

वेदी प्रतिष्ठा 18 से 20 जनवरी 2020 तक ब्र. प्रदीप भैया, सुयश अशोकनगर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुई।

पंचकल्याणक सम्पन्न

सौरई-श्री मल्लिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव दिनांक 15 जनवरी से 21 जनवरी 2020 मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ रहे।

पंचकल्याणक सम्पन्न

इन्दौर-श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक जिनबिम्ब प्रतिष्ठा विश्वशांति महायज्ञ एवं ग्यारह रथोत्सव आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के संसंध (33 पिच्छी) के सान्निध्य में दिनांक 26 जनवरी से 1 फरवरी 2020 तक प्रतिष्ठाचार्य विनय भैया सम्राट के एवं ब्र. नितिन भैया खुरई, ब्र. सुमत भैया भोपाल, पं. कमल कुमार शास्त्री, ब्र. अनिल शास्त्री बण्डा, ब्र. निलेश जी बण्डा, पं. प्रकाशचंद जी छोटू बण्डा, पं. नयन जी शास्त्री ललितपुर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें माता पिता बनने का सौभाग्य श्रीमति नीलू संजय जैन मैक्स, सौधर्म इन्द्र- श्रीमति श्वेता सचिन जैन उद्योगपति, कुबेर- श्रीमति मधु आलोक सिंधई, महायज्ञनायक-श्रीमति सांक्षी सतीश जी डबडेरा, राजाश्रयांस-श्रीमति निधि मनीष जी, राजासोम-श्रीमति रश्मि मुकेश जी, भरत चक्रवर्ती - श्रीमति नम्रता प्रवीण जी, बाहुबली-श्रीमति सुची समीर जी, ईशानेन्द्र- श्रीमति कल्पना मनोज बाकलीवाल, सानतकुमार इन्द्र- श्रीमति प्रियंका अंकित भाईजी, माहेन्द्र इन्द्र- श्रीमति समता देवेन्द्र जी, ब्रह्म इन्द्र- श्रीमति रेशू प्रमोद

जी, ब्रह्मोत्तर इन्द्र- श्रीमति नितीका विजित रामावत, लांतव इन्द्र- श्रीमति रचना स्वप्निल जैन, कापिष्ठ इन्द्र- श्रीमति ममता मनोज जैन, शुक्रइन्द्र- श्रीमति जया सुनील सिंधई, महाशुक्रइन्द्र- श्रीमति शुभी विशाल जी, सतार इन्द्र- श्रीमति सोनिया विशाल जी, सहस्रार इन्द्र-श्रीमति सुमन मनोज मोदी, आणत इन्द्र- श्रीमति किरण हेमन्त जी पाटनी, प्राणत इन्द्र-श्रीमति रानी अशोक जी दोषी, आरण इन्द्र- श्रीमति अनुष्का आशीष जी, अच्युत इन्द्र- श्रीमति रजनी अशोक जी, ध्वजारोहण-श्रीमति विमला देवी सुनील सुधीर बिलाला परिवार को प्राप्त हुआ। इस पंचकल्याणक में श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर के साथ साथ कनाड़िया रोड, वैभव नगर, खांतीवाला टैंक, शिखर जी ड्रीम, सुखलिया, तपोवन कॉलोनी, जैसवाल समाज, छावनी, सलैया वाला मंदिर स्कीम नं. 78, सुख शांति नगर, विदुर नगर आदि मंदिरों के पंचकल्याणक एक साथ कराने का सौभाग्य रहा। जिसमें अध्यक्ष बनने का सौभाग्य नरेन्द्र जैन बीडी, कार्याध्यक्ष संजय जैन मैक्स, मनीष नायक, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, धर्मेन्द्र जैन (सिनकेम), उपाध्यक्ष सिम्पल जैन, महामंत्री सचिन जैन उद्योगपति, कोषाध्यक्ष मनोज बाकलीवाल, विशाल जैन, सह-कोषाध्यक्ष आशीष जैन, स्वागताध्यक्ष राजेश जैन लॉरेल, सुनील बिलाला, आलोक जैन (कोल), कैलाशचंद जैन, प्रजेश जैन, अशोक डोसी, मंत्री प्रवीण दिवाकर, अरविंद जैन सर, विनोद जैन, कमलेश कासलीवाल, विपुल बांझल, राकेश विनायका, डी.के. जैन, राहुल जैन स्पोर्ट्स, देवेन्द्र सेठी, अनिल जैन एवं मागदर्शक ब्र. सुनील भैया इन्दौर रहे।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : फरवरी 2020

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

- वैराग्य की प्रेरणा जहाँ मिले वस्तुतः वही हमारे लिये के साधन हैं ?
- जिस वंश के हम अंश हैं उसके ही मोह का ध्वंस करना जरूरी है ?
- शरीर को संवारो (सजाओ) नहीं किन्तु सम्हालो, यह..... में सहकारी है ?
- जबसे जलना शुरू करता है तभी से बुझने लगता है ?
- हमारा जीवन के बुलबुले की तरह क्षणभंगुर है जिसे फूटने में देर नहीं ?
- प्राप्त संपदा से और..... इन्द्रधनुष तथा आकाश नगर की भांति क्षणभंगुर है जो तृण-बिन्दुओं के समान बहुत ही जल्दी बिखर जाने वाला है ?
- यह संसार के समान है जो देखने में दिखता है बहुत सुन्दर पर स्थिर रहने वाला नहीं है। देखते ही देखते नष्ट हो जाने वाला है ?
- यह सारा का सारा संसार है केवल एक विशाल नाटक। भले ही इसमें तू भाँति-भाँति के धर किन्तु इसमें भूलभर भी न अटक ?
- अहो ! इस निद्रा का माहात्म्य तो देखो, जिसके आने पर यह जीव शव जैसा दिखने लगता है और उसके जाते ही जैसा प्रतीत होता है ?
- संसारी प्राणी की यह मूर्खता है जो को सुरक्षित रखने का प्रयास करता है, सुरक्षा नहीं होने पर संक्लेश करता है जिससे दुर्गति का पात्र बनता है ?
- जड़ तत्त्व की सुरक्षा के लिये जो व्यक्ति चेतन धन का उपयोग करता है ?
- यदि हमारे घर के अन्दर एक छोटा सा भी सर्प घुस आये तो हम घर छोड़कर भाग जाते हैं किन्तु हमारे भीतर.....विषय कषायों के कितने सर्प बैठे हुये हैं, पर हमें उनका ख्याल ही नहीं ?
- बहुत थोड़ा है, यह प्रतिपल नष्ट हो रहा है।
- जीवन में एक घड़ी भी वीतरागता के साथ जीना बहुत अर्थ रखता है ?
- गुणवान, ... को आदर देते ही हैं क्योंकि उन्हें गुणों की महत्ता मालूम है ?
- सहज जीवन जीना सीखो, मान के अभाव में मानव स्वयमेव हो जाता है ?
- अहंकारी का ही अधोगमन होता है, विनयी हमेशा होता है ?
- कठोरता बर्फ की तरह विभाव है जबकि तरलता पानी की तरह स्वभाव ?
- मृदुता और काठिन्य की सही पहचान तन को नहीं को छूकर होती है ?
- लघुत्व को स्वीकार किये बिना अन्दर से प्रगट हो ही नहीं सकता ?
- वही है जो सही को स्वीकार करे ?
- वास्तव में वही है जिसे छोटे का भी ध्यान हो ?
- आज का व्यक्ति मान के पीछे सब कुछ न्यौछावर करने तैयार है, पर को नहीं ?
- मान को समझने और उसे जीतने में ही की सफलता है ?
- विनय, दीनता की प्रतीक नहीं है वह तो समीचीन तप है, जो आत्म-विकास तथा कर्म निर्जरा का साधन है ?

26. के साथ प्रत्येक घड़ी बिताने का नाम ही वास्तव में जीवन है ?
27. वास्तविक स्वयंसेवक वही है जो आत्मा की सेवा करता है ?
28. दूसरों की सेवा में निमित्त बनकर अपने में उतरना ही सबसे बड़ी सेवा है ?
29. अनुभव में वृद्धि, सादगी और का आना वृद्ध सेवा का परिणाम है ?
30. में अधिकार का भाव नहीं आना चाहिये क्योंकि अधिकार का भाव आते ही कर्तव्य, कर्तृत्व बन जाता है ?
31. अहंकार की नींव पर ही कर्तव्य का ढाँचा टिका हुआ है ?
32. कम से कम वस्तुओं में अपना निर्वाह करना यह गरीबी नहीं किन्तु सदाचरण, सन्तोषवृत्ति है ?
33. स्वार्थ और दायरों से उपर उठे बगैर किसी की सेवा संभव नहीं ?
34. सफलता उसके चरण चूमती है जो निरन्तर करता है ?
35. दया का कथन निरा है और दया का वतन निरा। एक में है और एक में जीवन का अभिनय ?
36. के अभाव में शेष गुण विशेष महत्त्वकांक्षी नहीं है। वह दया, शेष गुण रूपी मणियों को पिराये जाने के लिये धागे के समान है ?
37. किसी की भी नहीं करना चाहिये, यहाँ तक कि विपरीत वृत्ति वाले की भी नहीं ?
38. हमें दूसरों के गुणों की प्रशंसा ही करना चाहिये, निंदा बुराई करके हम व्यर्थ ही अपने मुख को खराब करते हैं ?
39. सज्जनों के मुख से कभी भी निष्ठुर, निन्दक और निर्दयता परक वचन नहीं निकलते ?
40. दूसरों की आलोचना/दोषों का कथन करते समय जिनकी मौन हो जाती है।
41. श्री शांतिबाई जी सागर की आर्यिका दीक्षा कहां हुई और उनका नाम क्या रखा गया ?
42. आर्यिका उज्ज्वलमति माताजी का समाधि कब और कहा हुई ?
43. इको फ्रेन्डली पेन्सिल निर्माण के लिये किसका नाम इंडिया बुक में आया है ?
44. शिखर जी पंचकल्याणक में संगोष्ठी कौन से महाराज पर की गई की ?
45. संस्कार सागर इन्दौर द्वारा आयोजित 1 लाख रुपये का जैन विद्या संस्कृति प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्थान किसे प्राप्त हुआ।
46. संस्कार सागर इन्दौर द्वारा आयोजित 51 हजार रुपये का जैन विद्या संस्कृति प्रश्नोत्तरी में द्वितीय स्थान किसे प्राप्त हुआ।
47. संस्कार सागर इन्दौर द्वारा आयोजित 31 हजार रुपये का जैन विद्या संस्कृति प्रश्नोत्तरी में तृतीय स्थान किसे प्राप्त हुआ।
48. मुनि श्री कुन्धुसागर जी महाराज की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई ?
49. एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज की पुरानी पिच्छी किसे प्राप्त हुई ?
50. अजितनाथ पंचकल्याणक के अवसर पर जैन विद्या संस्कृति प्रश्नोत्तरी के प्रथम पुरुस्कार प्रदाता श्री गजेन्द्र जी गिनी गुप इन्दौर को कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया ?

10 प्रश्न संस्कार सागर जनवरी 2020, 40 प्रश्न दिव्यताणी सागर बूंद-समाय, वैराग्य-प्रेरणा, कर्तव्य-बोध से लिये गये हैं।
यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें- फोन 0731-4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: फरवरी 2020

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजे तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 250

1		2	3		4	5	6	7
			8		9			
10	11			12				
			13				14	
15		15ए		16			17	
		18				19		
20	21			22		23		
24			25					
					27		28	

ऊपर से नीचे

- जो कभी मरे न, देव का नाम -3
- सौ की संख्या, सौ रनों का समूह -3
- किनारा, तट -2
- बूँद -3
- लेखनी, पेन -3
- जैन धर्म के दूसरे तीर्थंकर -5
- यान, जलयान, वोट, बोड़ा -3
- विद्याधर -3
- मदमत नारी -4
- दृष्टि -3
- समानता से उत्पन्न समूह -3
- दश वस्तुओं का समूह -3
- संगीत का आधार -2
- पानी नीर -2

बाये से दाये

- आठ सौ श्लोक का आ. अकलंक देव का एक ग्रंथ -4
- कलंक दोषों से रहित, जैन न्याय के पितामाह -4
- आर्द्र, गीला -2
- जीता हुआ, विजित -2
- कपड़े धोने का काम करने वाली जाति -3
- हानिप्रद, हानिकारक, घातक -3
- नृत्य करना -3
- भार -3
- वाहन प्राचीन पैगम्बर -2
- इच्छा निरोधक साधना -2
- यश -2
- प्रश्न -3
- एक फिल्म का नाम, अराजकता का भाव -3
- स्वामी -3
- एक के बाद शून्य रखने पर बनी संख्या -2
- धन, दौलत -2
- पंकज नीरज जलज -3
- कौन वाचक संस्कृत सर्वनाम -1
- हाथी, 36 इंच के नाप की छड़ -2

वर्ग पहेली 249 का हल

1	अ	2	म	3	र	4	को	5	ष	6	त	7	का	8	जा
9	मृ	त		प		च	म	क	ना						
11	त		पा		व	र									
13		11	ता		प	का		ना							
15	क	ते	ल		त	रा	जू	र							
17	थु	ली		ता	प		म	द							
19	सा		प	व	न		र								
21	ग	ग	री			र	क	म							
23	र	त		नी	र		ज	त	न						

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीय पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

हम नन्हें बालक क्या जाने



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 999 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 15 तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शीलड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पंचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोया, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध हैं।



विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एंफ्रेलिक बॉक्स स्टैंड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर चण्डिगढ़ सिकंदर Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008